मई, जून १९६२

वर्ष १०) (अंक ५-६

इस अंक का मूल्य
२)

वार्षिक मूल्य
५)

मन्दसौर

वीर सं० २०८५ — राजेन्द्र सं० ५६

सम्पादक :—
सौभाग्यमल सेठिया
बी० ए० एल-एल० बी० वकील

संचालक :—
अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन
नवयुवक परिषद्
केन्द्रीय कार्यालय
मोहनखेड़ा तीर्थ

शाश्वत-धर्म

आकोली
श्री आदीश्वर जिनेन्द्र प्रतिष्ठोत्सव
विशेषांक

[परिषद् चतुर्थ अधिवेशन अंक भी इसी में सम्मिलित है]

अंक दर्शन

१. श्री आदीनाथः स्तुतिः — मुनि श्री जयन्त विजयजी महा०
२. तमसो मां ज्योतिर्गमय — श्री सौभाग्यमल सेठिया
३. मानव सभ्यता और मूर्ति पूजा — मुनि श्री कल्याण विजयजी महा०
४. श्री आदीश्वर जिनालय तथा आकोली — मुनि श्री देवेन्द्र विजयजी महा०
५. अरे ओ संसृति के इतिहास — श्रीलक्ष्मीचंद्र जैन सरोज
६. श्री जिन प्रतिमा और उसके वन्दन पूजन का विधान — श्री देवेन्द्र विजयजी महा०
७. जैन समाज के नाम कड़वी बात — श्री राजमल लोढ़ा
८. विजय का रहस्य — पं० विनयचंद्रजी महा०
९. चमत्कारी श्री आदीश्वर प्रभु — मुनि श्री जयप्रभविजयी महा०
१०. श्री पार्श्वनाथ जैन युवक मण्डल — विशेष प्रति० द्वारा
११. प्रेरणा केन्द्र — मुनि श्री जयंत विजयजी महा०
१२. प्रतिष्ठोत्सव — श्री पी० टी० पोरवाल
१३. आज का अकोली
१४. आकोली प्रतिष्ठोत्सव का आंखों देखा हाल श्री सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा
१५. प्रतिष्ठोत्सव के प्रमुख व्यवस्था केन्द्र
१६. प्रतिष्ठोत्सव में चढावे बोलने वाले महानुभावों की स्वर्ण नामावली
१७. प्रतिष्ठोत्सव में नोकारसी का लाभ लेने वालों की स्वर्णिमसूचि
१८. प्रतिष्ठोत्सव आमंत्रण पत्रिका
१९. जातीय गौरवगाथा पर दो शब्द — श्री लक्ष्मीचंद्र जैन सरोज
२०. अहिंसा मार्ग और जैन दर्शन — डा० प्रभाकर माचवे
२१. तीन बात — श्री महेन्द्र श्रीजी महा०
२२. बिन्दु बिन्दु विचार — चक्रवर्त्ती
२३. फले चुनड़ी—अकोली उत्सव मण्डल के चलचित्र
२४. प्रतिष्ठोत्सय की झलकियां
२५. परिषद् को पुष्ट बनाओ — मुनि श्री विद्याविजयजी महा०
२६. परिषद् का चतुर्थ अधिवेशन — श्री सुरेन्द्र कुमार लोढ़ा
२७. परिषद् के पारित प्रस्ताव
२८. अधिवेशन पर प्राप्त शुभ सन्देश
२९. समाज उत्थान के लिये परिषद् का आविर्भाव — श्री बालचंद जैन
३०. दुःख — श्री रूपचंद जैन
३१. परिषद् के चार उद्देश्य — श्री सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा
३२. कसौटी पर — अंगारा
३३. जैक कोण — मुनि श्री जयन्तविजयजी
३४. नमस्कार महामंत्र नो चमत्कार — श्री चंदुलाल एस. शाह
३५. अजब प्रेरणा मूर्ति — विद्यार्थी पोपटलाल धरु
[redacted]ोल तीर्थ की ऐतिहासिक माहिति

कुल पृष्ठ चित्र सहित १६४

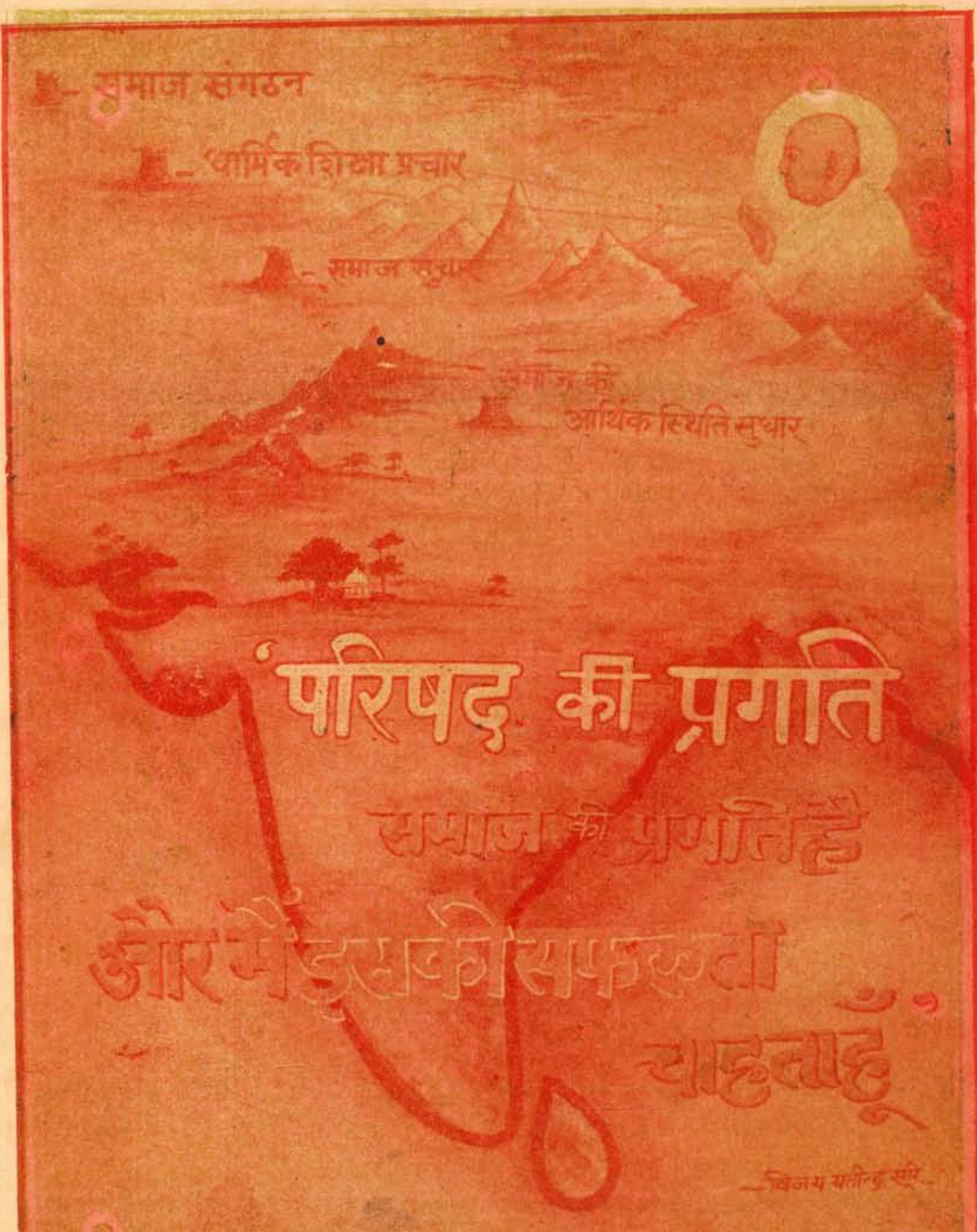

शाश्वत धर्म

वर्ष १०] मई जून १९६२ [अंक ५-६

आ. श्री. कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

शा
श्व
त
ध
र्म

आकोली का प्रतिष्ठोत्सव........

आकोली में नौ दिवसीय कार्यक्रमों के साथ श्री आदीनाथ जिन प्रतिष्ठोत्सव शानदार और सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें जिन शासन की प्रभावना का साकार रूप दृष्टिगोचर होरहा था। प्रति दिन विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये जो निर्विघ्नता पूर्वक पूर्ण हुए। इस अवसर पर आकोली के पंच महानुभावों, नागरिकों, युवकों, बालकों तथा महिलाओं का सहयोग अत्यधिक सराहनीय रहा। प्रस्तुत विशेषांक में हमने जहां आकोली, श्री आदीनाथ जिनालय उसके इतिहास आदि पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालने का प्रयास किया है वहीं प्रतिष्ठोत्सव के कार्यक्रमों और दिन रात परिश्रम करनेवाले श्रम शीलों के सचित्र परिचय प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इसी अवसर पर आकोली में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का चतुर्थ अधिवेशन सम्पन्न हुआ उसकी सचित्र कार्यवाही भी प्रस्तुत करने का भी हमारा प्रयत्न रहा है। आशा है पाठकों को यह कदम रुचिकर होगा। 'शाश्वत धर्म' आकोली की जनता, उसके कर्णधारों का हार्दिक अभिनन्दन करता है तथा इस अंक के लिये जानकारी आदि का सहयोग देने के लिये आभार प्रदर्शन करता है। साथ ही परिषद् अधिवेशन को इतनी शालीनता से सम्पन्न करवाने का हार्दिक स्वागत करता है।

........परिषद् का अधिवेशन

मनुष्य जीवन, शुभ्र सामग्री तथा धन वैभव ये तीनों बातें प्रत्येक प्राणी को पूर्व पुण्योदय से ही प्राप्त होती हैं। जो मनुष्य अपने जीवन को धर्म करणी से व्यतीत करता है उसका जीवन चिन्तामनी रत्न के समान सार्थक है और इसी के द्वारा स्वपर का आत्म कल्याण होसकता है।

—श्रीमद् राजेन्द्रसूरि

परिषद् के बढ़ते कदम...

अखिलभारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने नये उद्घोषों, नये आदर्शों, नये विचारों के साथ नये वर्ष में प्रवेश किया। गत वर्ष में........

हमें समाज का जो सहयोग मिला हम उस के प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शन करते हैं तथा आशा करते हैं कि भविष्य में ही ऐसा सहकार हमें प्राप्त होता रहेगा ताकि हम अपने उद्देश्यों के प्रति दृढ संकल्प रहने के प्रति सबल वाणी पासकें।

जिन कार्य कर्त्ताओं ने पूर्ण निष्ठा और पुरूषार्थ के साथ इसे प्रगति की मंजिल पर लेजाने का प्रयास किया हम उनसे भविष्य में ऐसे स्नेह की आशा कर आभार प्रदर्शन करते हैं।

गत वर्ष के परिषद् पदाधिकारीयों के प्रति भी हम अपने हृदयोद्गार प्रकट करना नहीं चुक सकते जिन के श्रम और सेवा ने बलवती बनाया।

आशा है भविष्य में भी परिषद् को ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा और वह प्रगति पथ पर सतत् अग्रसर रहेगी।

—अ०भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

आकोली मण्डन श्री आदीश्वर भगवान्

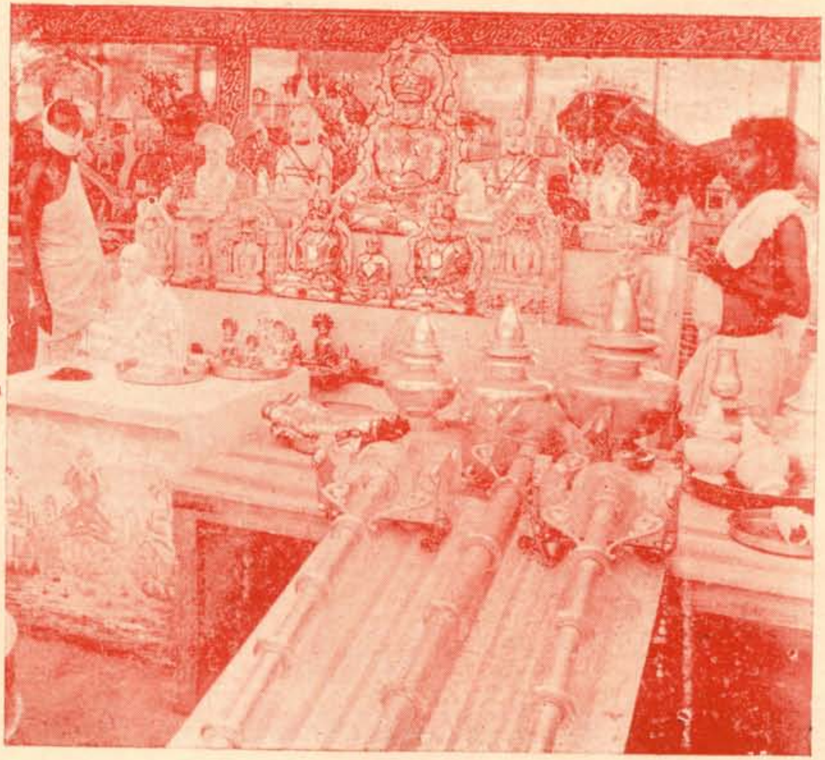

क्रिया मण्डप में विराजमान मूलनायक जी श्री आदीश्वर भगवान तथा अन्य जिनेश्वर भगवन्तों की प्रतिमाएं। श्री गौतमस्वामीजी तथा श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमाएं भी दृष्टिगोचर होरही हैं। नीचे कलश, ध्वजदण्ड आदि भी रखे हुए हैं.

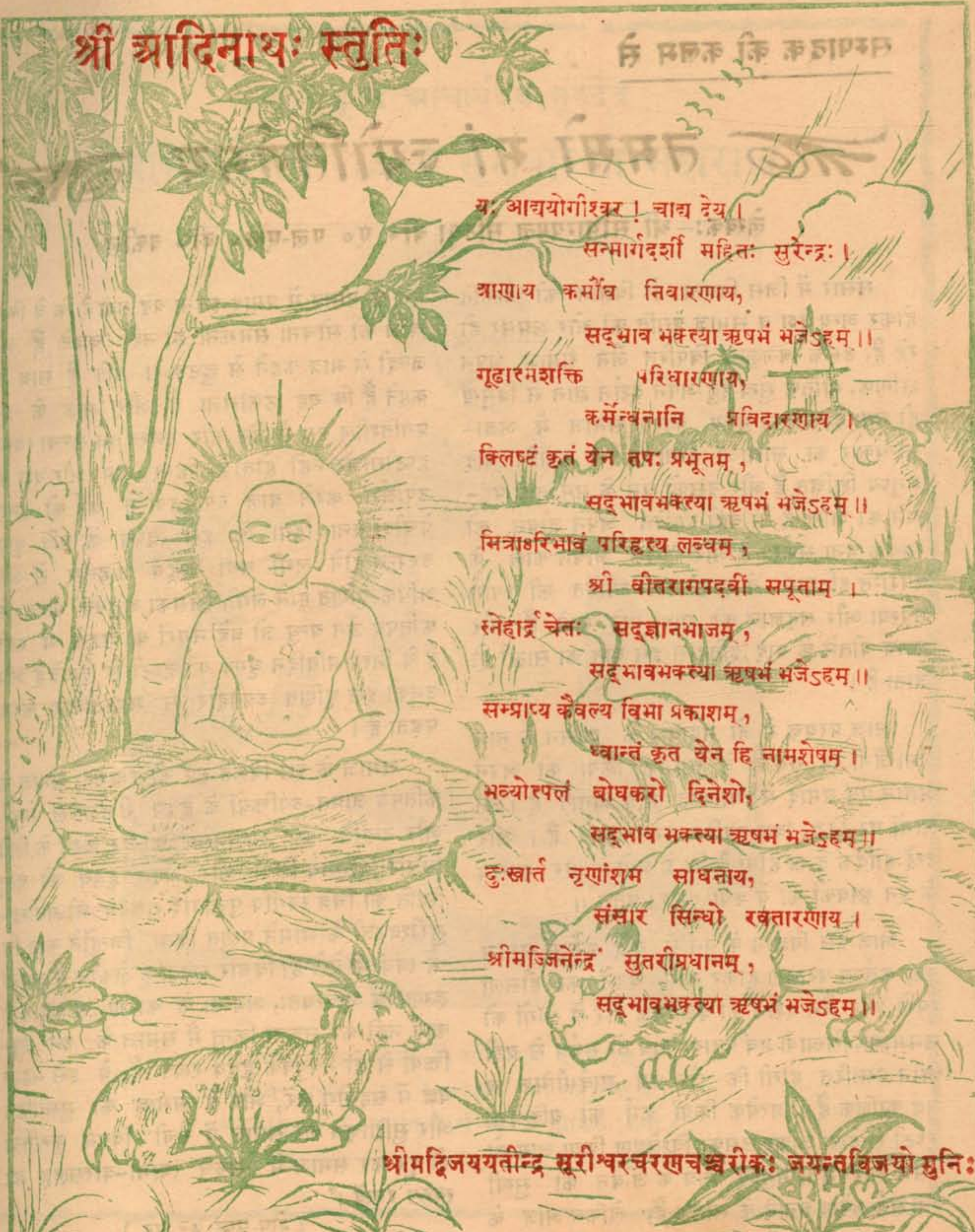

श्री आदिनाथः स्तुतिः

य: आद्ययोगीश्वर ! चाद्य देय ।
सन्मार्गदर्शी महितः सुरेन्द्रः ।
श्राणाय कर्मौव निवारणाय,
सद्भाव भक्त्या ऋषभं भजेऽहम ॥
गूढात्मशक्ति परिधारणाय,
कर्मेन्धनानि प्रविदारणाय ।
क्लिष्टं कृतं येन तपः प्रभूतम ,
सद्भावभक्त्या ऋषभं भजेऽहम ॥
मित्राऽरिभावं परिहृत्य लब्धम ,
श्री वीतरागपदवीं सपूताम ।
स्नेहार्द्र चेतः सद्ज्ञानभाजम ,
सद्भावभक्त्या ऋषभं भजेऽहम ॥
सम्प्राप्य कैवल्य विभा प्रकाशम ,
ध्वान्तं कृत येन हि नामशेषम ।
भव्योत्पलं बोधकरो दिनेशो,
सद्भाव भक्त्या ऋषभं भजेऽहम ॥
दुःखार्त नृणांशम साधनाय,
संसार सिन्धो रवतारणाय ।
श्रीमज्जिनेन्द्रं सुतरीप्रधानम् ,
सद्भावभक्त्या ऋषभं भजेऽहम ॥

श्रीमद्विजययतीन्द्र सूरीश्वरचरणचञ्चरीकः जयन्तविजयो मुनिः

सम्पादक की कलम से

तमसो मां ज्योतिर्गमय

लेखकः— श्री सौभाग्यमल सेठिया बी० ए० एल-एल० बी० वकील

संसार में जिस तिव्रता से विज्ञान की उन्नति होकर अन्य देश व समाज प्रगति की ओर अग्रसर हो रहे हैं, उसके बिलकुल विपरित जैन समाज अपने क्षणिक, भौतिक सुख हेतु अपने दर्शन ज्ञान से विमुख हो गया है, उसका मुख्य कारण समाज में अज्ञानान्धकार का साम्राज्य होना ही है। क्योंकि यदि मनुष्य शिक्षित है और उसको धर्म के मर्म तक पहुंचने की शक्ति है तो वही व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है और उसके जीवन काल के उपरान्त इतिहास के पृष्ठ उस व्यक्ति की त्याग तपस्या और सद्ज्ञान की गाथा गाते रहते हैं और समय बीतने के बाद इतिहास इस बात का साक्षी हो जाता है।

आज प्रत्यक्ष में जो महावीर के शासन के नाम लेना जैनी रह गये हैं वे धार्मिक क्रिया को अपने अज्ञान एवं प्रमाद से पाखण्ड मात्र बताते है। उन लागों पर विद्ध, विज्ञ व्यकित तरस खाते है। और उन्हें हार्दिक दुःख होता है कि हे प्रभो! तेरे शासन के इन श्रावकों की ये क्या दशा। पतन।।

आज इस विज्ञान के युग में यदि हमारा समाज कुछ कर्तव्य परायण होकर आगे बढ़ने का हौसला रक्खे और जैन दर्शन को वेज्ञानिक तौर से लोगों को समझाया, सिखाया एवं पढ़ाया जाय तो सर्वत्र से यही ध्वनि प्रसारित होगी कि जैन धर्म सार्वभौमिक व सर्व कालिक हैं। प्रत्येक क्रिया कर्म को यदि पैनी दृष्टी से देखा जाकर उसका विश्लेषण किया जाय तो उसमें सार-भूत, मनुष्य मात्र के जीवन को सुखी एवं सर्व रुपेण बनाने के साधन हैं, लेकिन आज के युग के मानव में प्रमाद इतना बढ़ गया है कि वे किसी चीज को सोचना समझना ही नहीं चाहते हैं और जल्दी से मात्र कहने से छुटकारा पाते हैं साथ ही कहते हैं कि यह ढकोसला है और आज के इस प्रगतिशील युग में जैन और जनत्व का सच्चा स्वरूप दृष्टीगोचर नहीं होता है, किन्तु नाम और यश का उपार्जन करने वाले व्यक्तियों ने धर्म को इतना पेचीदा बना दिया कि इस विषय के प्रति घृणा उत्पन्न होने लगी तथा बाह्य आडम्बर से और अधिक घृणित होने लगी, जिसका अनुभव भारत के कतिपय जैन बन्धु जो बड़े नगरों व शहरों में रहते हैं वे नित्य प्रतिदिन घृणा की दृष्टी से देखते हैं और उनको इस घृणित व्यवहार से साक्षताकार करना पड़ता है।

समाज के इस विकृत रुप को देखकर समाज के कतिपय जाग्रत-व्यक्तियों के हृदय में हलचल मची, और उन्होंने इस अव्यवस्था को दूर करने के लिये विचार विनिमय किया और अपने हृदय की वस्तु स्थिति का चित्र स्वर्गीय पुज्यपाद गुरूदेव श्री यतीन्द्र-सुरीश्वरजी के सामने प्रस्तुत किया, जिन्होंने कहा कि "मैं स्वयं भी ऐसे ही विचार रखता हूं लेकीन मैं अपनी रूग्ण एव अस्वस्थता, अवस्था के कारण सक्रिय कोई कार्य नहीं कर सकता किन्तु मैं समाज के उन व्यक्तियों से जो नवयुवक हृदय रखते हैं, वे इस महान यज्ञ में सहयोग करें, और वे समाज को सुसंगठित और सुशिक्षित कर समाज में फैली विषम कुरुतियों को दूर कर समाज में सच्चे स्वामी-वात्सलय का स्वरुप रक्खें।"

(शेष पृष्ठ ७२ पर)

परम पूज्य आचार्यदेव गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज

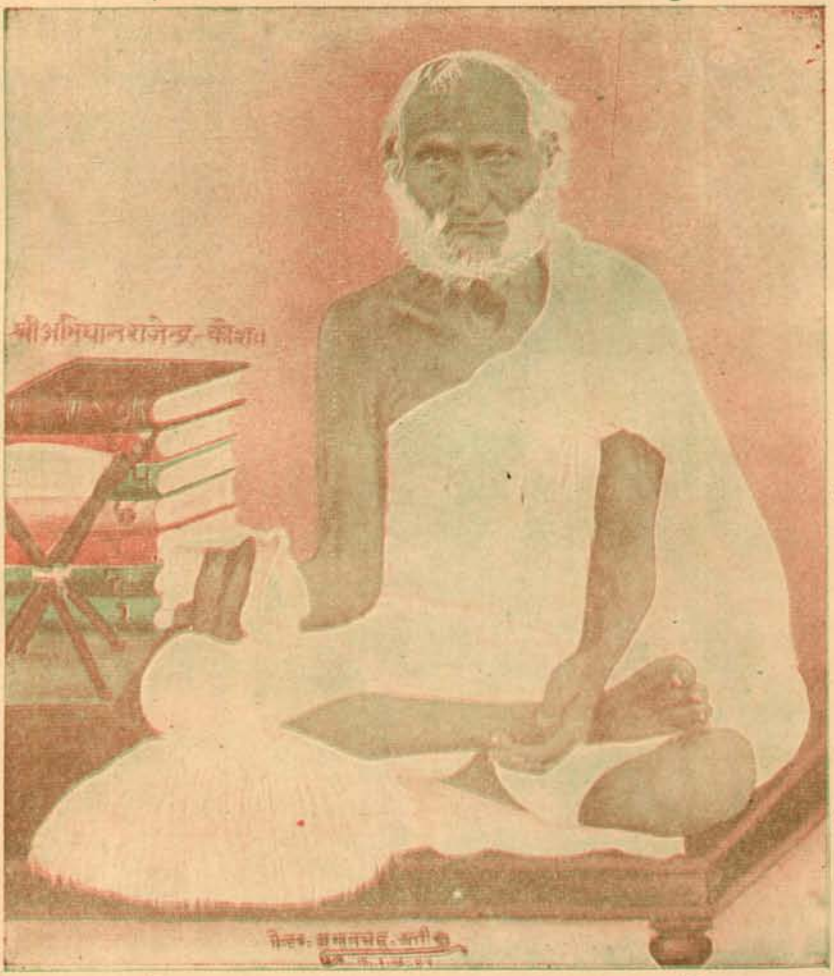

जो अटल थे इस विश्व में, और परम योगीराज थे।
चारित्र पालक पूर्ण वे अकलंक श्री महाराज थे॥
सद्ज्ञान की शुभ्रज्योति से संसार आलोकित किया।
वन्दन गुरु राजेन्द्र को जिनका शरण हमने लिया॥

मानव सभ्यता और मूर्ति पूजा

(ले०—स्व० साहित्य वि० विद्याभूषण श्रीमद्विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरान्तेवासी—
मुनि श्री कल्याण विजयजी महाराज)

मानव सभ्यता के साथ ही साथ जीवन विकास की पद्धति प्रारम्भ होती है। तत्स्वरूप अनेक प्रकार के धर्म और उनकी संस्कृति का उद्गम समय-समय पर विकसित होकर अनेक धाराओं में प्रवाहित होती रही है। मानव-जीवन के सम्बन्ध में समीपवर्ती वातावरण और उसके उच्चतम स्तर को बढ़ाने वाले शुद्ध निमित्त एवं शुभावलम्बन की भी उतनी ही आवश्यकता आदिमकाल से प्रतीत होती आ रही है। जो कि जीवन में अनिवार्य बनती आ रही है। प्रस्तुत विचार में मूर्तिपूजा और तद्विषयक मान्यता का इतिहास अतीव प्राचीन है। वर्तमान कालीन इतिहास में वेद एवं उपनिषदों को प्राचीनतम माने गये हैं। उपरोक्त साहित्य के परिशीलन एवं मनन, अध्ययन के पश्चात् इस निष्कर्ष पर आना पड़ता है कि भारतीय संस्कृतियों में मानव के साथ मूर्तिपूजा का कितना गहरा सम्बन्ध है? मानव जीवन के विकास में अवलम्बन और उनके निमित्तों का बड़ा भारी महत्व रहा है। साकार से निराकार स्वरूप की प्राप्ति में आकार का वही स्थान है जो वर्णमाला के अक्षर क्रमशः वाक्यबोध में सक्षम माने जाते हैं। ठीक उसी तरह मूर्तिविषयक मान्यता भी उस स्वरूप के प्रति कारणभूत होती है। प्राचीनतम वेदकालीन साहित्य से आज तक के उपलब्ध साहित्य में मूर्तिपूजा की विविधता दिखाई देती है। (म. नि ३ अ.) महान् पुरुषों की जीवनी और उनकी आदर्शता उनकी आकृति से ही विदित हो जाती है। 'आकृतिः गुणा कथयन्ति' इस कहावत के अनुसार व्यक्ति के जीवन का असर सामने वाले व्यक्ति पर पड़ता है। उसमें से प्रस्तुत प्रसंग पर विचार किया जा रहा है। वह अवलम्बन जीवन की आदर्शता का सूचक है। अरिहंताणं भगवंताणं गंधमल्ल-पईव संमज्जणोरलेवण वित्थिण्णवलि वत्थ-धूवाइएहिं पूआ सक्कारेहिं पइदिण मब्भच्चणं पकुव्वाणा तित्थुप्पणं करायोति। प्रत्येक वस्तु के स्वरूप का निर्देश इन चार निक्षेपों के द्वारा किया जाता है।

नामस्थापना द्रव्यभावतस्तन्न्यासः

नामनिक्षेप में सिर्फ नाम मात्र का व्यवहार होता है किसी का नाम उस प्रकार की योग्यता के अभाव में भी रख दिया जाता है। वह संज्ञावाची नाम संज्ञा मात्र का बोधक है। स्थापना के अन्दर यह विशेषता है कि उस नाम के अनुसार तद्गुण का आरोप कर उनके समान ही उसका आदर सत्कार किया जाता है। जैन शासन में स्थापना निक्षेप में ही मूर्ति और उसकी स्थापना कर उस आकृति को तद्रूप मानी जाती है। मानव जीवन में उच्चतम भूमिका पर आरोहण करने के

लिये उन वीतराग मूर्तिमुद्रा का आलम्बन अत्यावश्यक है । मूर्ति, चित्र वह किसी भी वस्तु का हो वास्तविक वस्तु बोध में सादृश्य बोध की प्रतीति से वस्तु का बोधक होता है । जैनागम और पंचांगी में कई जगह पर मूर्ति विषयक मान्यता के प्रमाण यत्र तत्र उपलब्ध हैं । जंघाचारण, विद्याचारण के गमनोत्पात के विषय में कहा गया है कि— अमुक-अमुक स्थानों पर स्थित शाश्वत् तीर्थ चैत्यों को वन्दन कर कुछ समय में अन्य द्वीप स्थित तीर्थों का वन्दन करते हैं। इस प्रकार के स्पष्ट उल्लेखों से भगवती जैसे पंचमाड़ा के प्रमाण से मूर्ति और शाश्वत् चैत्यों की मान्यता विश्व के साथ चली आ रही है। श्री राइपसेणीय सूत्र का सारा विषय प्रायः करके देवलोक के विमान और उनके अन्तर्गत चैत्यों के विवरण से भरा पूरा दिखाई देता है ।

श्रीमद्-हेगचंद्राचार्य ने अपने अभिधान चिंतामणि कोष में 'चैत्यो वृक्षः जिनौकस्त-द्विबबम्' सूत्रानुसार चैत्य शब्द के अर्थ में वृक्ष विशेष को भी चैत्य के नाम से बतलाया है— जहाँ पर तीर्थंकर भगवन्तो के समवसरण की रचना की गई है उन वृक्ष विशेष को चैत्य के नाम से बतलाया गया है । 'जिनौकः जिनालय—जिसमें जिनेश्वर भगवान् की प्रतिमाएँ स्थापित-विराजित हो वह भी जिन चैत्य के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध है । उन जिनेश्वर भगवान् की प्रतिमाओं को भी चैत्य के नाम से व्यवहृत की गई है। उपरोक्त सूर्याभ देव के वर्णन में जिस सौधर्म देवलोक का वर्णन है तदन्तर्गत सूर्याभविमान और उसके अधिपति के कर्तव्यों से यह विषय स्पष्टतया ज्ञात होता है । *श्री ज्ञातासूत्र में द्रौपदी का जो विषय बतलाया गया है इस अधिकार में जिन पूजा वन्दन का जो उल्लेख है यह मूर्ति विषयक मान्यता का सभी से ज्वलन्त उदाहरण है। इसी तरह जीवाभिगम सूत्र के विजयदेव वंदित पाठों से भी मूर्ति और उसकी पूजाविषयक मान्यता अतीव प्राचीनतम सिद्ध होती है । सूत्र-कृतांग की नियुक्ति में आर्द्रकुमार को प्रेषित अभयकुमार के द्वारा जिन प्रतिमा के दर्शन मात्र से जातिस्मरण ज्ञान और अपने पूर्वभवों को जानने का उल्लेख स्पष्ट है ।

श्री दशवैकालिक सूत्र अध्ययन ८ ।

चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वासुअलंकिअं ।
भक्खरं पिव दृटठूणं, दिट्ठिं पडि समाहरे ॥५५

इस गाथा में तो यहाँ तक बतलाया गया है कि साधु को अलंकारों से विभूषित स्त्री का चित्र भी भींत, दिवाल आदि पर चित्रित हो तो उस स्थान पर रहना निषेध है । इससे यही अर्थ फलित होता है कि एक चित्र भी किस तरह से व्यक्ति के जीवन में कारण बनता है। कामिनी का चित्र जिस तरह विकारोत्पादक माना गया है। उसी तरह वीतराग की प्रतिमा भी मानव हृदय में परम शान्त अविकार भाव को उत्पन्न कर सकती है। विचारशील व्यक्ति उपरोक्त विचार से यह भली भाँति जान सकता है कि एक स्त्री का चित्रित चित्र भी जब विकार और मोहोत्पादक माना गया है । और उसकी दृष्टि पड़ते ही सूर्य के तेज को न सह सकने के कारण अपनी दृष्टि को बलात् खींचनी पड़ती है। उसी तरह चित्र से अपनी दृष्टि को हटावें । इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अवलम्बन मूर्ति या चित्र का हमारे जीवन पर उसका असर भला या बुरा पड़ता है । इस तरह के शास्त्रीय और लौकिक व्यवहार में

* "विणओणयाए गायलट्ठीए, चक्खुफसे अंजलिप्प-ग्गहरोणं ।"

भी अनेक प्रकार के उदाहरण हमारे सामने हैं। जैनागम में मान्य वस्तु का स्वरूप उपरोक्त चार प्रकार के निक्षेपों द्वारा जाना जाता है। और तभी जीवादि पदार्थों का स्वरूप ठीक तौर से बन सकता है।

महान् पुरुषों के अभाव में उनकी आकृति, मुद्रा और उनके स्वरूप का वह आकार ही हमारे लिये पथदर्शक है। जिसके द्वारा हम अपनी आत्मीय आराधना में अग्रसर होते जाते हैं। *मूर्ति और उसकी पूजा, उपासना विषयक मान्यता जीवन के साथ अतीव घनिष्ठ संबन्ध रखती है। अतएव सभी धर्मों में विविध प्रकार से मूर्ति पूजा का स्वरूप विद्यमान है। उस मूर्ति में उस महान पुरुष के गुणों का प्राणारोपण के लिये विधि विधान पूर्वक शास्त्रीय मंत्रोच्चारण के साथ संस्कार किये जाते हैं। तत्पश्चात् ही वह मूर्ति पूजनीय एवं उपासनीय मानी जाती है। इस तरह से भूत काल में अनेक प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा के कार्य समारोह पूर्वक हुए हैं और वर्तमानकाल में भी उसी प्रकार से प्राणारोपण-अंजन शलाका करके मूर्तियां स्थापित की जाती हैं। भविष्य में भी आवश्यकतानुसार समय समय पर इन कार्यों की आवश्यकता रहेगी। अतएव मूर्ति पूजा का एक अमिट अचूक कारण यही है उसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में नूतन प्रेरणा पाकर एक नई आध्यात्मिक ज्योति को प्रकट कर सकता है पूर्वकालीन इतिहास के जानने में भी मूर्ति, मंदिर और उनके विविध शिलालेखों पर से तत्कालीन राज्य और राजाओं के नाम आदि से उनकी विद्यमानता के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। जैनों की प्राचीनता के द्योतक अनेक साधनों में मूर्ति और मंदिर निर्माण कर्त्ता, एवं जीर्णोद्धार आदि तद्विषयक लेखों पर से इतिहास की बड़ी भारी सामग्री प्राप्त की गई है। प्राचीन जैन जैनेतर साहित्य से मूर्तिपूजा की मान्यता भगवान् महावीर से भी प्राचीन मानी गई है। कलिंगाधिपति महाराज खारवेल और उनके लेखों से पुरातत्वविदों ने अपने इतिहास को अलंकृत किया है।

सम्राट् संप्रति-प्रियदर्शी के समय की मूर्तियां आज भी भारत और उसके बाहर भी काफी तादाद में उपलब्ध होती हैं। राजगृही और मोहनजोदड़ा जैसे स्थानों की खुदाई में से भी मूर्तियां और उनके खंडित अवशेष प्राप्त हुए हैं। मौर्यकालीन मूर्तियां भी प्राचीन मंदिरों में यत्र तत्र विद्यमान हैं। महाराजा परमार्हत कुमारपाल के द्वारा निर्मित जिनमूर्तियां विविध रूपों में आज भी काफी मात्रा में दृष्टिगोचर होती हैं। इन सभी प्रमाणों से मूर्ति विषयक मान्यता एवं पूजा, उपासना मानव सभ्यता के विकास का आदिकालीन संबध प्रतीत होता है। प्रत्येक धर्मावलम्बी के तीर्थ और उनकी यात्रा पूजा का विशेष महत्व मानव जीवन से ओत प्रोत है।

*सोउ गंधार सावग्रो थयथुईहि थुणं तो तत्थ गिरि-गुहाए अहोरत्तं निवसिओ। —श्री निशीय सूत्र

एक परिचय : तब और अब

श्री आदीश्वर जिनालय तथा आकोली

(लेखक—गीतार्थ गुरूदेव भगवन्त श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश शिष्य
मुनि श्री देवेन्द्र विजयजी 'साहित्य प्रेमी')

राजस्थान के अंतर्गत जिले के सदर स्थान जालोर से पश्चिम और दक्षिण दिशा के मध्य १५ माईल दूर, तथा रेल्वे के मारवाड़ बागरा स्टेशन से दक्षिण में ५ माईल दूर बाण्डी नदी के वाम तट पर आकोली नामक ग्राम आबाद है। यहां की कुल जन संख्या पन्द्रह सौ की है। यहाँ सौ घर लघुशाखीय (दशा) ओसवालों के हैं। सोलहवीं शताब्दि में नाणेचा गोत्रीय जैन यहाँ आकर बसे हैं, और अन्य सब बाद में। अन्य जातियों में से सर्वाधिक घर राजपूतों के तथा सुथारों के हैं। यहाँ के लगभग सब ही जैनी दक्षिण भारत, महाराष्ट्र, बम्बई और अहमदाबाद में व्यवसाय करते हैं। धर्म के प्रभाव से प्राय: सब ही श्री सम्पन्न और परिवार से परिवरित हैं। अन्य जातियों के लोग कृषि एवं मजदूरी से अपनी आजीविका-चलाते हैं। यह ग्राम तीन ओर से नदी और नालों से परिवेष्टित होने से, वर्षाकाल में इस ग्राम का दृश्य एक छोटे से द्वीप जैसा हो जाता है। यहां राजस्थान शासन की ओर से जनता के स्वास्थ्य के हितार्थ आयुर्वेदिक औषधालय तथा बालकों के शिक्षणार्थ माध्यमिकशाला भी है। आकोली आने के लिए रेल्वे के मारवाड़ बागरा स्टेशन से यात्री बसें और बैलगाड़ियां मिलती हैं। सीरोही से भी मोटरों द्वारा यहां आया जाता है।

यहां पर श्री आदिनाथ प्रभु की नयनाभिराम एवं भव्य प्रतिमा है। जो जैन सम्राट संप्रति के युग की है ऐसा प्रतिमा के शिल्प से ज्ञात होता है। भावुक भक्तों के हृद्कमल को विकसित करने वाली, यह प्रतिमा आकोली से पूर्व दिशा की ओर स्थित "छिपावा" नाम के अरहट के खेत से विक्रम संवत् १८६१ की अक्षय तृतीया के दिन प्रात: काल के समय खेत का मालिक कृषक जब गेंती से जमीन को समतल कर रहा था कि उसकी गेंती का तीक्ष्ण मुंह धरती में किसी मजबूत वस्तु में फंस गया। बहुत प्रयास किया, उसने। पर गेंती नहीं निकल सकी उसकी। घबरा गया वह, पसीने से तर हो गया वह। भागा पास पड़ोस के खेतों से लोगों को लाया और सबने एक साथ बल पूर्वक गेंती खींची। तो प्रगट हुई श्री ऋषभदेव प्रभु की यह प्रतिमा। प्रभु की प्रतिमा को देख कर आनन्दित हो गए, वे सब करसे। एक वृद्ध ने कहा "ये तो जैनों के देव हैं।" खेत का मालिक भागा भागा गया ग्राम में और जैनों को सूचना दी। समाचार वायुवेग से सारी आकोली में फैल गए। श्रावकों के मन नाच उठे आनन्द से। जो जैसे और जहाँ खड़ा था, वह वहाँ से पहुँच गया छिपावे अरहट के खेत में। थोड़े समय में छिपावा अरहट जनता से

भर गया। ऊंट सवारों ने समीपस्थ नगर बागरा और सियाणा तथा सांथु डुडसी में जाकर प्रभु प्रतिमा के प्राकट्य के समाचार दिए। जिसको जो सवारी मिली उसी पर बैठा वह और आया छिपावे अरहट पर। मध्याह्न होते होते तो अरहट जन सागर से भर गया। अक्षय तृतीया का दिन था वह। सब ही भावुक भक्तों ने श्री सिद्धाचलजी की यात्रा का आनन्द मनाया। इतने में जालोर श्री संघ आया। भक्त भक्त मिले और भक्ति का सरस आयोजन हुआ वहाँ। संगीतमय भक्ति ने भक्त जनों के मन मानस को आनन्दित कर दिया। पश्चात् सबने आकोली श्री संघ के आतिथ्य का स्वीकार किया। दो प्रहर को सब ग्राम नगरों से आए जैनों की पंचायत बैठी विशाल जाजम पर। सब ही चाहते थे भगवान को अपने अपने नगर में ले जाना। पर जालोर के श्रावकों ने अपने नगर में भगवान को ले जाने की घोषणा की। आनन्द से मस्त थे वे। उदासी के सागर में मग्न थे आकोली के श्रावक। वे चाहते थे भगवान को अपने नगर में रखना। पर कौन सुने उनकी नक्कारों की आवाज में तुती की आवाज सुनता भी है कौन ? हृदय क्रन्दन कर रहा था उनका। वह जमाना था राजाशाही का। आकोली के श्रावक मनमसोस कर रह गए। जालोर के श्रावकों ने पूजा का वेश परिधान किया और लगे भगवान को उठाने। पर आश्चर्य प्रभुप्रतिमा अचल थी। दो ने प्रयास किया चार ने प्रयास किया और दस ने भी प्रयास किया, पर प्रतिमा इंच भर भी ऊंची नहीं हो रही थी। आश्चर्य सागर में मग्न थे सब। बहुत परिश्रम किया जालोर वालों ने पर निराशा ही मिली उनको फिर पास पडोस के श्रावकों ने प्रयास किया भगवान नहीं उठे। सबके बाद नम्बर आया आकोली के श्रावकों का। आए शुद्ध होकर वे। भगवान के समक्ष करबद्ध होकर प्रार्थना की उन्होंने। प्रभो ! पधारो हमारे ग्राम में। और प्रयास किया उठाने का उन्होंने। अचल हुई प्रभु प्रतिमा चलित हो गई। वजन में फूल सी थी वह। हर्ष छा गया। जयजयकार के घोषों से गूंज उठा गगन। ढोल और नक्कारों की ध्वनि होने लगी। प्रभु प्रतिमा को लेकर भक्त पहुँचे ग्राम में। चहूँटों के पंचायती मकान में विराजमान किया भगवान को।

दूसरे दिन प्रातः फिर श्री वासुपूज्य प्रभु और श्री सुपार्श्व नाथ प्रभु की सपरिकर नयनाभिराम प्रतिमाएँ प्रगट हुई। उसी छिपावे अरहट से। अधिकस्य अधिकं फलं। पक्ष गए, मास गए, उन्नीसवीं शती के चौथे दशक में श्री श्री परमप्रभावक युग पुरुष समर्थ जैनाचार्यवर्य श्री श्री १००८ श्री मद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज का पदार्पण विहारानुक्रम से आकोली में हुआ। गुरूदेव के उपदेश से प्रभावित हुआ श्री संघ। चैत्यालय बनाने का निश्चय हुआ, सर्वानुमत से। चन्दा हुआ। कार्य प्रारम्भ हुआ। पर श्रेयांसी बहु विघ्नानि के अनुसार अवरोधों के कांटे मार्ग में खड़े थे। सं० १९८३ आ गया। विहारानुक्रम से गुरुदेव श्री श्री महामहोपाध्याय श्री मद्यतीन्द्र विजयजी (बाद में सूरिजी) म० का पदार्पण आकोली में हुआ। नित्यप्रति की उपदेशामृत की वर्षा ने चैत्य निर्माण के अबरोधों को दूर किया। चैत्य का निर्माण कार्य वेग से चला और कार्य समाप्ति पर आया। श्री संघ ने उपाध्याय जी के हाथों प्रतिष्ठा विधान सम्पन्न करवाने का तै किया। प्रार्थना प्रस्तुत की एतदर्थ श्री संघ ने उपाध्यायजी की सेवा में।

उपाध्याय जी ने फरमाया प्रतिष्ठा विधि गणा धीश श्रीमद् भूपेन्द्र सूरीश्वरजी म० के सानिध्य में होगी। उपाध्यायजी की इस घोषणा से श्री संघ आश्चर्यान्वित्त था, इसलिए कि उपाध्याय श्री को कीर्ति की कामना अपने चंगुल में नहीं फंसा सकी थी। उपाध्यायजी ने श्री संघ से प्रार्थना करवा कर बुलाया आचार्य श्री को। वे श्री पधारे। महामहोत्सव सह नवनिर्मित जिनालय में प्रभु प्रतिमा को विराजमान किया गया। १९८४ के वै० सु० ५ को प्रातः।

किसी का भी समय एकसा नहीं होता। जो आज उत्थान के शिखर पर आरूढ़ है, हो सकता है वह कल अवनति के गर्त में भी जा सकता है। मारवाड़ के नदी तटों पर बसे ग्राम नगरों के लिए सं० १९१८ का वर्षाकाल भयानक संहार का समय साबित हुआ। नदियां अपार जल राशी से उफन रही थी। तटबन्धों को तोड़कर जल ग्राम नगरों में घुस गया था। हजारों जनता बे घर बार हो गई थी। हजारों जानवर बाढ़ में बह गए थे। सैंकड़ों जन मृत्यु के मुख में चले गए थे। विशाल काय महालयों की नीवें भी हिल गई थी तब। कितने ही आवास धराशायी हो गये थे तब। कितने ही एक रात में जीर्णावस्था में पहुँच गए थे। इस भयानक संकट से आकोली ग्राम भी नहीं बच पाया था। तीनों ओर की जलीय थपेड़ों ने इसे भी जर्जरित किया। मन्दिर वैसे तो ग्राम के मध्य होने से बच गया था पर जमीन में के जलीय भेजने इसे कमजोर कर दिया था। २००२ के शीतकाल में व्याख्यान वाचस्पति गीतार्थं गुरूदेव श्री मद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म० के सदुपदेश से श्री हंसराज अभयचंदजी के परिवार ने उपधान महातप का भव्य आयोजन विशाल पैमाने पर किया। तब मन्दिर की मरम्मत की गई। ५ वर्षों के बाद जिनालय की स्थिति पुनः पूर्ववत् थी। वि० सं० २००७ के ज्येष्ठ सुदी में स्व० श्री गुरूदेव का पुनः पधारना आकोली में हुआ। उन श्री ने व्याख्यान में एक दिन मंदिर की स्थिनि को लक्ष्य करके फरमायाः—

"जिनेन्द्र भगवान (जिन प्रतिमा) के दर्शन, पूजन से प्राणीमात्र के हृदय में साक्षात् जिन देव के दर्शन की अनुभूति होती है। भावों (विचारों) में निर्मलता एवं व्यवहार में, विशुद्धिकरण होता है। इस बात का समर्थन करते हुए, शास्त्रकारों ने उत्ताल स्वर से उद्घोष किया है कि "जिणपडिमा जिणसारिखी" श्री जिनेश्वर की प्रतिमा प्रत्यक्ष जिनेश्वर के समान है। इसीलिए जिनालय की समस्त आशातनाओं को टाल करके दर्शन पूजन करने से निःसंदेह आत्मप्रगति होती है। सात क्षेत्रों में जिन मन्दिर और जिन प्रतिमा भी है। उस की रक्षा, सुव्यवस्था एवं उन्नति के लिए श्री संघ को प्रतिक्षण जागृत रहना चाहिए। जिनालय के जिर्णोद्धार से श्रावक को आठ जिन मन्दिर के निर्माण जितना लाभ प्राप्त होता है। अतएव आप सब को यह लाभ लेना ही चाहिए। गुरुदेव श्री के उपदेश का प्रभाव शीघ्र हुआ। श्री संघ ने उसी दिन से जिनालय के उद्धार का कार्य प्रारम्भ किया। मकराने के दक्ष कारीगरों के हाथों उस्मान मुस्तफा ने निर्माण कार्य वेग से चालू किया। दस के फाल्गुन सुदि में सियाणा से गुरुदेव श्री पुनः आकोली पधारे। मन्दिर का निरीक्षण किया। उस समय गर्भगृह बन गया था। पद्मासन भी बन गया था गुरुदेव श्री ने प्रभु श्री ऋषभदेव की प्रतिमा की बैठक नपवा कर, पद्मासन पर उस जगह हाथ रख कर कि जिस जगह

भगवान को बिठाया था। फरमाया था कि "यहां पर दो इञ्च की गादी लगाकर भगवान को बिराजमान करने से दृष्टि यथास्थान हो जायगी।"

उसी दिन से श्री संघ ने जिनालय का कार्यत्वरा से चलवाया, इस आशा से कि श्रेष्ठ मुहूर्त में गुरुदेव श्री के हाथों प्रतिष्ठा विधान सम्पन्न करवाया जाय। पर मानव के मन का धारा कभी पूरा हो जाय तो वह मानव महामानव (वीतराग) हो जाता है। योग नहीं आया था प्रतिष्ठा का। गुरुदेव श्री समुनिमंडल मालवे में पधारे और वहाँ शासन प्रभावना के अनेक कार्य आपके हाथों सम्पन्न हुए। सं० २०१५ से गुरुदेव श्री का शरीर रोगों के अनेक आक्रमणों से थक गया। आप शरीर की ऐसी परिस्थिति को जानकर परम पावन तीर्थराज श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में विराजमान हुए अन्तिम आराधना को सानन्द सम्पम्न करने के लिए। वहाँ भी दो वर्षों में गुरुदेव श्री के सानिध्य में अनेक कार्य सम्पन्न हुए। सं० २०१७ के पोष सु० ३ ता० २१-१२-६० बुधवार को प्रातः ४-१० पर गुरुदेव श्री स्वर्गवासी हो गए। श्री संघ के साथ आकोली संघ भी निराश हुआ। समय बीता सं० २०१८ के पौष में मुनिमंडल पुनः श्री मोहनखेड़ा में एकत्रित हुआ। माघ तक मुनिमण्डल वहीं था कि श्री संघ आकोली ने अपने दो प्रतिनिधी श्री धर्मचन्दजी चन्दाजी और श्री किशनलालजी चन्दाजी को मुनिमण्डल को आकोली पधारने के लिए प्रार्थना करने को भेजे। श्रीसंघ के प्रतिनिधियों की प्रार्थना पर विचार किया मुनिमण्डल ने। २०१९ के वै० सु० ६ ९-५-६२ का मुहूर्त निश्चित किया गया। संघ प्रमुख कविवर मुनिराज श्री विद्याविजय जी म० आदि १३ मुनिवरों ने मा० सु० १३ को प्रातःकाल विहार किया, मारवाड़ की ओर बीच में जावरा एवं खाचरौद में शान्ति-स्नात्र विधान एवं प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न हुई। मन्दसौर, नीमच होते हुए मुनिमण्डल चैत्र वदि ५ की प्रातः निम्बाहेड़ा पहुंचा। निम्बाहेड़ा से उग्र विहार प्रारम्भ हुआ। कभी १५ मील तो कभी २० मील कभी २५ मील तो कभी तीस मील तक के उग्र विहार होते रहे। गरमी अपना कार्य कर रही थी, तो मुनिमण्डल अपने कार्य में लग्न था। ऊष्णपरिषद् की परवाह वहां किसे थी? मार्ग की अनेकविध कठिनाइयों से अचल मुनिवृन्द चैत्र शुक्ला द्वितीया की प्रातः दस बजे १५ मील के पर्वतीय मार्ग का विहार करके राता महावीर के दर्शन करके मारवाड़ में प्रविष्ट हुआ। वहाँ आकोली से आए श्री संघ के प्रतिनिधि ने चैत्र शुक्ला ५ को किसी भी हालत में आकोली पधारने की प्रार्थना की विजापुर से आकोली ६० मील दूर है। मुनिमण्डल ने स्वीकृति प्रदान की। तृतीया के दिन बिजापुर से विसलपुर, एरणपुरा, सुमेरपुर होते हुए १५ मील चलने के पश्चात् मुनि मण्डल ने सुमेरपुर जैन छात्रावास में ४ कलाक विश्राम किया। दो प्रहर को ३॥ बजे सूर्य आग बरसा रहा था, धरा आग उगल रही थी, और मुनिमण्डल ने फतापुरा पहुँचने के लिए विहार कर दिया। फताहपुरा से प्रातः आलपे के उस भयंकरतम घाटे के मार्ग से विहार प्रारम्भ किया गया कि जिस की चढ़ाई जीवन मरण का प्रश्न थी। तीक्ष्ण धार वाले पत्थर मार्ग में भरे थे। आस-पास खाड़ी अपनी भयानकता बतला रही थी

गरमी प्रचण्ड हो रही थी। मुनिमण्डल चलता रहा पूरे दिन चला। मार्ग में आंधी के तूफान ने मार्ग को रोंद दिया था। आंखें रेती से भर रही थीं, गले प्यास से सूख रहे थे। सब के उदर उपवास कर रहे थे। पर इसकी परवाह थी किसे? अन्ततोगत्वा सूर्यास्त के समय ३६ माईल का विहार पूरा हुआ और मुनिमण्डली ने चान्दना में रात्रिवास किया प्रातः सियाणा पहुँचा मुनिमण्डल। श्री संघ ने उत्साह से स्वागत किया और श्री सुविधिनाथ प्रभु के दर्शन कर हर्षित हुआ मुनिवृन्द। मुनिप्रवर श्री विद्याविजयजी म० का प्रवचन हुआ। १॥ कलाक के विश्राम के पश्चात् मुनिवरों ने आकोली पहुँचने के लिए विहार किया। आकोली का बच्चा बच्चा हर्षित था। ठीक बारह बजे और मुनिमण्डल ने आकोली में प्रवेश किया। जिनालय में जिनराज के दर्शन किए और धर्मशाला (उपाश्रय) में व्याख्यान सभा हुई, प्रवचन हुए और सभा विसर्जन हुई। संध्या को शुभ मुहूर्त में जाजम हुई। प्रतिष्ठा की नवकारसियों के चढ़ावे प्रारम्भ हुए। अनुमान से भी अधिक चढ़ावे हुए। पत्रिका प्रकाशित हुई। समस्त प्रकार की तैयारियाँ सम्पन्न हुई। बाहर ग्रामों से सर्वधातु की अनेक प्रतिमाएँ आई। प्राणप्रतिष्ठा का विधान हुआ। वै० सु० ६ को प्रातः सूर्योदय से १ कलाक और २४ मिनिट पर प्रभु प्रतिमाएँ पूर्वनिश्चित स्थानों पर प्रतिष्ठित की गईं। स्वर्णदंड एवं स्वर्ण कलश शिखर पर चढ़ाए गए। इसी दिन फले चुनड़ी (नगर चौरासी) हुई। २६ हजार जनता ने भोजन किया उस दिन। सप्तमी गुरुपुष्य में बृहत् शांतिस्नात्र विधान सम्पन्न हुआ और प्रतिष्ठा विधान भी समाप्त हुआ।

दो लाख के खर्च से निर्मित नूतन जिनालय त्रिशिखरी है। मध्य में श्री आदिप्रभु और श्री महावीर प्रभु तथा श्री ऋषभनाथ स्वामी का त्रिगडा विराजमान है। मूलनायकजी से दाहिनी ओर मध्यम में श्री वासुपूज्यप्रभु, श्री शांतिनाथ प्रभु एवं श्री सुविधिनाथ प्रभु विराजमान हैं। मूलनायकजी के वामपार्श्व में श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु और उनके दोनों ओर श्री पार्श्वनाथ प्रभु विराजमान हैं। गर्भगृह के बहार रंग मंडप में अनन्तलब्धियों के अधिपति श्री गौतम स्वामी तथा समर्थ गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिजी म. की भव्य प्रतिमा विराजमान है। नवचोकिए में श्री सिद्धाचलादि के सुन्दर पट्ट मन्दिर की शोभा में चार चांद लग रहे हैं।

यह प्रतिष्ठा महोत्सव श्री संघ आकोली को सब मिला कर प्रचुर यश दाता रहा। अनेक लोगों के दिलों में प्रतिष्ठा विधान के निर्विघ्न पूरा होने के लिए शंकाएँ थी। पर मुनिवरों के मार्गदर्शन में कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ। विधानकर्त्ताओं की दक्षता एवं सावधानी को देखकर जनता आश्चर्य में थी। प्रतिष्ठा के कार्य को सानन्द सम्पन्न करने में श्रीसंघ आकोली तो तन मन एवं धन से प्रस्तुत था ही, साथ में आहोर के स्वयंसेवक, आकोली परिषद के स्वयं सेवक तथा अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के मालव क्षेत्रीय स्वयं-सेवकों के परिश्रम का भी अभिनन्दन है। वास्तव में नवयुवक समाज सेवा में अपने को किस प्रकार प्रस्तुत करता है, यह बात तब सब के समक्ष प्रत्यक्ष थी। प्रतिष्ठा के दिनों में परिषद का अधिवेशन भी हुआ जिसने समाज

उन्नति के लिए समाज के समक्ष अपनी कार्य-क्रम रख कर समाज को प्रगति के पथ पर चलने को आहूत किया। परिषद के मंच से मुनिवरों के भी जो प्रवचन हुए, वे वास्तव में समाज की स्थिति के नक्शे थे। प्रतिष्ठा विधान की समाप्ति के बाद मुनिमंडल ने वै. सु. ११ को प्रातः ८ बजे बागरे की ओर बिहार किया। आकोली की जनता ने नदी तट पर मुनिमंडल को आंसु भीनी आंखों से बिदा दी। तभी मुनिराज श्री विद्याविजयजी ने श्रीसंघ को मांगलिक सुना कर बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए पाठशाला चलाने के लिए उपदेश दिया। उसी समय संघ में से ५ वर्ष के व्यय का चन्दा हुआ और मुनिमंडल ने विहार किया।

इस प्रकार श्रीसंघ आकोली द्वारा आयोजित यह प्रतिष्ठा महोत्सव अपने मधुर स्मरण रख कर समाप्त हुआ। श्रीसंघ आकोली ने अपने द्रव्य को सातों क्षेत्रों में व्यय करके यश एवं अनन्त पुण्य का उपार्जन किया।

अनुशासित जीवन बनाने के लिए संगठित होकर समाज सेवा करने के लिए धार्मिक शिक्षा प्रचार द्वारा भावी पीढ़ी को सबल वाणी देने के लिए परिषद् को अपनाइये ! परिषद् को सहयोग दीजिये !!

अरे ओ संसृति के इतिहास

(श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन 'सरोज' रतलाम)

अरे ओ संसृति के इतिहास !

कह तू कैसे देगा परिचय, जग-जीवन आभास ?

सत्य सुखद धर्मामृत तज कर,
भले-बुरे का निर्णय तज कर;
देव मिला जो उसे पूज कर,
कहां धर्म विश्वास ॥ १ ॥

विषय-वासना-विष जग पीता,
जीवन जल-बुदबुद सा रीता;
मन चाहा कह जाता पीता,
पीने में उल्लास ॥ २ ॥

अभी खेलने दो खाने दो,
धर्म-कर्म-चिन्ता जाने दो;
बचपन में कुछ सुख पाने दो,
मिटे हृदय की त्रास ॥ ३ ॥

कहाँ मिलेगा फिर यह यौवन,
कहाँ मिलेगा फिर अनुपम मन;
कहाँ मिलेगा फिर तरुणी-तन,
यौवन जब कुछ मास ॥ ४ ॥

जरा काल सहसा ही आया,
आकर झटपट रोब जमाया;
शीघ्र बदल की जर्जर काया,
जीवन सच खग-रास ॥ ५ ॥

जग निराश हो कहता भाई,
कर न सका मैं पुण्य कमाई;
कुछ भी मैंने सुमति न पाई,
आह मृत्यु ही पास ॥ ६ ॥

कहते वेद-पुराण पृष्ठ यह,
जग मानव जीवन महान यह;
कहला सुजान मत बन अजान,
समझो जीवन न्यास ॥ ७ ॥

अरे ओ संसृति के इतिहास !

शीश नवाता–हृदय झुकाता–श्रद्धा सुमन है अर्पित करता....

हे तपस्वी

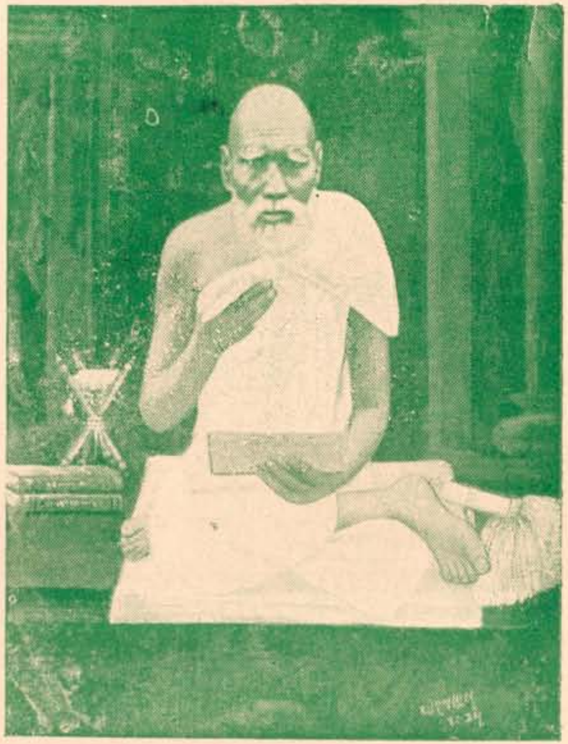

स्व० श्रीमद् धनचन्द्र सूरीश्वरजी महा०

हे मनस्वी

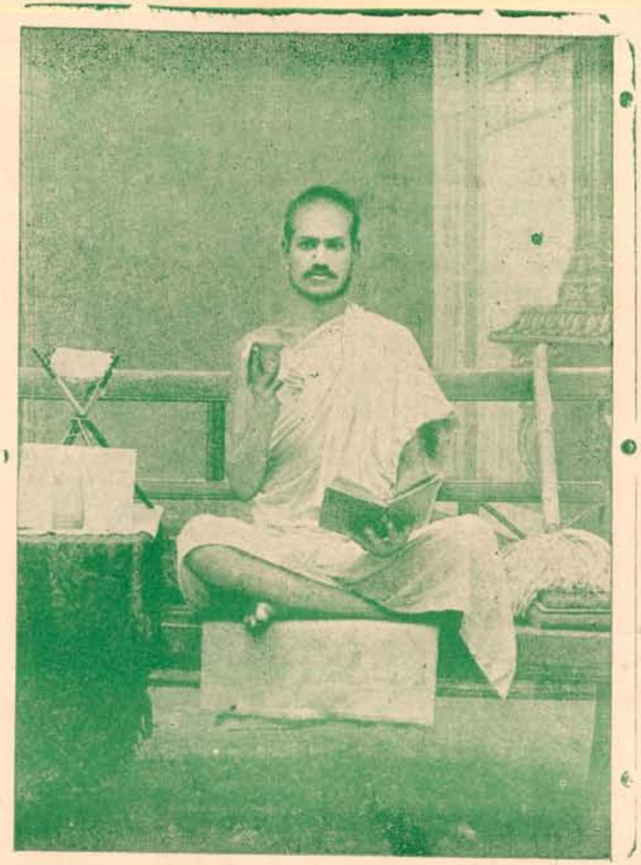

स्व० श्रीमद् भूपेन्द्र सूरीश्वरजी महा०

....जग का कण कण जिनके पदचिन्हों पर !

श्री जिन प्रतिमा और उसके वन्दन पूजन का विधान

लेखकः—गीतार्थ गुरुदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश शिष्य
मुनि श्री देवेन्द्र विजयजी "साहित्य प्रेमी"

यह एक त्रिकालाबाधित है कि हमको यदि अपनी आत्मीयप्रगति का मार्ग निष्कंटक करना है, तो हमको तदनुसार ही अपनी दैनिकचर्या और वर्तन करना होगा। तदनुसारी वर्तन के लिए एवं सावद्ययोग से निवृत होने के लिए, वैसे ही और किसी भी महत्ताशाली आलम्बन की आवश्यकता अवश्य है। इसमें किसी के दो मत नहीं हो सकते। बिना परम श्रेष्ठ आलम्बन के हम, सावद्य व्यापारों से मुक्त नहीं हो सकते। हाँ तो विभाव दशा के काले आवरण से मुक्त होने के लिये और स्वभाव दशा की संशुद्धि के लिए, जो कार्य हम करते हैं, वह आत्मा का अपना कार्य होता है। अतः परमोपकारी श्री शास्त्रकार भगवन्तों ने श्री तीर्थंकर भगवन्तों के आलम्बन का एतदर्थ विधान किया है। वीतराग का आलम्बन हमको वीतरागता की ओर बढ़ाता है, और सरागी का आलम्बन सरागी बनाता है। अनन्त अनन्त काल से हम रागी के रंग में रंगे रहे हैं, अतः सरागी बन गए हैं। अतएव अब हमने अरागी-वीतराग का आलम्बन लिया है। श्री वीतराग प्रभु के विरह में हम उनके बिम्बों-प्रतिमाओं को संस्थापित करके, उनकी यथाविधि पूजा-उपासना करते हुए,

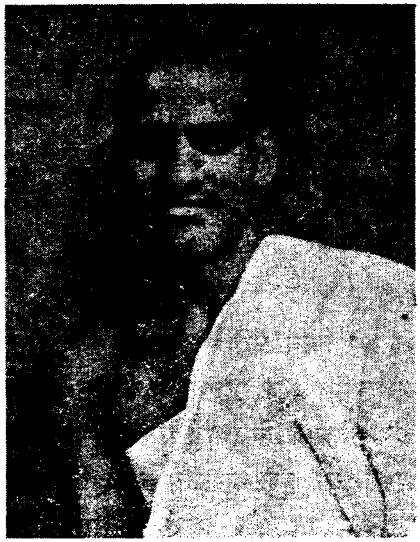

अपनी आराधना में प्रगतिशील होते हैं।

जिस प्रकार पिताजी की अनुपस्थिति में उनका चित्र हमें उनके गुण स्मरण में सहायक होता है, कागज के खण्ड पर अंकित भारत का नक्शा सारे भारत का ज्ञान करवाता है, विशेष प्रकार से लिखित एवं निर्मित रचना हमें काव्य का आनन्द प्रदान करती है। अतः वह स्वीकार्य है। उसी प्रकार श्री जिनेन्द्रभगवान के मोक्ष-गमन के पश्चात् हम उन श्री की प्रतिमाओं के आलम्बन से आराधना में अग्रसर होते हैं।

तभी कहा गया है "जिण पडिमा जिणसारीखी" तथा "पंचम काले जिनवर ? तुझ पडिमा आधार" मतलब की श्री जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा श्री जिनेन्द्र भगवान के समान ही आदरणीय एवं सम्माननीय है। महर्षि आर्द्रकुमार एवं श्री शय्यमभवाचार्य का जीवन तब ही प्रगतिशील हुआ कि जब उन्हें श्रीजिन प्रतिमा के दर्शन हुए। श्री आगम शास्त्रों में स्थान-स्थान पर श्री जिन प्रतिमा के दर्शन वन्दन और पूजनादि के अधिकार प्राप्त हैं। श्री जिन प्रतिमा का विधान आगमसम्मत है। किन्तु कुछेक जन तर्क प्रस्तुत करते हैं कि "प्रतिमा तो पत्थर है पत्थर के सामने माथा रगड़ने से एवं उसका आलम्बन लेने से तो जड़प्रियता ही अधिक बढ़ती है। पत्थर की गाय जैसे दूध नहीं देती, वैसे ही पत्थर की प्रतिमा भी हमारे लिए किस प्रकार लाभप्रद हो सकती है ?"

जो श्री जिन प्रतिमा को पत्थर मानते हैं, उन्हें प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में इतना ही निवेदन है कि एक कागज के टुकड़े पर कुछ निश्चित रंगों और आकृतियों एवं राष्ट्रीय बोध चिन्ह अंकित होने पर, वह एक के आगे दो बिन्दियां होने पर १००) का नोट हो जाता है। कोई भी समझदार उसे फाड़कर नहीं फेंकता। मूर्ख जन उसे कागज का टुकड़ा समझता है और समझदार उसे नोट कहता है। तो समझना चाहिए कि शासकीय बोध चिन्हांकित कागज का टुकड़ा १००) का नोट होकर संभालने योग्य हो जाता है, तो क्या श्री वीतरागमुद्रांकित पत्थर माननीय नहीं ? पत्थर की गाय दिखलाकर या देखकर गाय सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है। मात्र गाय-गाय की रटना लगा लेने से न तो गाय की जानकारी मिलती है, न दूध ही मिलता है। श्री वीतराग प्रभु की प्रतिमा के दर्शन से हमको अनुपम और अपूर्व आनन्द तथा शांति प्राप्त होती है। त्रिविध परितापों से परितप्त हमारी आत्मा को श्री जिन प्रतिमा के दर्शन से राहत प्राप्त होती है। श्री वीतराग-प्रभु की प्रतिमा के दर्शन से हमारी आत्मा को आर्तध्यान और रोद्रध्यान के कुत्सित विकल्पों से मुक्ति मिलती है। श्री दशवैकालिक सूत्र में श्रमणों को परिलक्षित करके कहा गया है कि:—

चित्तभित्तिं न निज्झाये, नारिं वा सुअलंकियं।
भक्खर पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे
॥ अ. ८. गा. ५५ ॥

श्रमणों को दिवाल पर चित्रित स्त्री के चित्रों को नहीं देखना चाहिए, सहसा यदि दृष्टि पड़ भी जाय तो तत्काल हटा लेना चाहिए।

प्रस्तुत श्री दशवैकालिक सूत्र सबको मान्य है। इसके आठवें अध्ययन की पचपनवीं गाथा है, यह। चित्र भी दर्शक को कितना प्रभावित कर सकता है, का ज्ञान होता है, इससे। यदि थोड़े समय के लिए हम यह मान लें कि श्री वीतराग प्रभु की पत्थर की प्रतिमा के दर्शन पूजन से हमको कुछ भी प्राप्त नहीं होता, तो फिर स्त्री के चित्र को देखने मात्र से ऐसे कौन से गंभीर खतरे की सम्भावना है, कि सूत्रकार ने स्त्री चित्र को अवलोकन करने का स्पष्ट निषेध किया है। सावधान हम शास्त्रकार श्री के इस आदेश के प्रकाश में जान सकते हैं कि स्त्री चित्र को देख कर हो सकता है, काम-वासना जागृत होने से हमारे पवित्र विचारों में सरागभाव आ जाय। सरागभाव की जागृति ही तो आराधना में विघ्नों की परम्परा उपस्थित

हो जाती है। हाँ तो स्त्री के चित्र से हम राग भाव को प्राप्त हो सकते हैं तो श्री वीतराग प्रभु की प्रशमरस निमग्न प्रतिमा के दर्शन से हम ग्रात्मविभोर होकर विभावों से मुक्त हो सकेंगे ही। चित्र की महत्ता पर कहा जाता है—एक चित्र दस हजार शब्दों की ग्राव-श्यकता को पूरी करता है ।

तरंगवई कथादि से चित्र की ग्रावश्यकता के ग्राख्यान प्राप्त हैं। वहाँ चित्र जैसे थे वैसे ही भावों की सृष्टि हुई। ग्रत: यह तो सुनिश्चित है कि हमारी ग्राराधना को परिपुष्ट बनाने के लिए श्री वीतराग भगवन्तों की प्रतिमाग्रों के ग्रालम्बन की ग्रावश्यकता है ही। जो ग्रनादि-काल से माननीय है, ग्रौर रहेगी! ग्राराधना में श्री वीतराग प्रतिमा की ग्रावश्यकता को नहीं स्वीकारने वाले भी ग्रपने धर्म-गुरुग्रों के चित्र सादर ग्रपने घरों में रखते हैं। यह प्रतिमा का स्वीकार नहीं तो ग्रौर क्या है ?

स्याही ग्रौर कागज के सहयोग से निर्मित जत्थे को मानना कि यह भगवतिसूत्र है। पर वास्तव में देखा जाय तो वह कागजों का जत्था मात्र है। पर वह इसलिए माननीय है कि उससे हम को श्री वीतराग की वाणी प्राप्त होती है। उस वाणी के श्रवण से हमारी ग्रात्मा जड़ की ग्रासक्ति से मुक्त होने का प्रयास करती है। उसी प्रकार श्री वीतराग-प्रतिमा के ग्रालम्बन से हमारी ग्रात्मा व्यक्तिगत स्वार्थ से निकल कर समष्टिगत परार्थकरण को स्वीकार करके परमेष्ठिभाव को प्राप्त होती है। हमारी ग्राकांक्षा भी तो यही है कि हम कर्मों से मुक्त होकर सिद्ध बनें। ग्रत: ग्रावश्यक है कि हम समस्त कदाग्रहों का परित्याग करके प्रतिक्षण चंचल मन को स्थिर करने में परम सहायक प्रतिमा विधान को हम स्वीकार करके, उससे सम्यग्दर्शन की निर्मलता को प्राप्त करने का प्रयास करें ।

जब हम श्री वीतराग-प्रतिमा विधान को स्वीकार करते हैं तो हमको उसके वन्दन ग्रौर पूजन के पावन विधान को भी स्वीकार करना होगा। इसलिए कि:—ग्रनन्त ग्रनन्त काल से हमारी ग्रात्मा विभावदशावश क्लिष्ट कर्मों के बन्ध बांधती रहती है, ग्रौर उससे नानाविध यातनाएँ सहती रहती है। ग्रतीव ग्रनर्थकारी विभावदशा के घोर ग्रन्धकार से स्वभाव दशा की परमादरणीय स्थिति को प्राप्त करने के लिए ग्राराधकों के हितार्थ श्री वीतरागभगवान ने ग्रनेक मार्गों का विधान किया है। उन सब में भक्ति भी एक है। विषयवासना से ग्रशुद्ध हुए मानव के ग्रन्तस्तल को पवित्र करने के लिए भक्ति का रस ग्रावश्यक है उतना कि जितना शरीर पोषण के लिए भोजन ग्रावश्यक है। भक्ति रस से ग्राप्लावित हृदय से काम विकार ग्रौर रागद्वेष तथा काषायिक परिबल शनैः शनैः वैसे ही भागने लगते हैं कि जिस प्रकार मयूर की ग्रावाज को सुनकर चन्दनवृक्ष से सांप पलायित होते हैं:—

"सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग
मभ्यागते वनशिखण्डिनिचन्दनस्य"

भक्त के ग्रन्तस्तल में भक्तिरस पैदा होकर, धीरे धीरे भक्त को समाधिभाव के समीप पहुँचाता है। समाधिभाव को प्राप्त भक्त रागद्वेषात्मक हीनप्रवृत्तियों से ऊंचा उठकर ग्रात्मीय परमानन्द में लीन होता है। ग्रत: परमकारूणिक शास्त्रकारभगवन्तों ने फरमाया है —

"भत्तीइ जिणवराणं खिज्जंति पुव्वसंचिया कम्मा"

श्री जिनेन्द्र भगवान की भक्ति से पूर्वसंचित कर्मों का क्षय होता है। भक्ति के पोषण का मुख्य आलम्बन चैत्य है। चैत्य का अर्थ जिन प्रतिमा* है। श्रीजिन प्रतिमा के वन्दन पूजन का विधान हमारे लिए उतना ही माननीय है कि जितने सामायिक प्रतिक्रमण एवं पौषधादि विधान माननीय है। चैत्य (जिन प्रतिमा) के वन्दन का महत्व प्रदर्शित करते हुए श्री हरिभद्राचार्यजी ने लिखा है—

"चैत्य वन्दनत: सम्यक, शुभो भाव प्रजायते।
तस्मात् कर्मक्षयं सर्वं, तत: कल्याणमश्नुते॥
—श्री ललितविस्तरा"

सम्यक प्रकार (सविधि) से चैत्यवन्दन करने से शुभभाव पैदा होते हैं। शुभभावों से कर्मों का क्षय होता है और कर्मक्षय से आत्मा परमपद को प्राप्त होती है।

श्री आगम शास्त्रों में स्थान स्थान पर श्री जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमाओं को मुनिजनों, सुरों सुरेन्द्रों और नर नरेशों के द्वारा वन्दन पूजन कृत्य के उल्लेख प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। अत: श्री जिनेन्द्रशासन में यह विधि निराबाध गति से सदा और सर्वत्र समाचरित है। नित्य पूजा का विधान श्रमणोपासक गृहस्थों के लिए कर्मनिर्जरा का कारण भूत है। शास्त्रीय विधि मार्ग से अनभिज्ञ कुछेक तर्क बाजों का यह कहना कि—"आगम शास्त्रों में नित्य पूजन का विधान नहीं है। यह तो पीछे के आचार्यों के माथे की उपज है।" भ्रममूलक है। यह बात तो सर्व साधारण सहजता से समझ सकते हैं कि कुवे में पानी नहीं होगा तो बालटी में पानी आयेगा कैसे? इसी प्रकार यदि श्रीजिनेन्द्रवाणी के संग्राहक आगम साहित्य में ही जो विधान नहीं होगा, उसे कौन मानेगा? श्रीजिनेन्द्र शासन में जिनाज्ञा के विरुद्ध का अल्प अस्वरण भी भवभ्रमण का हेतु होता है। अत: श्री हेमचन्द्राचार्यजी ने श्री वीतरागस्तोत्र में लिखा है कि—:

"आज्ञा राद्धा विराद्धा च शिवाय च भवाय च"

श्वेताम्बर एवं दिगम्बरों को एक समान मान्य श्री उमास्वाती जी ने श्री प्रशमरतिशास्त्र में लिखा है:—

चैत्यायतनप्रस्थापनानि कृत्वा च भक्तित: प्रयत:।
पूजाश्च गंध माल्याधिवासधूप प्रदीपाद्या:॥३०५॥

श्रमणोपासक अपने सामर्थ्यानुसार श्रद्धापूर्वक चैत्य-जिन प्रतिमा को आयतन जिनालय में प्रतिष्ठित करके उसका गंधमाल्य और धूप दीपादि से पूजन करें।

श्री तत्वार्थाधिगम सूत्र की ८ वीं सम्बन्ध कारिका भी ऐसी ही है—

अभ्यर्चनादर्हतो मन: प्रसादस्तथा समाधिश्च।
तस्मादपि नि:श्रेयस-मतो हि तत्पूजनं न्याटयम्।८।

अरिहंत-तीर्थंकरों की पूजा करने से राग द्वेषादि दुर्भावों का प्राबल्य न्यून होता है, अत: मन प्रसन्न होता है। मन के प्रसन्न होने से समाधिध्यान में एकाग्रता प्राप्त होती है। समाधि की संप्राप्ति से कर्मों की निर्जरा होती है

***"चेइय सद्दो रूढ़ो, जिणिंद पडिमत्ति अत्थओ दिट्ठो"**
चैत्य शब्द जिनप्रतिमा के अर्थ में रूढ़ है।
—श्री हरिभद्राचार्य

"चैत्यमिव जिनादि प्रतिमेव" श्री स्था. सू. ३ स्था. टीका
"चैत्यं जिनौकस्तद बिम्बम्"
चैत्य का अर्थ जिनालय और जिनबिम्ब है।
"अभिधान चिन्तामणी"

और मोक्ष की प्राप्ति होती है, अतः श्री अरिहंतों की पूजा करना सर्वथा न्याय संगत एवं युक्ति युक्त है।

आचार्य श्री के प्रस्तुत लेखन में पूजा के दोनों प्रकारों—द्रव्यपूजा और भाव पूजा का निर्देश किया गया है। श्रमण मात्र भाव पूजा का अधिकारी है, और श्रमणोपासक दोनों प्रकार की पूजा का अधिकारी है। श्रीमद्-विमलाचार्य श्री ने अपने पउमचरिअं में लिखा है:—

वंदणविहाणपूयण कमेण काऊण सिद्धपडिमाणं।
अहते कुमारसीहा चेइयभवणा पइसरंति॥

वे राजकुमार सिद्ध प्रतिमाओं का यथा-क्रम विधिपूर्वक वन्दन पूजन करके चैत्यभवन से बाहर आते हैं।

श्री जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण ने भी फरमाया है कि:—

कज्जा जिणाण पूया, परिणाम विसुद्धहेउओ निच्चं?
दाणाइउधमग्गप्पभावणाओ य कहणं वा॥
॥३२४७॥

श्री जिनेन्द्र भगवान की पूजा सदैव करना चाहिए, क्योंकि दानादि के समान यह भी परिणाम विशुद्धि की हेतु है।

ऊपर प्रस्तुत प्रमाणपाठों के प्रकाश में साधारण बुद्धिपाठक भी सरलता से समझ सकता है कि श्रीजिन प्रतिमा के वन्दन पूजम एवं दर्शन का विधान एक पवित्र और आत्मोन्नति के मार्ग में अत्यावश्यक विधि है। श्री जिन प्रतिमा के वन्दन पूजन को करता हुआ आराधक जीव कर्मों के बन्धनों से मुक्त होने के लिये समर्थ होता है। पूजन से परिणामों की शुद्धि होती है, राग द्वेष के अनिष्ठ विभावों के बन्धन शिथिल होते हैं। श्री नामस्तव‡, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र¶ और श्री अजितशान्तिस्तव|| में हम जिस समाधिलाभ की प्राप्ति के लिये नित्य प्रति भावना भाते हैं, उसकी भी प्राप्ति श्री जिन प्रतिमा के पूजन से सम्भव है। अतः समस्त विवादों एवं कदाग्रह को छोड़कर नित्य प्रति श्री जिन प्रतिमा की वन्दन पूजन को समाचरित करने वाला आराधक कर्म निर्जरा को प्राप्त होता है।

पूजा विधि में हिंसा का प्रश्न जो लोग प्रस्तुत करके अपने तर्क को रक्षित करने का प्रयास करते हैं, उनको समझना चाहिए कि अपने गार्हस्थ्य को चलाने में उसको कितनी हिंसा लग रही है? इस पर वह कभी सोचता भी है? यदि वह श्रमण है तो उसे ग्रामानुग्राम विहार करने में, शास्त्र छपवाने में, व्याख्यान देते हुए, अपने अङ्गोपाङ्गों के हलन चलन में गोचरी के लिए गमनागमन में भी तो हिंसा लगती है। उससे बचने का क्या विधान किया? श्री जिन प्रतिमा के वन्दन पूजन एवं दर्शन का विधान तो परम्परा से भी तो लाभप्रद है। पूजन से उत्पन्न सूक्ष्म-तम हिंसा के बन्धन वैसे ही नष्ट हो जाते हैं कि जिस प्रकार जल में रेखा खींचने पर वह अतिशीघ्र नष्ट हो जाती है। श्री सूत्रकृतांग सूत्र में लिखा है कि:

"पमायं कम्ममाहंसु, अप्पमायं तहावरं"
प्रमाद कर्म है और अप्रमाद अकर्म है।

---

‡ **समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ लोगस्सः**
¶ **दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ वंदित्तु।**
|| **संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ॥**

इसी सूत्र की टीका में श्री शीलांकाचार्यजी ने लिखा है :

"अथोपयुक्तो याति ततोऽप्रमत्तत्वाद्अबन्धक एव"

जब आराधक उपयोग पूर्वक चलता है, तब वह चलता हुआ भी अप्रमत्त है अतः वह अबन्धक होता है।

श्री दशवैकालिक सूत्र में भी तो यही लिखा है:—

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुज्जंतो भासंतो, पावकम्मं न बन्धई ॥८॥

यतना पूर्वक ही श्री जिनप्रतिमा की पूजन करता है श्रमणोपासक। अतः हिंसा का बन्ध उसको होने की सम्भावना भी नहीं है। कहा है :

पूआए कायवहो, पडिकुट्ठो सोउकिंतु जिणपूआ।
सम्मत्तसुद्धिहेउत्ति, भावणीया उ निरवज्जा ॥

कोई कहते हैं कि पूजा से जीवों का वध होता है। तथा जीववध का तो शास्त्रों में निषेध किया है, अतः पूजा नहीं करना चाहिए। इस का उत्तर है कि श्री जिनप्रतिमा की पूजन सम्यग्दर्शन की निर्मलता की कारणभूत है अतः सर्वथा निरवद्य है।

श्री महानिशीथ सूत्र के तृतीयाध्ययन में लिखा है कि :—

अरिहंताणं भगवंताणं गंधमल्लपईवसंमज्जणोवलेवण विचित्तबलिवत्थधूवाइएहिं पूआसक्कारेहिं पइदिणमब्भच्चणं पि कुच्चाणा तित्थुच्छप्पणं करेमोत्ति।

श्री महाकल्पसूत्र में तो साफ लिखा है, कि 'हे गौतम! जो पुरुष जिन प्रतिमा की पूजा करता है, उसको सम्यग्दृष्टि समझना, और जो जिन प्रतिमा को नहीं पूजता उसको मिथ्या दृष्टि समझना"—

"गोयमा! जो जिणपडिमं पुएइ सो नरो सम्मदिट्ठी जाणियच्चो, जो जिण पडिमं न पुएइ सो मिच्छादिट्ठि जाणियव्वो।"

हां तो इस प्रमाण प्रयुक्त विचारणा से भली भांति ज्ञात होता है कि श्री जिन प्रतिमा और उसके वन्दन पूजन का विधान सर्वथा स्वीकार्य है। क्योंकि यह आराधक के आन्तर नैर्मल्य के हेतुभूत जो है।

आकोली प्रतिष्ठोत्सव के प्रणेता व्याख्यान वाचस्पति स्वर्गीय आचार्य प्रवर

श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज

तत्त्वज्ञ थे, स्वरज्ञ थे. शुचिशास्त्र में परिपूर्ण थे।
वन्दन यतीन्द्र सूरीन्द्र को जो शांत और गम्भीर थे॥

जैन समाज के नाम कड़वी बात

(लेखक—श्री राजमल लोढ़ा, सम्पादक दैनिक 'ध्वज', मन्दसौर)

पिछले १५ वर्षों में भारत ने अपनी स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद साधन विहीन होते हुए जिस तीव्र गति से अपनी उन्नति की है वह अवश्य प्रशंसनीय है। यदि किसी तरह की कोई नई बात पैदा न हो और यही क्रम १५-२० वर्ष तक चालू रहा तो सच मानिये इस पुराने भारत को हम एक नये रूप में देख सकेंगे।

भारत की इस प्रगति के साथ साथ इस देश में बसने वाली जिन समाजों ने अपनी प्रगति के लिए आगे कदम बढ़ाया है वे भी अवश्य अपना एक नया स्वरूप देख सकेंगे।

भारत में जितनी भी समाजें हैं उनमें जैन समाज का भी अपना एक विशिष्ठ स्थान है। वह भारत के एक स्थान पर नहीं अपितु तमाम प्रान्तों में बसी हुई है और सब जगह उसका एक मुख्य स्थान है। ऐसा कोई साधन उससे अलग रहा हुआ नहीं है जिससे जैन समाज वंचित हो।

जैन समाज में सब तरह के पढ़े लिखे व्यापारी, साधन सम्पन्न व्यक्ति मिलते हैं। धर्म, समाज, जाति के नाम पर लाखों रुपये खर्च हो रहे हैं फिर भी इस प्रगति के युग में जैन समाज की प्रगति दिखलाई नहीं पड़ रही है।

वर्तमान जैन समाज में उसकी अपनी कई समस्याएं है। उनमें कुछ समस्याएं ऐसी हैं जिन पर सबको मिलकर बहुत दीर्घ दृष्टि से सोचना है। संगठित बनना है।

हमारा व्यापार भी दिन प्रतिदिन चौपट होता जा रहा है। मान लीजिये कि कभी सौ में से २० व्यापारी अपना व्यापार ठीक रूप से चला पा रहे हों और ८० व्यापारियों की आंतरिक हालत खराब हो रही हो तो यह नहीं कहा जा सकता कि जैन समाज व्यापारिक क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है। व्यापार में भी संगठित रूप से अपनी उन्नति के साधन जुटा सकेंगे तब ही इस क्षेत्र में आगे बढ़ सकेंगे।

धार्मिक शिक्षा क्षेत्र में तो हमारी प्रगति सीमित रूप में ही पहिले जैसी है। इस क्षेत्र में यदि किसी छात्र ने राइय देवसिय प्रतिक्रमण पढ़ लिया तो समझेंगे बहुत पढ़ लिया और यदि उसने पंच प्रतिक्रमण संपूर्ण पढ़ कर वह प्रति क्रमण दूसरों को अच्छी तरह कराने लग गया तो समझ लेंगे कि यह बालक जैन धर्म का अच्छा जानकार विद्वान् होगया। जरा समझने की व सोचने की बात है कि क्या जैन धर्म की शिक्षा की इति श्री यहीं तक है।

दीर्घ दृष्टि से सोचें तो मालूम होगा कि हम सब लोग मुनि मंडल के कंधों पर निश्चित हो गये और हमने मान लिया कि धार्मिकता की विशेष शिक्षा प्राप्त करना तो साधुओं का काम है। इसीलिये हम अब तक जैन धर्म के

विशिष्ट सिद्धान्तों को नहीं समझ पाये हैं व यह धर्म मन्दिर उपाश्रय तक ही सीमित रहा है।

हमारी समाज में बालकों को विशेष धार्मिक अध्ययन कराने के लिये ऐसा कोई सरल व व्यवस्थित पाठ्यक्रम भी नहीं है कि जिसको क्रमशः पढ़ लेने मात्र से जैन धर्म की मोटी-मोटी बातों का ज्ञान हो सके।

अभी तो जो प्रतिक्रमण हम करते हैं वह क्या चीज है इसका भी हमें पूर्ण ज्ञान नहीं है केवल मात्र रूढ़ि रूप में जो चला आ रहा है उसे करते हैं। मानव यदि केवल मात्र एक प्रतिक्रमण का भी सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर ले और उसकी क्रियाओं को समझपूर्वक करे तो निश्चित समझिये आज प्रतिक्रमण करने में जितना आनन्द आता है उससे कई हजार गुना आनन्द उस वक्त आने लगेगा।

इसके लिये विद्वानों को सरल सरल पुस्तकें व्यवस्थित रूप में क्रमशः तैयार करना चाहिये। हां अभी इस ओर जैन समाज के एक कर्मठ व्यक्ति ने अपना कदम उठाया है और कुछ परिश्रम शुरू किया है यदि उन्हें जैन समाज का पूरा पूरा सहयोग मिला तो वे अवश्य अपने इस प्रयास में सफल हो सकेंगे।

सबसे बड़ी बात तो यह हैं कि जैन समाज में अच्छे लेखक कार्यकर्ता ही नहीं है और यदि कुछ हैं तो उन्हें जैन समाज का सहयोग कतई नहीं है। उन बेचारों के सामने पेट भरने की एक बहुत बड़ी समस्या है उसके पीछे उनका धार्मिक ज्ञान, लिखना, पढ़ना आदि सब बन्द है वे कपनी उक्त समस्या को हल करें तब ही वे जैन समाज का कुछ काम कर सकते हैं।

जैन समाज उनसे निःशुल्क काम चाहती है और जहाँ कहीं उन्होंने अपनी आर्थिक समस्या की बात सामने रक्खी वहीं वे उस दिन से जैन समाज की नजरों से गिर जायंगे, उनकी इज्जत जो आज तक जैन समाज में बनी हुई थी सब समाप्त हो गई ऐसा मानने लगेंगे।

बड़ी विचित्र समस्या है, यदि एक व्यक्ति जो आपकी समाज का काम करके अपनी आर्थिक समस्या हल करना चाहता है उसे आप घृणा की दृष्टि से देखते हैं और एक जैनेतर व्यक्ति आपका जैसा तैसा काम करके भर पेट रोटी खाता है वह आदर व इज्जत का पात्र बनता है और उसका हर काम अच्छी निगाह से देखा जाता है। थोड़ा सोचने और समझने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। इसीलिये हमारी समाज के व्यक्तियों को अन्य तरफ भटकना पड़ता है। उनकी शक्तियों का लाभ समाज को नहीं मिल पाता है।

समाज इस समस्या पर खूब सोचे, समझे और इसका कोई ऐसा सरल मार्ग निकाले कि जिससे समाज की बिखरी हुई शक्तियां संगठित रूप में आजाय। समाज के पास पैसे की कोई कमी नहीं है, खर्च करने वालों की भी कमी नहीं है। केवल मात्र कमी है तो व्यवस्थित रूप से शक्तियों को एकत्रित करके उनके द्वारा जैन समाज की प्रगति में लाभ उठाना है।

हिन्दी श्वेताम्बर जैन साहित्य में अच्छे व्यबस्थित साहित्य के प्रकाशन की कोई संस्था नहीं है। यदि कोई साहित्य प्रकाशित होता भी है तो घिसा पिटा और स्तवन सज्झाय तक ही सीमित है जिससे जैन समाज का कोई स्थायी लाभ

—शेष पृष्ठ २२ पर देखिये

संघ प्रमुख मुनिराज

श्री विद्याविजयजी महाराज

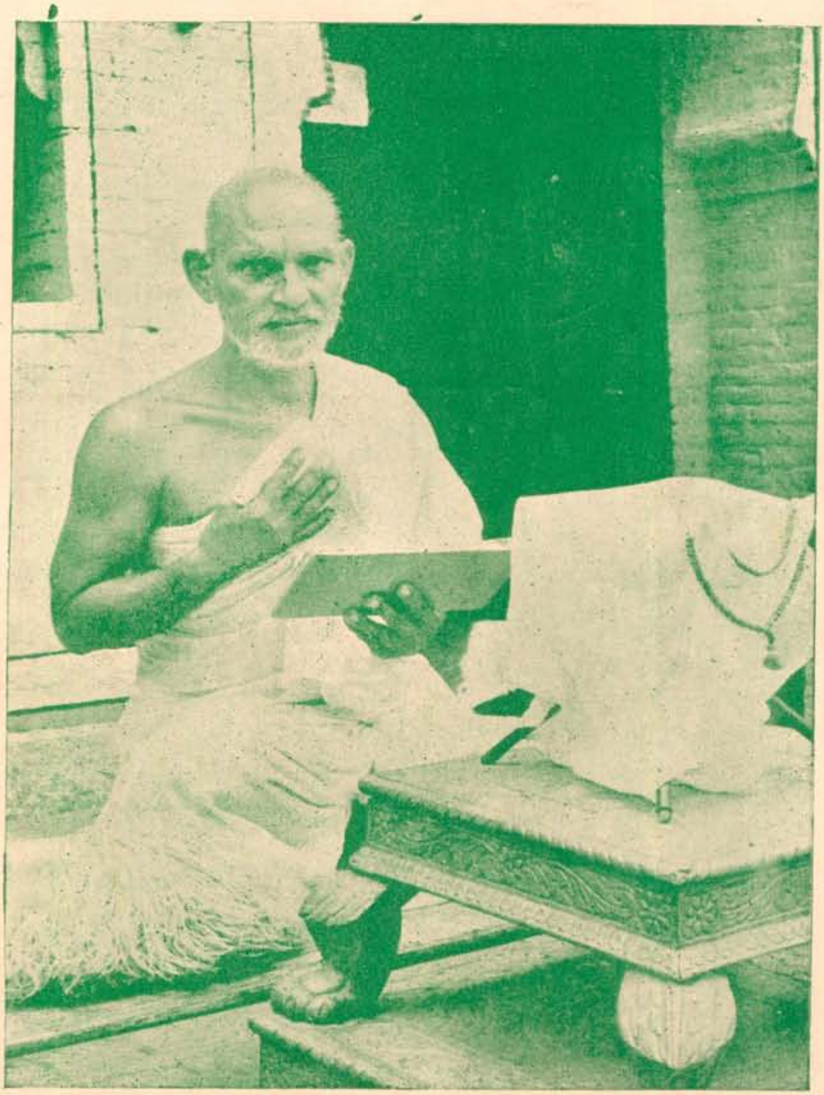

आपके ही सानिध्य में आकोली का प्रतिष्ठोत्सव इतने शानदार रूप में सम्पन्न होसका। आपके मार्ग दर्शन में आकोली वासियों का वर्षों पुराना सजोया स्वप्न साकार हुआ।

कहानी—

विजय का रहस्य..................

प्रवचनकार—प्रियवक्ता पं० विनयचन्द्रजी महाराज
सम्पादक—श्री मनोहर मुनिजी शास्त्री

एक बार सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य और चाणक्य यात्रा पर थे। मौर्य भारत का स्वर्ण युग कहलाता है। चाणक्य तो भारत के इतिहास की धारा को नया मोड़ देनेवाला है। साथ ही वह कुशल नीति का निर्माता भी था।

दोनों किसी महत्वपूर्ण योजना लेकर चल रहे थे। क्योंकि अभी नन्द वंश की जड़ें हिली नहीं थी। घूमते हुए संध्या को किसी ग्राम में पहुँचे, एक वृद्धा के घर पर ठहर गये।

ग्राम जीवन में पैसे का अभाव होता है पर उनके पास हृदय की सम्पत्ति विशाल होती है, इसीलिये वे अपरिचित अतिथि का भी प्रेम के साथ स्वागत करते हैं। यह तो आप हमसे पूछिये। ग्राम्य जीवन कितना सरल तरल होता है। कभी-कभी कोई इतने भावुक व्यक्ति मिल आते हैं। दो मिनट के परिचय में वे आपके मन को मोह लेंगे। उनके पास जो भी रूखी सूखी रोटी होगी बड़े प्रेम के साथ दे देंगे। पर उस रूखी सूखी रोटी पर स्नेह की इतनी चिकनास होती है कि आपके देशी घी की चिकनास भी उसके सामने टिक नहीं सकती।

उस वृद्धा माता का मकान तो छोटा सा था पर हृदय का घर विशाल था इसीलिये उसने प्रेमपूर्वक अपने मकान में ठहरने की इजाजत दे दी। उसे यह ज्ञान नहीं था कि ये भारत के भावी भाग्य निर्माता हैं। उसने तो केवल अतिथि के रूप में देखा और उसी रूप में अतिथि सत्कार किया। सन्ध्या को उस वृद्धा का लड़का आया। खेत में श्रम करके चला आ रहा था। दिन भर का श्रम थकावट से पैर चूर चूर हुए जा रहे थे।

आते ही माँ से बोला भूख जोरों से लग रही है। भोजन में कितनी देर और है? भूख की सबसे बड़ी दवा श्रम है। शहरों में श्रम का अभाव है। इसीलिये भूख के लिए चूरण लेना पड़ता है तब भी कहते हैं पूरी भूख नहीं लगती।

वृद्धा वात्सल्य के शब्दों में उतरती बोली, बेटा कोई देर नहीं है। खिचड़ी तैयार है बैठो मैं परोस देती हूँ। वृद्धा ने खिचड़ी परोसी। क्षुधा से आकुल पुत्र ने जल्दी में खिचड़ी को बीच में से खाना आरम्भ किया, पर दूसरे ही क्षण वह चीख पड़ा क्योंकि गर्म खिचड़ी ने उसका हाथ जला दिया। माँ ने कहा तू भी चाणक्य और चन्द्रगुप्त जैसा मूर्ख ही है।

चाणक्य के कानों में ये शब्द पड़े। आश्चर्य और उत्सुकता भरी आँखें चन्द्रगुप्त की ओर घूम गई। भारत के नीति निर्माताओं को एक ग्रामीण वृद्धा मूर्ख ठहरा रही है। क्या रहस्य है इसके पीछे? दोनों उसके निकट गये और माताजी आपने अपने पुत्र को चाणक्य और चन्द्रगुप्त से मूर्ख ठहराया। तो दोनों ने ऐसी कौनसी मूर्खता की? ऐसे वे बड़े बुद्धिमान समझे जाते हैं।

वृद्धा बोली, बैठ। किसी वस्तु को ग्रहण करने तरीका होता है उसे श्रमिक रूप से प्राप्त करे। चाणक्य और चन्द्रगुप्त नन्द साम्राज्य पर अधिकार करना चाहते हैं। पर वे एक बहुत बड़ी भूल कर गये कि आस पास की सीमाओं को विजय किये बिना ही उन्होंने अपनी सेना बीच में उतार दी। भूगर्भ के द्वारा सीधे पाटलीपुत्र पर आक्रमण कर दिया। परिणाम यह हुआ कि वे चारों ओर से घिर गये। ऐसी मूर्खता मेरा बेटा कर गया। यदि एक ओर से यह खिचड़ी खाता तो हाथ नहीं जलते पर इसने तो जल्दी में बीच में हाथ डाला इसीलिये हाथ जल गये।

चाणक्य और चन्द्रगुप्त दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। एक ग्रामीण वृद्धा ने विजय का रहस्य समझा दिया।

—पृष्ठ २० का शेषांश

होता नहीं है। यदि कोई लेखक अच्छी पुस्तक लिखता भी है तो आर्थिक समस्या के कारण वह प्रकाशित नहीं कर पाता है। तब वह निराश हो जाता हैं और अपना परिश्रम बन्द कर देता है।

जैन समाज के गुजराती विभाग ने इस ओर अपनी प्रगति की है। गत पिछले कुछ वर्षों से उसमें अच्छा साहित्य हर विषय का प्रकाशित हो रहा है। उसके प्रकाशित और प्रगति करने का एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि हमारी समाज में अधिकांश साधु साध्वी गुजराती हैं और जहां उन्हें खबर लगी कि अमुक पुस्तक प्रकाशित हो रही है वहीं वे फौरन उसके ग्राहक बन जाते हैं जिससे हजार पांचसौ कापियां तो प्रकाशित होने के पहिले ही बिक जाती है। इधर हिन्दी विभाग में यह हालत है है कि पहिले तो कोई ग्राहक बनता ही नहीं यदि किसी तरह कोई पुस्तक प्रकाशित की तो मुश्किल से १००-५० कापी बिक जायगी बाकी पुस्तकें दीमक के शरण हो जायगी। इस कारण हिन्दी की प्रकाशन संस्थायें पनप नहीं पाती हैं।

जैन समाज को उपरोक्त समस्याओं पर बहुत गम्भीरतापूर्वक सोचने का है।

परिषद् युग की आवाज और सामयिक परिस्थितियों को लेकर प्रस्थापित की गई है। समाज-सुधार और समाज सेवा के महायज्ञ को सफलीभूत बनाने के लिए परिषद् को एक एक व्यक्ति तन से, मन से तथा धन से सहयोग दे।

—विजय यतीन्द्र सूरि

प्रतिष्ठोत्सव तथा परिषद् अधिवेशन पर उपस्थित मार्गदर्शक मुनिराज (चित्र परिचय पीछे देखिये)

चमत्कारी श्री आदीश्वर प्रभु

[गुरुदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरान्तेवासी मुनि श्री जयप्रभविजयजी]

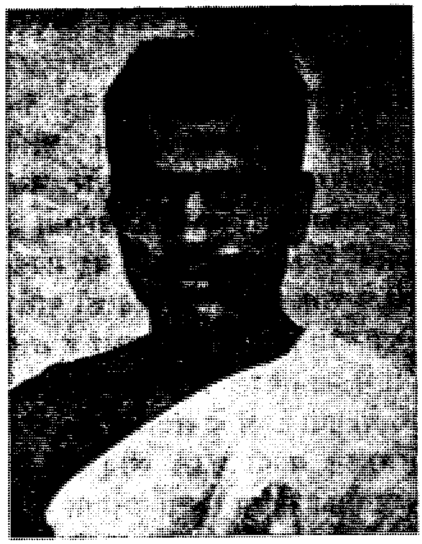

आकोली—जैन संस्कृति और सभ्यता के साकार दर्शन का केन्द्र !

आकोली—जहां के निवासियों की शानदार परम्पराओं का मारवाड़ में अनूठा स्थान है ।

आकोली—प्रेम, संगठन और स्नेह की पावन धाराएं जिसके चरणों को पखारती हैं ।

आकोली—शुष्क और उष्ण स्थली का कण कण जिसके गौरव का यशोगान गाता है ।

उसी आकोली में श्री आदीश्वर प्रभु की चमत्कारी प्रतिमा है, जो प्राचीन है और जिसका तेज वर्षों के इतिहास को आलोकित करता आया, जिसकी भव्यता जैन सभ्यता को ज्योतिर्मय करती आई है और जिसकी दिव्यता भूले भटके मानवों को प्रेरणा देकर भौतिकता के अन्धकूप से उबार कल्याण पथ पर अग्रसर रही है, करती रही है, करती रहेगी ।

उन्हीं आकोली मंडन श्री आदीश्वर प्रभु का प्रताप है कि आज फूला फला धनधान्य सम्पन्न आकोली जैन शासन की पताका को थामे निरन्तर, निश्चल बढ़ रहा है और सारे क्षेत्र को मार्गदर्शन देरहा है ।

जिनके चरणों में प्रतिदिन प्रातः आकोली का बच्चा बच्चा श्रद्धासुमन अर्पित कर अपने जीवन की यशस्वीता की प्रेरणा मांगा करता है वे ही श्री आदीश्वर प्रभु कैसे आकोली में पधारे और आकोली श्रीसंघ किस प्रकार श्रद्धाभूत हो गद्‌गद् होगया यह सब मुनि श्री देवेन्द्रविजयजी महा० का लेख (जो इसी अंक के पृष्ठ ६ पर दिया गया है) प्रशस्तियों सहित दिग्दर्शित करता रहा है किंतु जिस चमत्कार का यहां उल्लेख किया जारहा है वह आज एक कहानी बनकर आकोली के जनगण में व्याप्त है ।

× × ×

प्राचीन न अर्वाचीन कुछ दसियों की बात है, कहा जाता है कि भगवान श्री आदीश्वर प्रभु की सेवा करते करते एक पुजारी धन्य होगया । उसने सच्चे हृदय से प्रभु के चरणों में अपनी सेवाएं अर्पित की और प्रभु की भक्ति में इतना विव्हल हो गया कि उसने सब कुछ उसी में पालिया । प्रतिदिन प्रातः भगवान के करकमलों से उसे १ रुपया नगद प्राप्त होने लगा ; कितने ही महिने व्यतीत होगये उसे प्रति प्रातः १ रुपया मिलता रहता और वह मुद्रा प्राप्त कर हर्षित होजाता, किंतु पुजारी की जबान इस चीज को गोपनीय न रख सकी तथा वह नगरवासियों के सम्मुख इस घटना का बखान कर बैठी और उसी दिन से प्रभु के करकमलों से प्राप्त करनेवाला वह पुजारी १ रुपये प्रतिदिन से वंचित होगया । × × ×

ऐसे प्रभु के दर्शन कर कौन भाग्यशाली नहीं बनता । और यही कारण है कि गत माह उनका प्रतिष्ठोत्सव बड़े ही ठाठबाट से आकोली वासियों ने नवनिर्मित जिनालय में करवा कर अपने भाग्य सराह लिया ...धन्य कर लिया....पवित्र कर लिया ।

श्रीमद् भूपेन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा संस्थापित

—श्री पार्श्वनाथ जैन युवक मण्डल, आहोर—

जिसका श्रम आकोली प्रतिष्ठोत्सव पर सराहनीय रहा

श्री पार्श्वनाथ जैन युवक मंडल की स्थापना संवत १९९२ में गुरुदेव स्वर्गीय श्रीमद् विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरजी महा० द्वारा आहोर नगर में की गई थी। इसका उद्देश्य धार्मिक उत्सवों में व्यवस्था कर समाज सेवा रहा। तब से यह मण्डल अपने कर्णधारों के संयोजन में उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रशंसनीय रुप से प्रगति पथ पर अग्रसर है। श्री वखतावरमलजी मेहता मण्डल के प्रथम अध्यक्ष मनोनीत किये गये थे तथा उन्हीं के संयोजन में इसने अपने शैशव में सबल वाणी प्राप्त की। श्री पार्श्व जैन युवक मण्डल की सदस्य संख्या वर्तमान में ५०० है।

मण्डल की गतिविधियों की आज सारे मारवाड़ ही नहीं मालवादि प्रांतों में सराहना है। जहां भी प्रतिष्ठोत्सव, धार्मिक कार्यक्रम होते हैं मण्डल अपनी सेवायें प्रदान करता है। अभी तक इस श्रृंखला में मांडवाजी तीर्थ, नाकोड़ा, तीर्थ, मोहनखेड़ा तीर्थ, जैसलमेर तीर्थ, तखतगढ़, कालन्द्री, बलदूट, सरत, एलाणा, रानी, हरजी, गुढ़ा, अजीत, उम्मेदपुर, आकोली, मालवाड़ा, राजगढ़ आदि नगर गूंथे जा चुके हैं। मण्डल ने जहां कहीं भी जाकर अपनी सेवाएं प्रदान की है वहां उसके सदस्यगणों की लगनशीलता की अमीट छाप पड़ी है तथा इसके कार्य की हर नगर की समाज ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। दल को प्रोत्साहन देने का महत्वपूर्ण योगदान श्री सिरेमलजी पूनमचन्दजी का रहा।

समाज सेवा का मूलमंत्र लेकर चलनेवाली संस्थाएं अपने पथ पर अधिक कठिनाईयों तथा बाधाओं का सामना करती हैं किंतु जो समस्त व्यवधानों को दूर कर अपने पथ पर सदा अग्रसर रहती है वे भविष्य में जाकर यशस्वी बनती हैं, इसमें दो मत नहीं। मंडल भी इसके अनुसार अपवाद नहीं है। आशा है यह मंडल दिनों दिन प्रगति पथ पर बढ़ते हुए समाज सेवा के महायज्ञ को सफल बनाने में सदा कार्यरत रहेगा।

आकोली महोत्सव

पूजन, अनुष्ठान में इन्द्र इन्द्राणी

इन्द्र

१ छोगालाल चन्दाजी
२ छोड़ामल सोनाजी
३ भुरमल चन्दाजी
४ रतीलाल बाबूलालजी
५ नथमल नीयालचन्दजी
६ भबूतमल असलाजी
७ धरमचन्दजी
८ चून्नीलालजी

इन्द्राणी

१ कान्तादेवी
२ मंसीदेवी
३ जमनादेवी
४ बिमलादेवी
५ भंवरलाल की बहु
६ हरकुदेवी

संयमवय: स्थविर

मुनिराज श्री श्री १००८

श्री लक्ष्मीविजयजी महा०

जिनके निर्देशानुसार
मुनिमंडल आकोला आया तथा
प्रतिष्ठोत्सव सानन्द सम्पन्न कराने में
मार्गदर्शन प्रदान किया

प्रतिष्ठोत्सव पर उपस्थित विशाल जनसमुदाय

प्रतिष्ठा के शुभ दिन हजारों मनुष्य जिनालय के सम्मुख खड़े थे। चित्र में—
ऐसी ही भारी भीड़ जो कि आकोला के प्रशंसनीय कार्यक्रमों की झलक रूप है

प्रेरणा केन्द्र

—० श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरान्तेवासी मुनि श्री जयन्तविजयजी ०—

मन्दिर क्या है ?

आत्म शांति का निकेतन। पतीत पावन की परम सुन्दर सरिता वीतरागता के प्रति बढने का श्रेष्टतम राजमार्ग, अपने आपको पहचानने के लिये स्वच्छ आयना। सुषुप्त शक्ति को जागृत करने के लिये उर्ध्वकाय घंटाघर, संग्रहित आत्म सम्पत्ति कोषागार के ताले को खोलने की कुंजी, जागृति का उद्घोष करनेवाला सुघोषा घण्ट। सत्य का प्रकाश पाने के लिये इलेक्ट्रीक बल्ब, प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर प्रेरित करनेवाला पुण्यश्लोक प्रेरक, धर्ममार्ग पर स्थिर रहने की सूचना देनेवाला उपदेशक, मुक्ति महालय में जाने के लिये परम पुनीत सीढी, मानवता की मंजिल को तय करने के लिये महानतम सहायक, जीवन उद्यान को विकसित करने के लिये प्रखर किरण प्रभाकर, स्वावलम्बी बनने का पाठ पढानेवाला प्रकांड पाठक, मतभेद और मनभेद की दिवालों को नामशेष करनेवाला शक्तिशाली वज्र, गिरते हुए को खड़े रहने के लिये आधार, संतप्तावस्था में कल्पवृक्ष की शीतल छांव, प्रेमभावना का प्रतीक, जीवन का परमोच्च सुखसिन्धु, इप्सित पदार्थो की प्राप्ति के लिये कामकुम्भ, संसार सागर में सफलता पूर्वक पर्यटन कर पार जाने के लिये अभेद्य मजबूत नैया, संस्कृति का धाम और कलाकृति का संग्रहालय। भाव शुद्धि के लिये स्वच्छ जलाशय, जन्म २ की बिमारी को दूर करने के लिये वृहद् चिकित्सालय, मिथ्यात्व के बादलों की काली घोर घटाओं को छिन्न भिन्न करने के लिये सरस सुहाना समीर, आत्मदर्शन करने के लिए निष्कलंकी निर्मल स्फटिक रत्न, भाववृद्धि का करण और स्वभावस्थिति का अधिकरण, आत्मोत्कर्ष और गुण स्थान क्रमारोह के लिये दीर्घकाय निसैनी और बुद्धि प्राकटय और प्रागल्भ्य के लिये पावनतम प्रेरणा केन्द्र। मन्दिर क्या है ? उसका उत्तर भिन्न २ प्रकारों से इस प्रकार से दिये जाने पर स्वाभाविक रीत्या समाधान होकर निःशंक स्थिति होजाती है।

मन्दिर क्यों जाना चाहिये ?

स्वयं की सूरत कैसी है ? उसका ज्ञान करने के लिये मानव किसका सहारा लेता है ? सभी एक आवाज से कहेंगे कि जिसके द्वारा उसका प्रतिबिम्ब दिख सके ऐसे पदार्थ का। "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" यह शतप्रतिशत सत्य है। जब सूरत देखने की आवश्यकता महसूस हुई तब कांच, आयने का आविष्कार भी हुआ। उसमें बहुत चाहना से मानव देखता है अपनी शक्ल।

सरिता कितनी गहरी है ? उसका माप करने के लिये मापदण्ड की ही तो आवश्यकता रहती है। जब तक माप दण्ड नहीं तब तक प्रमाण भी तो नहीं निकाल सकते। कांच जितना निर्लेप होगा, शुद्धता लिये होगा उतना ही प्रतिबिम्ब भी शुद्ध स्वच्छ दृष्टिगोचर होसकेगा।

हां, तो अपनी इस आत्मा के ऊपर भी अनेक जन्मों से मिथ्यात्व का अन्धकार व्याप्त है, जो निर्मल और निर्लेप है उस पर अज्ञानता की मिट्टी का झूठा मुलम्मा चढा हुआ है उसकी विमलता को

शुद्धात्मदर्पण के बिना देखने में हम असमर्थ रहेंगे ? शुद्धता की प्राप्ति के पश्चात् क्या स्थिति निर्मित होती है ? शुद्धावस्था की प्राप्ति के लिये किस प्रकार से स्वभाव परिणति में रमण करना चाहिये ? विभावदशा (परपरिणति) में रहकर आत्मा किस भांति दुर्भावना के पूर में बहती जाती है ? उसका सुव्यवस्थित दिग्दर्शन वह शुद्धात्म दर्पण ही करावेगा। जब तक शुद्धाकृति सामने नहीं आती तब तक शुद्धा शुद्धि के भेद को समझने में कई कठिनाइयों का उत्पन्न होना सम्भव है।

शुद्ध, अशुद्ध इन दो भेदों को हम सिद्ध और संसारी के नाम से पहचान सकते है। जो कर्ममुक्त होगये हैं वे सिद्ध अर्थात् शुद्ध, जो कर्मयुक्त हैं, भवार्णव में भ्रमित होकर भ्रमण कर रहे हैं वे ससारी, अशुद्ध। भेद कितना केवल 'म' कार और 'य' कार का। इस भेद को मिटाया जाय कैसे ? उस मार्ग की प्राप्ति के लिये प्रत्येक धर्मावलंबी आत्मश्रेयोर्थ सम्पूर्ण परिश्रम करते हैं; सर्वतोप्राक उन मार्गों का अनुकरण और अनुसरण करना श्रेयस्कर होगा। जिनसे कि अज्ञानता का आवरण क्या और कैसे छाया हुआ है ? उसका भान होकर वेभाबावस्था दूर हो जाय और जागृति का संचार ही जीवन का लक्ष्य बनाया जाय।

बालक को विद्यालय में भेजने के पूर्व उतनी योग्यता प्राप्त कराने के लिये सर्व प्रथम प्राथमिक कक्षा में प्रविष्ठ कराया जाता है, वह परिश्रम और लगन के साथ आगे बढकर उत्तरोत्तर प्रगति करता है ठीक उसी प्रकार अपनी प्रमादविस्था का भान कराने के लिये प्रारम्भ में जब तक आत्मगुणों की प्रपूर्ति नहीं हो जाती तब तक जिन मन्दिर एवं जिन प्रतिमा परमतम सहायक होते है। जिस प्रकार दर्पण में अपनी यथाकृति प्रतिबिम्बित होती है उसी प्रकार निर्मल, शुद्धता के लिये भगवद् प्रतिमा दर्पण के समान ही आत्म साधन के लिये मार्गदर्शन करती है। उसके सम्मुख उपस्थित होने पर भावों की प्रभावकता के दर्शन होते हैं, शुद्धात्मा के ऊपर अवस्थित आवरणों की, स्वाभाविकता प्रतीत होती है और जिन कारणों से आवरण का आच्छादन हुआ उसका स्मरणीय अनुभव होता है, चतुर्गति के दुःख और सहजानंदी के सुख की अनुभूति होती हैं। सद् ध्यान होता हैं, सद्ज्ञान की प्राप्ति होती है, सच्चारित्र का प्रादुर्भाव होता है।

अत: वीतराग भगवान की मूर्ति-बिम्ब हमारी स्वयं की आत्मा को प्रतिबिम्बित करनेवाला है यह निःसंशय सत्य है साथ ही हमारी आत्मोन्नति में प्रबल कारण भूत है।

हां, तो इसीलिये प्रतिदिन भगवान की मूर्ति के दर्शन जिन मन्दिर में जाकर करते रहकर तदनुसार जीवन को बनाने में वास्तविक सफलता प्राप्त की जा सकती है।

मूर्ति के दर्शन से भाववृद्धि कैसे ?

पूर्व में यह बतला दिया गया है कि अशुद्धता मिटाने पर ही शुद्धता प्राप्त की जा सकती है। अज्ञातम धनीराशि के कारण इस बात को समझने और समझाने में कुछ समय लगता है। जनसाधारण की समझ और व्यवहारिक दृष्टि से इस ओर दृष्टिपात करें और देखे। आंख के सामने किसी एक देश या प्रदेश के नक्शे (Map) को लीजिये। उस देश की स्थिति परिस्थिति की ज्ञातव्य बाते सहज में ध्यान में आ सकेगी जिसका अनुभव एक स्कूल (School) के विद्यार्थी से कर सकते हैं। किसी भी ग्रंथ या पुस्तक को देखने पर उसमें रहे हुए धार्मिक व्यवहारिक या सैद्धान्तिक दृष्टिकोण को आसानी से समझ सकते है, वर्णमाला के किसी भी एक वर्ण

को देखने पर उसको वैसा ही कहते और समझ लेते हैं। कहीं भी किसी भी चित्रा-कृति को देखते ही कल्पनाओं की उड़ानें भर लेते हैं और उस आकृति के अन्तस्तल तक भी पहुंच जाते हैं।

दूर कहां जायं ? वर्तमान के सिनेघर में प्रदर्शित चित्रपट भी इस बात के प्रबल प्रमाण हैं कि जिसको देखा नहीं प्रत्यक्ष में, जिससे परिचय नहीं किसी प्रकार का फिर भी "ये हैं, वे हैं" ऐसा कहते हुए लोग नजर आते हैं। इससे स्पष्टतः ज्ञान हो जाता है कि केवल उसकी प्रतिकृति या फोटु को देखने से ही विचार कैसे होते जाते हैं ?

हां तो वैसे वितराग भगवान की मूर्ति के दर्शन होने पर भावों में वृद्धि होती जाती है, उन के सम्पूर्ण जीवन का नयनाभिराम सामने प्रत्यक्ष हो आ जाता है। देखें तो सही उस चलचित्र को भी ?

वह राजमहालय, ऊंचा भी बहुत है। यह नगर कितना समृद्ध है, धन धान्य की कमी कहीं भी नजर नहीं आती उस राजमहालय में ही तो इन प्रभु का जन्म हुआ है। पूर्णरूप से स्वर्गीयानन्द प्रमोद में लालन पालन होरहा है। देखिये, वे दिशा की आठों नायिकाएं भी आचुकी हैं, अत्यन्त मनोहर कदलीगृह का निर्माण किया है। यह क्या ? इनका कार्य होते ही स्वर्गाधिपति शक्रेन्द्र भी आगये हैं ४ रूप करके ! उधर मेरुगिरि की ओर भगवान को ले जारहे हैं। पहुँच गये वहां, यह सोने का ही पहाड़ है। यहां देव देवेन्द्रों द्वारा अभिषिक किये गये उन महाप्रभु पर। पुनः भगवान को ये लाये उनकी माताजी के पास और शक्रेन्द्रादि गये। स्वधाम को यह जन्मकाल का विशद उत्सव।

बड़े हुए ! राज्यारोहण उत्सव की तैयारियां हो रही हैं। देखो सभी करबद्ध खड़े हैं अपने नायक की आज्ञा को शिरोधार्य करने। सभी 'धन्य धन्य' की आवाज और 'युग युग जिओ जगत् अधिराज' के नारे लगा रहे हैं। मुकुट कुंडल से शिरोभाग चमक रहा है और कंठस्थ हार भी कहां कम है। एक ही आवाज में अनेक उपस्थित हैं सेवा के लिये। स्वर्ग की शोभा को भी निस्तेज करनेवाले विशाल भवन हैं, धन धान्य की कमी नहीं और वैभव विलास की भी न्यूनता नहीं। इतना सब कुछ होते हुए भी देखो वे क्या करने लगे। प्राप्त वैभव विलासों का परित्याग कर रहे हैं और यह क्या ? हाथ से ही अपने सिर के केशों को उखाड़ दिया इन्होंने। ये वस्त्राभूषण दूर कर दिये, त्याग दिये। वे चल दिये, चले जारहे हैं भयंकर सघन वन प्रदेशों में, आत्मगुणों की सम्प्राप्ति एवं ज्ञान के अलौकिक तेजः पुंज को प्राप्त करने के लिए। अहा ! हा ! कितनी कठोर तम तपः साधना की। ऐसा क्यों किया? मात्र स्वभावजन्य स्वद्रव्यगुण की प्राप्ति करने के लिये ! अन्ततोगत्वा स्वात्मगुण-कैवल्यज्ञान को प्राप्त कर लिया। अब क्या है ? देखने लगे हैं वृत्त, वर्तमान और वर्तिष्यमाण को तादृश।

यह लगा समवसरण। वे ही देवाधिदेव उसमें विराजित होकर संसार के संतप्त जीवों को उपशांति का मार्ग सम्यग् ज्ञान, दर्शन चारित्रयुक्त दिखा रहे हैं, मेघध्वनी सी गम्भीर स्वर लहरियां एक योजन (आठ मील) के क्षेत्र को प्लावित कर रही है। स्व पर को कल्याणकारी पथ का अनुगामी बता कर 'तिन्नाणं तारयाणं' के पद को सार्थक कर दिया। देव, महादेव और देवाधिदेव बन गये। यह है नयनाभिराम पूरा चलचित्र हमारे सम्मुख।

इतने पूरे चलचित्र को दृष्टिगत कर लेने के बाद स्वतः अनुमान कर सकते हैं कि हमारी और भगवान की आत्मा में क्या अन्तर था ? अभी क्या है और है तो क्यों ? उसका समाधान ज्ञान भगवान की मूर्ति कराती है। अज्ञजनों का एक चित्र या मूर्ति जो ज्ञान करा सकते हैं वह ग्रंथों का अध्ययन नहीं करा सकती।

इसीलिये तो एक पाश्चात्य विद्वान् ने अपना स्पष्ट मत व्यक्त किया है—

'One picture is worth ten thousand words'

एक चित्र— आकृति दस हजार शब्दों का काम करती है। अर्थात् जिस को दस हजार शब्दों के द्वारा समझाया जा सकता है उसी बात को एक भाव वाही चित्र के द्वारा सरल और सुगम रीति से समझाया जा सकता है।

इतनी बात के पश्चात् आसानी से ज्ञात हो जाता है कि अशुद्ध से शुद्ध बनने में भगवान् की मूर्ति निश्चित रूप से असाधारण सहयोग, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्रदान करती है उसी के दर्शन से ही तो स्वयं को ज्ञान होजाता है कि मैं कौन हूँ और मुझे क्या करना है।

आगमों में भी एकाधिक अनेक प्रमाण प्रत्यक्ष हैं जो हमेशा आत्मप्रगति के मार्ग में प्रवृत्त होने के लिये प्रेरित करते हैं।

अनार्यदेश में रहने वाला वह आर्द्रकुमार! श्री युगादिदेव की मूर्ति को देखकर के ही तो प्रतिबोध पाया था और अपने पूर्व जन्म को तादृश्य करके रोगों के घर समान भोगों का परित्याग करके जैन दीक्षा को धारण किया, आत्म प्रगति कर शुद्धता को प्राप्त कर लिया था। सभी के सामने यह कथानक कितना महत्वपूर्ण बोध देरहा है।

इसी लिये तो कहा गया है— 'जिण पडिमा जिण सारिखि' वीतरागता का साक्षात्कार जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा कराती है। उसके आलम्बन मानव ही नहीं अपितु प्राणिमात्र को परमात्मदशा प्राप्त करा सकता है अतएव प्रतिदिन मन्दिर में जाकर प्रभु दर्शन कर स्वात्मपरिणति की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये।

—क्रमशः

जब भी आप पधारेंगे

प्रकृति की खुली गोद में स्थित

पावन

गुरूदेव की पुण्य-स्थली

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

पर आत्मशांति का सुन्दर सुखद अवसर आपको

आत्म-विभोर कर देगा

प्रति वर्ष हजारों यात्री दर्शनार्थ आते हैं। आप भी आना न भूलिये !

—व्यवस्थापक श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. पेढी

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

श्री आदीश्वर जिनेन्द्र प्रतिष्ठोत्सव, आकोली

जिनका सबल नेतृत्व उत्सव को सफलता के शिखर पर लेगया

आकोली के पंच महानुभाव जिनने रात दिन सफल मार्गदर्शन ही नहीं दिया अपितु तनतौड़ परीश्रम भी किया ।
सर्व श्री त्रिलोकचन्दजो चन्दाजी, श्री बाबुलालजी चमनाजी, श्री धर्मचन्दजी चमनाजी और कस्तुरचन्दजी.

प्रतिष्ठोत्सव

(श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्-अधिवेशन के शुभावसर पर)

रचयिता—श्री पी० टी० पोरवाल बागरा (राज०)

(तर्ज—राजस्थानी फाग-गीत)

बोल दे-जय बोल दे गुरुदेव यतिन्द्र सूरि री-जय बोल दे ।
गाड दे अंगास[1] में ओ ! झंडो तीन थुई ।।टेर।।

ब्रजलाल के नन्द दुलारे, चम्पा बाई जाया हो ।
बडे भ्रात दुलीचंद, किशोरी बहन सुहाया हो ।।१।।

गुरु राजेन्द्र रा चेला ए तो, भूपेन्द्र रा पट्टधारी ।
बालपणा से ब्रह्मचारी ए तो, समकित धारी हो ।।२।।

धवलपुर मे जन्म आपरो, दीक्षा खाचरोद लीनी हो ।
मोहनखेड़े गुरु चरणों में, मुक्ति पायो हो ।।३।।

आकोली नगर प्रतिष्ठा ऊपर, साराई[2] बेली[3] आया हो ।
उणरे[4] साथे अधिवेशन ने, सफल बनाया हो ।।४।।

राजेन्द्र जैन युवक परिषद् री, गुरुदेव थापण कीनी हो ।
चतुर्मुखी उद्देश्य बताने, अशीष दीनी हो ।।५।।

बागरा नगर रो भोलो करसो[5], ओछब[6] देखण आयो हो ।
'पार्श्व मंडल' री देख रेख में, 'पुखराज' गायो हो ।।६।।

जय बोल दे............

[1] अंगास—आकाश, [2] सराई—सब ही, [3] बेली—मनुष्य, [4] उणरे—उसके, [5] करसो—किसान,
[6] ओछव—उत्सव,

जहां प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न हुआ — आज का —

आकोली

ढोंग, आडम्बर, दिखावे तथा भौतिक वातावरण से दूर निश्चल, निश्छल नगर है—आकोली—जहां के श्री संघ का हर कार्य आडम्बर का प्रतिरूप नहीं बल्कि हृदय की भावनाओं का प्रतीक है। भक्ति की सार्थकता यदि है तो वह केवल श्रद्धा से है! ऊपरी भक्ति केवल दिखावा और शरमा शरमी मानी जाती है किंतु आकोली वासियों में श्रद्धा की मात्रा अत्यधिक है। वे श्रीमद् राजेन्द्र सूरिजी के पथ पर अपना सर्वस्व तक न्योछावर करने को तय्यार रहते हैं तथा वीर प्रभु के संदेशों का हर कीमत पर पालन करते हैं।

जालोर जिले तथा बागरा तहसील में स्थित आकोली—विधानसभा के सुरक्षित क्षेत्र का एक ग्राम है जहां की आबादी लगभग १३०० होगी। इनमें १००० जनसंख्या जैन तथा अन्य जैनेतर हैं। इस नगर के चारों ओर एक नदी वृत्ताकार घूम गई है, वर्षा में जब नदी में बाढ़ आती है तो इसका सम्बन्ध सभी ग्रामों से टूट जाता है और यह एक द्वापू के समान घिर जाता है किंतु नदी में पानी एक या दो दिन से अधिक नहीं रहता। नदी की रेत बहुत बारीक है जिससे यहां बाढ़ से कीचड़ होने का कभी प्रश्न ही नहीं उठता।

यहां के मकान अधिकतर पक्के हैं किंतु दूकानें २-४ से अधिक नहीं। यहां के निवासी बाहर अन्य प्रदेशों में व्यापार करते हैं तथा वहीं रहते हैं। यह क्षेत्र रहन सहन में पिछड़ा होते हुए भी उच्च है क्योंकि अन्य प्रदेशों तथा [illegible] में निवास से यहां के नागरिकों पर भी [illegible] सहन की पूर्ण छाप पड़ी है। मारवाड़ में होने से यहां गर्मी भी कुछ अधिक गिरती है।

यहां जैन धर्मशाला पक्की बनी हुई है तथा क्षेत्र भी उसका काफी अच्छा है। धर्मशाला दो मंजिल की है। मंदिर भी अभी मकराने का बनाया गया है।

इस क्षेत्र की अधिकांश भूमि बंजर पड़ी हुई है मीलों रेतीली धरती देखी जा सकती है। पहाड़ी इलाका भी इधर आगया है तथा आकोली से सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय इन शिखरों की विहंग छटा का अवलोकन किया जासकता है जो कि बहुत ही अद्भूत है। कहीं कहीं खेती की जा सकती है किन्तु निवासी बाहर जाकर ही व्यापार करते हैं। नगर का क्षेत्रफल बहुत कम है तथा अशिक्षा का प्रचार बहुत कम है।

यहां एक माध्यमिक पाठशाला है किन्तु उसमें छात्रों उपस्थिति संख्या बहुत कम है। अधिकांश छात्र ५ वीं ६ ठी पढ़कर छोड़ देते हैं तथा अन्य प्रदेशों में चले जाते हैं। समाज व्यवस्था सभी पंचगणों के हाथों में एकेन्द्रीत है। जैन संख्या अत्यधिक होते हुए भी जैनेतर लोगों को भी ये बहुत अधिक सहयोग देते हैं तथा उनके धार्मिक कार्यों में अनुदान आदि भी! इसका ज्वलन्त प्रमाण वहां का एक शिव मंदिर है जिसे एक जैन श्रावक ने निर्मित करवाया। साम्प्रदायिक मतभेदों का नाम तक नहीं है जैन तथा जैनेतर सभी सामूहिक रूप से धार्मिक उत्सवों में भाग लेते हैं।

यहां हमने एक ऐसे व्यक्ति को भी देखा जो सांप के जहर को उतारने में आश्चर्य जनक मंत्र तंत्र करता है। कहा जाता है कि मीलों दूर भी यदि किसी को सांप काट डालता है तो वह इस क्षेत्र में बैठकर ही उसका जहर उतार देता है। इसकी प्रक्रिया केवल एक 'तमाचा' जो उक्त व्यक्ति संदेश वाहक के कान पर जड़ता है। यदि टेलिफोन पर सूचना दी जाती है तो टेलिफोन के रिसीवर पर ही 'झापट' मारकर उक्त व्यक्ति मीलों दूर बैठे व्यक्ति का जहर उतार देता है। यह इस क्षेत्र में अत्याधिक प्रसिद्ध है।

यहां के निवासियों में पुराने रीति रिवाजों की ही बहुता पाई जाती है। बड़े से लेकर छोटे तक उन्हीं पर चलकर अपना आदर्श बनाते हैं। ग्राम स्वच्छ तथा सुन्दरता के आधार पर स्थापित है। निवासी अपनी बात के बड़े सच्चे माने गये हैं अपनी आन व शान पर मर मिटने को सदा तत्पर रहते हैं। 'सूखेधर्म' की भी यहां प्रथा नहीं है जो कहते हैं कार्य रूप में परिणीत कर उसे दिखला देते हैं तथा उसके लिये तन-मन-धन सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। अहं भावना छू तक नहीं गई है बड़ा से बड़ा लखपति तथा व्यक्ति भी अपने को समाज का सेवक और सिपाही मानता है। यहां के नागरिकों में सेवक बनने की 'स्पीरीट' हैं नेता बनने की नहीं!

आकोली के निवासियों की भाषा गुजराती तथा मारवाड़ी मिश्रित भाषा है। रहन सहन मारवाड़ी ढंग का है। ये खान-पान तथा आचार विचार में पक्के अहिंसक ही नहीं हैं अपितु दैनिक कार्यों में भी हिंसा को पास खटने तक नहीं देते। शुद्ध देशी घी ही उपयोग में लाया जाता है 'डालडा' अथवा वनस्पति के दर्शन ही दुर्लभ हैं।

कुल मिला कर आकोली नगर एक साधन सम्पन्न नगर है जहां के निवासी सीधे-सादे, सरल स्वभावी तथा शांति प्रिय नागरिक हैं।

यदि आप चाहते हैं कि

❀ समाज संगठन का प्रयास सफल हो।

❀ गांव गांव में पाठशालाओं की स्थापना हो।

❀ सुरीतियों का संचार हो।

❀ मध्यम वर्गीय लोगों की स्थिति का सुधार हो।

तो आज ही अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के सदस्य बनिये तथा अपने गांव में शाखा स्थापित कर केन्द्रिय

कार्यालय को सूचना दीजिये

एक संस्मरण :

आकोली में सम्पन्न आदीनाथ प्रतिष्ठोत्सव का नौ दिवसीय

आंखों देखा हाल

—सुरेन्द्र कुमार लोढ़ा, मंदसौर

नया देश और नई भाषा, नया रूप और नया रंग, नया साज और नई सज्जा यह संक्षिप्त परिचय है उस प्रदेश का जो भारत के सिंहद्वार पर स्थित कभी भगवान भास्कर की प्रचण्डता को सहन करता है तो कभी सुखी रेतीली घाटियों की उष्ण आंधियों का हंसते हंसते स्वागत करता है। जहाँ के रीति-रिवाज, जहां के चाल-चलन और जहां के तौर-तरीकों में भिन्नता पाकर भी जो पायी वह थी वहां के वासियों की सहृदयता, नेकी और सच्चाई ! दिल से साफ बात के पक्के वचन के सच्चे और यही श्रम के तेज विशषता है उस उष्ण और शुष्क प्रदेश के नागरिकों की ! छोटे से लेकर बड़ा और वृद्ध तक जहां···श्रमशील बनकर कर्मठता से कार्य करता है, अनुशासित हो संचालन करता है और कर्मठ बन परिश्रम करता है······ऐसा एक प्रदेश है मारवाड़ और उसी के हृदय स्थल में स्थित है······आकोली······जिसके कर्णधार इन कसौटियों पर शत प्रतिशत खरे ही नहीं उतरे हैं अपितु आदर्श बनकर सारे मारवाड़ को अपनी प्रतिभा और यशस्वीता से जगमगा रहे हैं। ऐसे नगर के ऐसे ही नागरिकों ने स्व० गुरुदेव श्री मदूविजय यतीन्द्रसूरी श्वरजी महा० के आदेश को पालन कर मंदिर का जिर्णोद्धार करवाया। हजारों का सदूव्यय किया और १० साल के निरंतर प्रयास से वह सुन्दर भवन के रूप में आकोली की शोभा को द्विगुणित करने लगा। श्री आदीनाथ प्रभु की भव्य प्रतिमा और गुरूदेव श्री की कृपा ने आकोली नगर के नागरिकों का हृदय गद्‌गद् कर दिया और वे प्रति[illegible]की योजनाएं बनाने लगे। योजनाएं बनीं और मुनिराज श्री विद्याविजय जी महा० सा० से सानिध्य हेतु निवेदन किया गया। मालवा जिला धार, तहसील राजगढ़-सरदारपुर और नगर पावन पवित्र भूमि श्री मोहन खेड़ा वहीं थे मुनिराज श्री अपने मुनिमण्डल सहित—उधर मेवाड़ तथा मेवाड़ के भी उस छोर मारवाड़—जिला जालोर, तहसील बागरा और नगर आकोली ! कितनी दूरी दोनों में ! कोई मोटर और रेल से भी यात्रा करे तो उसे रतलाम, चित्तोड़, मावली, मारवाड़, लूणी और समदड़ी इन छः जंकशनों को पार ही नहीं करना पड़े बल्कि उसे 'ट्रेन्स' भी परिवर्त्तित करना पड़े ! कितना दूर-समय अल्प और कार्य अधिक ? उग्र विहार प्रारम्भ हुआ जिसकी मर्यादा प्रतिदिन ३६ मील तक पहुंची ! पैदल मारवाड़ की रेतीली भूमि और गर्मी का मौसम ३६ मील एक दिन में विहार किसे रोमांचित नहीं कर सकता !···किन्तु लक्ष्य एक था हर भाव में हर कार्य में आकोली केन्द्र बिन्द्र था और वही लक्ष्य बिन्दु भी ! मुनिराज का पहुँचना था कि आकोली श्री संघ के स्वप्न साकार होने लगे ! सारी व्यवस्था की दौड़ धूप प्रारम्भ हुई भयंकर कशमकश थी—भीड़भाड़ की नहीं—श्रम और पसीने की ! उधर मारवाड़ का जन जन लालायित था वह चाहता था की ८ वर्ष के बाद पधारे इन मुनिराजों से उसका कण कण पवित्र हो जाय—चारों तरफ श्री संघ की विनतियें आने लगी और मुनिमण्डल को प्रतिष्ठा पहिले ही सभी को लाभ देने के लिये विचरण करना पड़ा उसी—

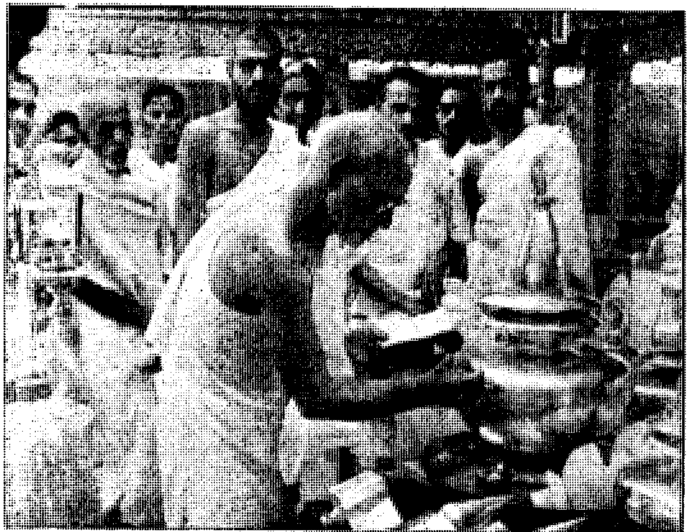

आकोली प्रतिष्ठोत्सव

मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज क्रिया मण्डप में कलश, दण्डादि पर मंत्राक्षरों का लेखन कर रहे हैं.

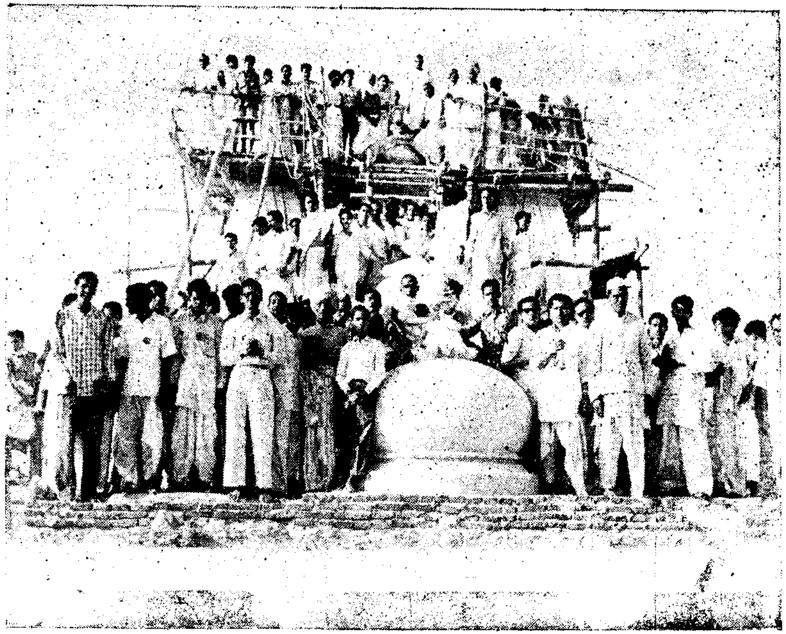

ध्वजारोहण

श्री आदीश्वर जिनालय पर ध्वज, कलश तथा दण्ड का आरोहण होने के बाद का एक दृश्य.

रेतीली धरती !
शुष्क घाटी !
उष्ण भूमि !
में—

मुनि श्री जयन्तविजयजी को व्यवस्था भार देकर तथा मुनि श्री पुण्यविजय जी को वहीं छोड़कर मुनिराज श्री विद्याविजय जी म०, मुनि श्री शांति विजय जी म०, मुनि श्री देवेन्द्र विजय जी, मुनि श्री भानुवि विजय जी ठाणा चार के साथ भी न माल की ओर बढ़े ! वहां के प्रतिष्ठोत्सव की तय्यारियों को सबल वाणी व मार्गदर्शन दिया । दूसरी ओर मुनि श्री सौभाग्य विजय जी, मुनि श्री रसीक विजय जी, मुनि श्री जय प्रभ विजय जी, मुनि श्री लक्ष्मण विजय जी मांडव पुरतीर्थ ओर प्रस्थान कर रहे थे उनने वहां शांतिस्नात्र पूजन सम्पन्न करवाई ! मुनि श्री कल्याण विजय जी, मुनि श्री हेमेन्द्र विजय जी, मुनि श्री भुवन विजय जी ओलीजी करवाने के लिये सियाणे पधारे। उधर आकोली में श्री संघ द्वारा भव्य तय्यारियां प्रारम्भ की गईं। पत्रिकाएं प्रकाशित हुईं, चारों ओर प्रेषित कीं गईं और व्यवस्था हेतु स्थान स्थान के स्वयम्सेवक दलों, मंडलों तथा संघों को आमंत्रित किया गया। हाथी, घोड़े, पालकी, बैण्ड बाजे सभी बुलायें गये, नगर सजाया गया, ध्वज तोरण बांधे गयें और शरमाती-सकुचाती आकोली नगरी नया शृंगार किये जन जन के अभिनंदन हेतु खड़ी थी—उसी—

पथरीली जमीन !
सूखे मैदान !
जलविहीन प्रदेश !
पर—

❀ ❀ ❀

……तो साहब हम भी चल पड़े मंदसौर स्टेशन से उसी नगर की ओर जो दूर था।

२८०० फर्लांग !
३५० मील !
१७५ कौस !

इतनी दूरी थी—मंदसौर से आकोली की ! हम ट्रेन में बैठे खूब भीड़ थी कुछ प्रणयोत्सवों में सम्मिलित होने जारहे थे तो कुछ समाजोत्सवों में !………किन्तु हम तो जारहे थे प्रतिष्ठोत्सव में और वह भी प्रथम तीर्थंकर प्रभो आदी नाथ स्वामी के जिन बिम्ब की प्रतिष्ठा में ! भीड़ हो या भड़का शुभ मांगलिक कार्यों के मांगलिक शुकुन हुआ करते हैं। फिर भी धक्के मुक्के सहन कर चित्तोड़ तो पहुँच ही गये—

दोपहर २ बजे !
भगवान भास्कर की प्रचण्ड रश्मियें !
तप तपे रेल्वे कम्पार्ट मेंट !

ट्रेन चेंज की और अग्रसर हुए मावली जंक्शन की ओर ! आराम की यात्रा रहीं, न भीड़ थी न अधिक आवागमन ! सूर्य ने तारों से बिदा ली और शाम पृथ्वी पर उतरने लगी हम मावली पहुँचे सोचा था कुछ विश्राम करेंगे किन्तु सामने ही मारवाड़ जंकशन जाने वाले ट्रेन मोर्चे पर डटी मानो हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। पेटी, बिस्तर, डिब्बे थैली सभी उतारे लम्बी सफर थी और उतना ही अधिक सामान था………सरगर्मी से बढ़े और स्फूर्ति के साथ हमने दूसरी ट्रेन की ओर कदम बढ़ायें और इतनी जल्दी जगह प्राप्त की कि मानो एक डिब्बे से दूसरे में कूदे हैं। कूदे क्या फांदे हैं और लांघे हैं ! फिर वही (रेल) अविकल गति से बढ़ती गई ! रात्री का अन्धकार बढ़ने लगा, तारे छिटकने लगे किन्तु चंदा अमावस्या की भयंकरता को अनुभव कर द्वादषि को ही मानो नाक सिकोड़ रहा था ! वह (ट्रेन) उस अंधकार को चींरती बढ़ रही थी और हम निद्रा देवी की सत्ता में डूबे गोते खारहे थे। सोयें-सोयें नहीं बैठे-बैठे ही ! आखिर नींद भी तो एक ऐसी ही शक्ति है जो बड़े बड़े ताकतवरों की चेतन्यता पर अतिक्रमण कर पछाड़ देती है हम कैसे बच सकते थे। गनीमत कहियें या सौभाग्य [illegible] के डिब्बे में ही बैठे

थे सो मारवाड़ जंक्शन पर 'ट्रेन-चेंज' की मुसीबत से बच गये किन्तु लूनी जंक्शन को हमारा यह सुख कहां अच्छा लग रहा था:—

नमकीन आंधियां !
नमकीन जल !
नमकीन धूलकण !

लूणी के नाम को सार्थक कर रहे थे। फिर पद यात्रा की और 'ट्रेन-चेंज' के नशे में एक ट्रेन से दूसरी की ओर गये।...... बाल अरुण अपनी स्वर्णिम रश्मियों के साथ मारवाड़ के प्रांगण में प्रभासित हो रहा था और जन जन हर्षित हो प्रात: का स्वागत करने हेतु आतुर खड़ा था। ......अभी एक जगह और 'ट्रेन-चेंज' की रश्म अदा करनी थी। किन्तु फिर 'सौभाग्य' ने अगड़ाई ली और माननीय स्वर्णसिंह जी (रेल-मन्त्री) की कृपा से हमें भीलड़ी का कम्पार्टमेंट मिल गया। कृपा ही कहें कम से कम इतनी मुसीबत से टाला ही यही नहीं १ जुलाई से पहिले टिकिट वृद्धि न कर और भी अधिक अनुगृह किया। खैर ! विषय से अलग नहीं जाना है......तो लीजिये समदड़ी जंक्शन आगया और ठहरिये साहब कुछ और बढ़िये।

दोपहर २ बजे !
सूर्य की प्रचण्डता !
उष्णता की तप तप।

बागरा स्टेशन ने हमारी अगवानी की इस रेल यात्रा का यह अन्तिम स्टेशन था। जल्दी जल्दी उतरे और मोटर में स्थान पाने की प्रतिस्पर्द्धा में पूरे वेग से दौड़ लगाई सिर पर सामान, हाथ में सामान, तेज धूप और कण्ठ प्यासा फिर भी लक्ष्य प्राप्त करना था। कॉलेज या स्कूल की दौड़ प्रतियोगितों में तो अभी तक भाग लेने का मौका नहीं आया किन्तु आज तो मालवे का घी शायद पसीना बन चू रहा था। मोटर में बैठे टिकिट खरीदे ! मोटर चली मारवाड़ मुल्क

ऊंची नीची सड़कें !
पिछड़ा प्रदेश !
मोटर के [illegible] धक्के।

आकोली पहुंचे ! धर्मशाला (उपाश्रय) गये द्वार पर मुनि श्री जयन्तविजय जी महा. ने अटेण्डेन्स (उपस्थिति) ली और मुनिराज श्री विद्या विजय जी महाराज, मुनि श्री कल्याण विजय जी महा. फिर समस्त मुनि मण्डल को बारी बारी से वन्दन का बाहर आये। गर्मी की हवा चल रही थी आवास की व्यवस्था हुई और एक पाठशाला में जगह मिल गई। विद्या प्राप्त करने आये थे विद्यालय में ही शरण प्राप्त की। प्रारम्भिक, आवश्यक क्रियायें सम्पन्न कीं और फिर मुनि श्री जयन्तविजयजी महा. के साथ राजेन्द्र नगर में प्रवेश किया निर्माण कार्य चालू था फिर बारी बारी से किया भ्रमण, पंचायत मण्डप तथा अधिवेशन स्थल देखे और इधर उधर की कुछ चर्चा की ! दिन व्यतीत हुआ दूसरा दिन आया, तीसरा आया, चौथा आया......और मेरी डायरी के पृष्ठ अङ्कित होते रहे...होते रहे...होते रहे...

वैशाख विदी १३
दिनांक २-५-६२

प्रात: का मंगलमय वातावरण; आकोली के जन जन के मुख पर उत्साह व हर्ष की लहर ! स्वयम्-सेवकगण व्यवस्था हेतु तत्पर तथा पंच महानुभाव मार्ग दर्शन हेतु आतुर !! प्रतिष्ठोत्सव का नव दिवसीय कार्यक्रम मंगल गीतों तथा कामनाओं के साथ प्रारम्भ हुआ ! प्रभात फेरी के गगन गूंजित ननाद आकोली की चारों दिशाओं को जय जय कार तथा 'वन्दे वीरम्' की ध्वनियों से लिप्त कर रहे हैं ! नवयुवकों में जोश तथा खरोश है अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा आकोली के कर्णधार व्यवस्था जमाये रखने का प्रयास कर रहे हैं। मंगलमय वातावरण में मंगलमय कार्य की मंगलमय शुरूवात हुई। जनता क्रिया मण्डप की ओर जिन दर्शन व जिन-पूजन हेतु बढ़ रही है तो उधर जैन धर्मशाला (उपाश्रय) में मुनिराजों को वन्दन क ने नागरिक गण जारहे हैं। आकोली की गलियों व सड़को पर हलचल व सर गर्मी बढ़ती जारही है। सभी के चेहरों पर हंसी व

खुशी है। कई महानुभाव जो वर्षों बाद अपनी मातृ भूमि पर लौटे थे अपनी मातृ भूमि पर हो रहे इस विशाल उत्सव की भव्यता पर गर्वित हैं। उधर पंचायत पण्डाल में पूछताछ कार्यालय पर भीड़ लग रही है। सूर्य धीरे धीरे पृथ्वी पर अपना प्रकाश फैला रहा है। दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होने के उपरान्त नर-नारियों की भीड़ परठे (भोजनशाला) की ओर बढ़ रही है। पंगतें (पंक्तियां) लग रही हैं; नर-नारियां शांति और आनन्द से भोजन कर रहे हैं। व्यवस्था बराबर चल रही है लगभग १२ तक यह दौर चलता रहा।

दोपहर को जुलुस के चढ़ावे की बोलियां 'पंचों की पेढ़ी' (श्री आदीनाथ राजेन्द्र जैन पेढ़ी का कार्यालय) के सामने भव्य पण्डाल में बोलियां होरही हैं। धर्म प्रिय जनता अपने हृदय के भावों को चढ़ा कर बोलियां लगा रही हैं। क्रमशः एक दूसरी बोलियां समाप्त हो रही हैं। ध्वनि प्रसारक यंत्र पर उनकी आवाज सारे नगर में गूंज रही है।

तो लीजिये............

बोलियां समाप्त हो गई और वर घोड़े की तय्यारियां प्रारम्भ होगई! खाचरौद के महावीर बैंड के कर्मचारी अपने सुर अलाप रहे हैं तो उधर घोड़े की व्यवस्था में कार्यकर्त्ता जोर शोर से जुटे हुए हैं। वरघोड़ा प्रारम्भ होगया!

शानदार परघोड़ा

सबसे आगे अश्वरोही ध्वज लेकर बढ़ रहे हैं, घोड़े हिनहिनाते हैं तो कभी दौड़ लगाते हैं फिर भी जुलुस का श्रृंखला को बराबर बनाये रखे हैं। चमचमाती धूप है पर आनन्द मय कार्य में पर्वाह किसे। पीछे मोटरकारें हैं जिनमें महिलायें मंगलमय गीत गारही हैं। खाचौरद का बैंड स्वर लहरियों से समां बांध रहा है तो पीछे देखिये वह क्या? अरे! रजत पालखियां और रथ चले आरहे हैं। इनके पीछे हथनी है, नरनारी हैं और अबाल वृद्ध हैं। व्हीसिल्स (सीटियां) बज रही हैं लाल और हरी झण्डियों द्वारा स्वयम् सेवक व्यवस्था जमा रहे हैं और वरघोड़ा नगर के मार्गों पर जय जय कार के साथ बढ़ रहा है.........!

वरघोड़ा समाप्त हुआ और तुरन्त बाद सांध्य भोजन के लियें उसी परठे की ओर सभी स्वधर्मी बन्धु बढ़ रहे हैं!

संध्या ने धीरे धीरे घटा को चूमा और विदा ले अपना कार्यभार निशा को दिया। त्रयोदशी की रात्रि थी, चारों ओर संगीत और भक्ति का दौर चल रहा है। भजन भावों का अच्छा कार्यक्रम है! स्वर लहरियां कर्णों को मुग्ध कर रही हैं तो गीत और भजन बड़ा ही मनमोहक वातावरण प्रस्तुत कर रही हैं।

मन्द मन्द पवन के झोंके आरहे हैं, टहनियां हिल रही हैं, पत्ते झड़ रहे हैं और हमारी चेतन्यता निद्रा देवी के ध्यान में मस्त खर्राटों की कैद बनी बिलाख राही है..................। वैशाख वोदी १४

पक्षियों का करलव और चिड़ियों की चहचहाहट मंगल प्रभात को स्वागत हेतु आतुर है तो महिलाओं के मंगल गीत घर घर और द्वार द्वार से उठ कर सर्वत्र व्याप्त हो रहे हैं। मयूर बिना मौसम ही आनन्द मग्न हो नृत्य कर रहा है तो मयूरजी आकोली वासियों की प्रशंसनीय भक्ति में विह्वल हो मयूर का साथ दे रही है। ध्वनि प्रसारक यंत्र से गीत प्रसारित होरहे हैं-महावीर के अरणिक के, श्रेणिक के.......! तो उधर प्रभात फेरी के नारे आकोली को जागरण का सन्देश दे रहे हैं।

प्रतिदिन की तरह जिन दर्शन, जिन पूजन और गुरुदर्शन की क्रियाएं नागरिकगण सम्पन्न कर रहे हैं तो उधर निर्माण कार्य भी चल रहा है। सारी आकोली नगरी सज रही है कहीं पताकाएं बंध रही हैं तो कहीं तोरण द्वार बन रहे हैं। कोई जालोर सामान लेने जारहा है तो कुछ बागरा की तैय्यारी पर हैं।....... फिर परठे की ओर [illegible] चल रहा है। भोजन किया; और फिर बो[illegible]!

उधर क्रिया मण्डप में शाह मगराजजी पोपटलालजी बंशीलालजी जोणेशा की ओर से श्री समकित अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई जारही थी सभी भक्ति मग्न थे। आकोली वासियों की शानदार भक्ति का रस टपक रहा है। तो उधर स्वयम् सेवक लोग दोड़ धूप मग्न हैं! चमचमाती सूर्य की प्रखर किरने मारवाड़ प्रांगण को तपारही हैं सड़के धमक रही हैं गर्म लू चल रही है किंतु जानदार कार्यकर्त्ता और पंच महोत्सव की शालीनता को कायम रखने के लियें तनतोड़ परीश्रम कर रहे हैं। बाहर के लोग आरहे; परिषद् शाखाओं के स्वयम् सेवक भी ग्राम ग्राम से पहुँच रहे हैं। मन्दसौर निम्बाहेड़ा और जावरा के स्वयम्-सेवक आज और कल में आचुके हैं! आसपास से जनता का आना बराबर चालू है। ग्राम ग्राम में आकोली के जिन्दादिल लोगों की तारीफ हो रही है और लोग आकोली·······आकोली जबान पर रट रहे हैं!·······क्यों न रटेंगे······ लाखों रुपयों का व्यय का प्रतिष्ठोत्सव में जान डालने की जीजान मेहनत हो रही है। बोलियां समाप्त हुई और वरघोड़े का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ·······!

आज वरघोड़ा और भी शानदार ढंग से निकल रहा था अश्वरोही थे, पालखियें थीं, रथ थे, बैण्ड, बाजे, गाजे, ढ़ोल डंके सभी भगवान आदीनाथ के यशोगीत गाते श्रद्धान्वित हो रहे थे। और भी थे······· मोटर कारें थीं, हाथी थे और नर नारियों का विशाल समुदाय था। व्हिसलें बराबर बज रही थीं छड़ियें बराबर चारों दिशाओं का चक्कर काट व्यवस्था जमा रही थीं। आज केप्टिन शीप का चार्ज श्री शांतिलालजी के कंधों पर था। व्यवस्थित वरघोड़ा (चल समारोह) बढ़ रहा था नरनारियों का सहयोग प्रशंसनीय था सभी कार्य अच्छा होरहा था।

आज शा० नथमलजी, कानमलजी, मोहनलालजी, बंशीलालजी बेटा पोता धनराजजी गोत्र निबजीया परमार की ओर से [illegible]ना कराई गई तथा श्री सिद्ध चक्र, अष्ट [illegible]पना की गई।

पुनः वरघोड़े के बाद वही शाम आई जब शाम के भोजन के लियें परठे की ओर जाने की आदत स्वधर्मी बन्धु डाल रहे थे स्वयम् सेवक गण व्यवस्था के लियें उसी ओर बढ़ गयें। वे सेवा के मंत्र को वे सार्थक कर रहे थे अपने परिश्रम तथा पुरुषार्थ से!

मंद मन्द पवन के झोंके चले और मानों उन हिल्लोरों की सवारी पर ही दिवाकर चढ़कर अस्ताचल की अग्रसर होगया! चतुर्दशी थी और वह भी काली, छुट पुठ सितारे क्षेत्र मण्डल में अपना प्रकाश फैला रहे थे।

सुनसान नगरी थी; चारों दिशाएं सुनसान थीं किंतु उत्सव मण्डप से भगवान की भक्ति गीत चारों और प्रसारित हो रहा था। संगीत की स्वर लहरियां नागरिक गणों के कर्णों का स्वागत कर रहीं थीं तथा वायु वेग उन्हें कभी बागरा की ओर तो कभी सियाणा की ओर घोर अंधकार में भेज रहे थे। वैशाख वीदी ३०

निशां ने विदा ली और बाल अरूण अपनी स्वर्णिम रश्मियों के साथ अमावस्या के प्रातः को जगमगाने आ पहुंचा; अलसाई आंखों को करबद्ध प्रणाम कर अंगड़ाई ली तथा प्रकृति ने प्रतिष्ठोत्सव कार्यक्रम को अन्त तक सफल बनाये रखने का सन्देश दिया। वीर केशरिया गगन चूम उठा तथा स्वयम् सेवकों का एक दल वन्दे वीरम्! के नारों के साथ श्री अमीचन्दजी के नेतृत्व में आकोली की गलियों में बढ़ गया! प्रभात फेरी में सभी स्वयम् सेवकों का एक गणवेश निराली छटा के दर्शन करवा रहा था तो उधर आकोली के घरों में हलचल प्रारम्भ हो गई! धीरे धीरे यह सरगर्मी सड़कों पर आई तथा नागरिक गण दैनिक क्रियाओं से निवृत्त हो जिन दर्शन, जिन पूजन तथा गुरू दर्शन हेतु देवस्थानों तथा धर्मशाला की ओर बढ़ गयें।

निर्माण कार्य धीरे धीरे समाप्त होता जा रहा है और आकोली नगरी की शोभा निखर पर है, बाहर से आने वाले महानुभावों की संख्या में वृद्धि होती रही मालवे के स्वयम् सेवक गण भी आरहे हैं; आहोर का

श्री वृहद् शांतिस्नात्र पूजन [आकोली प्रतिष्ठोत्सव]

चित्र में ऊपर पूजन पढ़ाई जारही है। मुनि श्री जयन्तविजयजी क्रिया करवा रहे हैं पास ही पूजन की सामग्री रखी हुई है। नीचे इस अवसर पर उपस्थित [illegible]समुदाय।

पार्श्वनाथ जैन युवक मण्डल भी व्यवस्था के लिये आ चुका है ! स्थानीय स्वयम सेवकों में भी कम उत्साह नहीं था अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के चतुर्थ अधिवेशन के मण्डप की आरम्भिक तैय्यारियां भी प्रारम्भ हो रही हैं। चित्रकार की तूलिका भी कला प्रदर्शन में पीछे नहीं रह सकती थी तो दर्जी, सुथार आदि भी कर्त्तव्य पालन हेतु मोर्चे पर डटे हैं। कुछ भाग दौड़ और व्यवस्था में सहयोग देकर सभी लोग परठे की ओर जारहे हैं। भोजन गृहण कर कुछ अलसाये और फिर वही दैनिक बोलियों का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

इधर बोलियां बोली जारही हैं तो उधर उत्सव मण्डप में शा. चीमनलालजी, शांतिलाल जी, उत्तमचंद जी, सुरेशकुमार जी आनन्दराज जी, बेटा पोता प्रेमाजी गोत खीमेसरा फर्म चीमनलाल शांतिलाल एण्ड कम्पनी मैसूर की, तरफ से श्री अष्ट प्रवचन माता पूजा पढ़ाई जा रही है जिसमें भक्ति गीत और संगीत का उल्लेखनीय कार्यक्रम हो रहा है। एक तरफ पूजन चल रही हैं तो दूसरी ओर वरघोड़े की तैय्यारियां ! उधर अंजनशलाका का कार्य भी बराबर सम्पादित तथा सम्पन्न होरहा है। मुनिवर मार्ग दर्शन दे रहे हैं तो स्वयंसेवक गण दौड़ दौड़ कर कार्य करने में तत्पर हैं। बड़े ही व्यवस्थित ढङ्ग से कार्य चल रहा है जिसे देख कर प्रत्येक व्यक्ति का हृदय आकोली वासियों की निष्ठा के प्रति श्रद्धानुभूत हो सकता है।

तो साहब वरघोड़ा प्रारम्भ हुआ; ढ़ोल बाजे ढ़मक ढ़मक.......' और बैण्ड बाजे गाजे के स्वर भी सुनाई दे रहे हैं। सीटियों की आवाजें तथा लाल हरी पताकाओं के संकेत भी जुलुस व्यवस्था को बनाये रखे हैं। उपस्थित और शोभा में दिन प्रति दिन अभिवृद्धि होती जा रही है। प्रथम दिन से भी अधिक व्यवस्थित तथा सज्जित वरघोड़ा आज आकोली की सड़कों से गुजर रहा है। वे ही रथ पालकी हाथी घोड़े, बेण्ड बाजे उसकी शोभा को द्विगुणीत कर रहे हैं तो उधर विशाल जन समुदाय ध्वज पताकाएं भी वरघोड़े की शोभा में हाथ बंटा रही हैं। वरघोड़ा बढ़ा और उसने आकोली नगरी का चक्कर लगाया पंचायत मण्डप में आकर विसर्जित होगया !

अभी अभी रतलाम के स्वयम् सेवक भी आ गये हैं और भी आने के समाचार आरहे हैं। फिर परठे की ओर फिर रात्री को भक्ति के लिये उत्सव मण्डप की ओर भक्ति प्रेमियों के झुण्ड बढ़ गये। फालना मण्डली के नृत्य गीतादि कार्यक्रम दर्शकों के हृदयों को लुभा रहे थे तो उधर शुष्क नदी की ठंडी ठंडी रेत में वायु के मन्द मन्द झोंकों में कुछ अजनवी सोरहे हैं।

कार्यक्रम समाप्त हो रहा है और मेरी डायरी का यह पृष्ठ भी समाप्त हो दिनांक ५-५-६२ के प्रात: तक मुझसे अवकाश प्राप्त कर रहा है।

वैशाख सुदी २
दि ५-५-६२

अमावस्या के घोर अन्धकार ने वसुन्धरा को चूमा और विश्व से विदा ली ! वैशाख सुदी द्वितीया को प्रात: सारे मारवाड़ को जागरण का मंत्र दे रहा है तो उधर ढ़ोल की मधुर मधुर आवाजें और प्रभात फेरी के गगन गूंजित ननाद प्रात: का संदेश दे रहे हैं। नागरिक गण द्वारों पर खड़े आकोली नगर की सुन्दरता को निहार रहे हैं तो पंच गण आज के कार्यक्रमों की रूप रेखा बना रहे हैं। पूछ ताछ कार्यालय से जानकारियां प्रसारित हो रही हैं। सभी के चेहरों पर मुस्कराहट दौड़ रही है और प्रतिष्ठोत्सव के चौथे दिन की तय्यारियों जुट गये हैं। दैनिक क्रियाओं तथा गुरूदर्शन, जिनदर्शन एवम् जिनपूजन सम्पन्न कर नागरिक गणों में भावी व्यवस्था हेतु मंत्रणाऐं जारी हैं कल ही तो जलयात्रा निकलेगी और परसों से परिषद् का अधिवेशन प्रारम्भ होगा।

आज की नोकारसी का लाभ साह जेरूपचन्द जी, सोनमल जी, पीरचन्द जी, सरेमल जी, पुखराज जी, शांतीलाल जी, ताराचन्द सीरे, किशनलाल जी, छोगमल जी, शंकरलाल[illegible]लाल जी, पारसमल

जी, कान्तिलाल जी, प्रकाशमल जी, चम्पालाल जी, रमणलाल जी, सूरजमल जी, मोहनलालजी उत्तमचन्द जी नरेन्द्रकुमार जी, ललितकुमार जी, बेटा पोता डुगंरजी गोत नोणेसा फर्म शा० रामलाल डुगंरजी एण्ड कं० एवम् सोनमल डुगंरजी मु० बाई (महाराष्ट्र) ने लिया। भोजनादि से निवृत्त होकर नागरिक गण पंचायत मण्डप में आरहे हैं जहां ध्वनि प्रसार यंत्र में आज की बोलियों की आवाजें गूजं रही हैं।

उत्सव मण्डप में शा० चन्दूलाल जी, भूरमल जी, सागरमल जी, मिश्रीमल जी, रतनचन्द जी, जुगराज जी, पुखराज जी, बेटा पोता धुडा जी, गोत खीयेसरा फर्म चन्दा जी धुडा जी अलीबाग (महाराष्ट्र) वालो की ओर से बारह भावना पूजन पढ़ाई जारही है तथा बीस स्थानक पट की स्थापना की क्रिया सम्पन्न होरही है। भक्ति संगीत की बहार है कि जनता संगीत मण्डलों के गीतों पर मुग्ध भक्ति रस में विह्वल हो उठी है।

बारह भावना पूजन समाप्त हुई और वरघोड़े का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

वरघोड़ा जितनी शान से आकोली धरती पर अग्रसर हो रहा है वह उल्लेखनीय है। एक और बैण्ड बाजे तथा ढ़ोल धमाके के स्वर उठ रहे हैं तो वरघोड़े के दूसरे छोरे मंगल गीत और मंगलननाद गूंज रहे हैं। गत दिनों कि तरह आज भी हाथी, घोड़े, रथ, पालखी सभी जुलुम की शोभा को द्विगुणित कर रहे हैं। मोटर कारें आदि भी इस हेतु पीछे पीछे चल रहीं हैं। अश्वारोही बढ़ रहे हैं तो नरनारी अबला वृद्ध भी पीछे नहीं थे।

तो साहब वरघोड़े की समाप्ति हो रही हैं पेट की ज्वाला बढ़ती जा रही हैं उसकी तृप्ति के लिये हम फिर बढ़े परठे की ओर !

भोजन किया और ... धरा पर उतरने लगी ! शुल्क नदी को पार ... वायुवेग बढ़ रहे थे। तारे छिटकने लगे और उत्सव मण्डप में संगीत की स्वरलहरियां उठने लगी ! ताल लय के साथ मेल जोल बढ़ा रही है और फालना की मण्डली नृत्यों द्वारा भक्ति रस में भावुकों को श्रद्धान्वित कर रही हैं। हवा के झोंकों ने आखों पर जादू करना प्रारम्भ किया और हम उसी पर सवारी कर दूसरे संसार की यात्रा करने लगे-स्वप्नों मय संसार की !

वैशाख सुदी ३
दि० ६-५-१९६२

रविवार का प्रातः काल शरमाता उदित हुआ और हमने जागृत हो शुभ प्रभात को प्रणाम किया ! आज श्री सिद्धाचल नावाणु प्रकारी पूजा पढ़ाई जायगी और जल यात्रा निकलेगी ! इतने सुन्दर कार्यक्रम आकोली वासियों की सूझबूझ के ही परिणाम हैं। जिन्दा दिल और उदारता ही तो दान पुण्य की सीढ़ी पर ले जाती है। लाखों रुपये खर्च कर जो उत्सव हो रहा था उसका पांचवा दिन आज है। चार दिन निकल चुके थे चार निकलना बाकी हैं। सुखद स्मृतियों के साथ व्यतित हुए और सुखद स्मृतियों के साथ ही व्यतित होंगे इसमें दो मत नहीं। प्रातः काल की भागदौड़ तथा जिन पूजन, जिनदर्शन, गुरूदर्शन की क्रियाओं के पहिले भी प्रभात फेरी का सुन्दर आयोजन रहा ! प्रतिदिन की भांति आज भी नगर परिक्रमा कर स्वयम् सेवकों ने 'वन्देवीरम्' का संदेश घर घर दिया और प्रातः के स्वागत के लिये हर नागरिक को प्रेरित किया !

धीरे धीरे हलचल बढ़ती ही गई और परठे की ओर सब ने प्रस्थान किया। पंगतें लग रही हैं तथा नरनारी शांति और आनन्द के साथ भोजन कर रहे हैं। स्वयम् सेवक गण जुटे हुए रहे तथा इसके बाद........

बोलियां पुनः ध्वनि प्रसारक यंत्र पर लगने लगी ! भावों का उतार चढ़ाव होने लगा तथा उधर श्री सिद्धाचल नवाणु प्रकार पूजन शा० सगराजजी, ओंकारमलजी, खुशालचंदजी, लालचंदजी, भूरमलजी,

पारसमलजी बेटा पोता दोलाजी गोत्र खिमेसरा फर्म खिवेसरा मेटल मार्ट पूना की ओर से पढ़ाई गई तथा जलयात्रा की तय्यारियां प्रारम्भ हो गई।

उसी बान और शान के साथ जल यात्रा निकली, भव्य तय्यारियां जो थीं क्यों न सफलता मिलती। आकोली वासियों की श्रद्धा का रस आज इस कार्यक्रम से टपक रहा था तथा उसे पुण्य ग्रहण कर रहा है। हाथी, घोड़ा, पालकी, मोटरकारें आदि चल रहीं थीं। बैण्ड बाजे बज रहे हैं। नर नारियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति है आज सबसे अधिक सफलता पूर्वक यह चल समारोह निकल रहा है। श्रद्धालु नागरिक भाव विभोर होकर नाच रहे थे और प्रकृति भी निराली छटाओं के साथ उनका स्वागत कर रही थी। सूर्य ने जुलुस को प्रणाम किया तथा अपने तेज समेटते समेटते पश्चिम की ओर प्रस्थान किया। परठे की तरफ नोकारसी का लाभ लेने के लिये बढ़ रहे हैं। पंगतें लग रहीं हैं तथा सभी भोजन कर बाहर निकल रहे हैं।

शाम ने धरा को चूमा तथा रात्रि ने उत्सव मण्डप की भक्ति पूर्ण स्वर लहरियों का अभिनन्दन किया। तृतीया का चन्द्रमा धीरे धीरे बढ़ रहा था तथा प्रकाश दे रहा था।

वही मन्द पवन, शीतल वायुवेग और सुखद वातावरण तथा नींद्रा देवी का अधिकार! हमने चेतन्यता से दिनाङ्क ७-५-६२ तक के लिये अवकाश प्राप्त कर लिया।

आज प्रभात उदय सुखद वातावरण में हुआ! चारों ओर हंसी ओर खुशी का नज्जारा वो था ही जोश और उमंगें पूरे बल साथ थपेड़े खारही है। आकोली की गली गली में जैन धर्म की जयजयकार के नारे तो गूंज रहे हैं किन्तु एक और महान् कार्य की शुरू वात आज होने वाली है; आखिर भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के चतुर्थ अधिवेशन का उद्घाटन आज प्रात: होने जारहा है। समाज को नई जागृति का संदेश मिलेगा और विशेषत: आकोली अत्यन्त हर्षित जिसने मरुधर में परिषद् का अभिनन्दन कर मरुधर की लाखों जनता का नेतृत्व किया। और वह नेतृत्व भी अधिकार पूर्ण इसलिये कि आकोली की सदा से, ही ऐसी आदर्श परम्पराएं रही हैं और सदा आकोली के आदर्श नागरिकों ने शालीनता को कायम रक्खा है!

तो......................

आज प्रात: प्रभात फेरी निकली और स्वयम् सेवकों का दल मार्च पास्ट करता हुआ सड़की की ओर बढ़ गया अपना लाड़ले परिषद् नेताओं के अभिनन्दन हेतु! (परिषद् अधिवेशन की समस्त कार्यवाही को परिषद् खण्ड में दिया जारहा है अतएव लेखक ने यहां विस्तृत वर्णन करना उचित नहीं समझा। पाठकगण कृपया परिषद् खण्ड में पदाधिकारियों के स्वागत की सम्पूर्ण कार्यवाही अन्य कार्यवाही के साथ देखें।—सम्पादक) शोभा यात्रा निकली और परिषद् के पदाधिकारी माननीय सर्व श्री सेठियाजी चौधरीजी, करनावटजी.......को भव्य स्वागत के साथ आकोली प्रवेश कराया गया।

जिन पूजन, जिनदर्शन, तथा गुरूदर्शन तथा शोभा यात्रा की क्रिया प्रक्रियाओं के बाद सारा जन समूह परठे की ओर बढ़ गया, पेट को टैक्स देने! नोकारसी को लाभ देने!!

प्रतिदिन की भांति वे ही बोलियां (चढ़ावे) ध्वनि प्रसारक यंत्र पर गूंज उठीं तो उधर उत्सव मण्डप में शाह लालचन्दजी, दीपचन्दजी, मूलचन्दजी, मोहनलालजी बेटा पोता केराजी गोत खीमेसरा रेवदंडा (महाराष्ट्र) की ओर से गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। संगीत मण्डलियों की गीत और स्वर हजारों लोगों के हृदयों श्रद्धानुभूत कर रहे हैं। गुरू मूर्ति, दण्ड कलश आदि का अभिषेक भी आज होरहा है। उधर वरघोड़े की तय्यारियां प्रतिदिन की भांति चल रही हैं।

वरघोड़े का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ प्रतिदिन की भांति उन्हीं उपलक्षि[illegible] जुलुस जयजय कार

के नारों के साथ आकोली की सड़कों पर बढ़ रहा है तो हाथी, घोड़े, रथ, पालखी जुलुस की शोभा बढ़ा रहे हैं। बैण्ड, बाजे, ढ़ोल, ढ़माके वाले भी अपनी कलाओं का प्रदर्शन कर रहे हैं। नागरिक गणों की उपस्थिती भी पिछले दिनों की उपस्थित से भारी वृद्धि होरहा है।

वरघोड़े का समापन हुआ और परठे की ओर सभी स्वधर्मी बन्धु बढ़ गये। स्वयम् सेवक गण भी अपना कर्त्तव्य पूर्ण करने के लिये डयूटी पर तैनात होगये और जीजान से जुटगये परिषद् के मानव चेत्रीय लगभग ५३ स्वयम् सेवक आचुके हैं, आहोर के ५१ स्वयम् सेवक हैं और आकोली के ४०! परठे में दिनों दिन यात्रियों की भी वृद्धि हो चुकी है तथा भरापूरा मैदान नयनों को दर्शन दे रहा है।

प्रतिदिन की तरह शाम हुई और संध्या धीरे धीरे रात्रि को उंगली पकड़ पीछे पीछे लेकर आरही थी। उत्सव मण्डप में फालना मण्डली के नृत्य तथा संगीतज्ञों की कलाबाजी की धूम रही। गर्मी में भी हजारों नागरिक पसीने और उष्णता की बिना पर्वाह झूमते रहे……झूमते रहे……झूमते रहे!

श्री आदीनाथ जिन प्रतिष्ठोत्सव को आज एक सप्ताह होने आया है, छः दिन निकल चुके हैं और सातवां दिन प्रभात की देहरी पर खड़ा मुस्करा रहा है। परिषद अधिवेशन को भी आज दूसरा दिन है। कल जिन बिम्बों का अधिष्ठापना तथा ध्वज दण्ड कलश का समारोपण होगा। उसकी तय्यारियों में आकोली का बच्चा बच्चा जुटा हुआ है, कल ही फले चुनड़ी की नोकारसी है। आज के कार्यक्रमों की घोषणा बिगुलों ने कर आकोली के नागरिकों को सावचेत कर दिया। सभी प्रसन्नता और हंसी खुशी के साथ अपनी दैनिक क्रियाओं से निवृत्त हो गये तथा परठे आदि में भ्रमण कर उत्सव मण्डप में आ गये।

एक ओर पंच मण्डप में बोलियों (चढ़ावे) का दौर चल रहा था [illegible] ओर प्रभु के सम्मुख उत्सव मण्डप में शाह मगराज जी, नेनमल जी, बाबूलाल जी, शान्तिलाल जी, कान्तिलाल जी बेटा पोता हंसा जी गोत खिवेसरा फर्म श्री महावीर फेन्सी क्लॉथ स्टोर जालोर की ओर से श्री महावीर पंचक-कल्याणक पूजा पढ़ाई जा रही है और तीसरी ओर अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का खुला अधिवेशन श्री सौभागमल जी सेठिया बी० ए० एल० एल० बी० वकील की अध्यक्षता में सम्पन्न हो रहा था जिसमें समाजोन्नति पर विभिन्न वक्ताओं के भाषण हो रहे थे, यह भी क्या मण्डप था जिसमें एक साथ खड़ी बोली, मारवाड़ी बोली और गुजराती बोली के भाषण परिषद् के द्वारा हुई भावनात्मक एक्यता तथा संगठन का परिचय देते थे। और चौथी तरफ जिन बिम्बों पर अठारह अभिषेकों की क्रिया मन्त्रोच्चारण के बीच सम्पन्न हो रही थी। यूं कहिये कि चप्पे चप्पे पर शुभ कार्यक्रम हो रहे थे।

ठहरिये! सुनिये! यह आवाज!! हां! यह आवाज……..

बिलकुल ठीक यह स्वर वर घोड़े के बैण्ड, बाजे और ढ़ोल ढ़माकों का ही है। वर घोड़ा बढ़ा जा रहा था, हजारों जन समुदाय बढ़ा जा रहा था शायद आज पिछले सभी रेकार्ड टूट रहे हैं। वही सारी शोभा –हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी, मोटर कारें आदि सभी व्यवस्थित ढंग से चल रहे हैं और व्यवस्थापकों की व्हिसिल्स बराबर बज रहीं हैं, छड़ियां दशों दिशाओं की यात्रा कर रही थी तथा निराली छटा के साथ वर घोड़ा आकोली की परिक्रमा कर समाप्त हो रहा है। सभी परठे की ओर पुनः अग्रसर हो गये है।

भोजनादि से निवृत्त होकर वही रात्रि का भक्ति कार्यक्रम रहा और हजारों श्रोतागण फालना मण्डली के नृत्यों पर झूम उठे। उधर पंचायत मण्डप में विशान जाजम बीछी (जाजम २४ पट्टी (गांवों) की कही जाती है) तथा इधर अधिवेशन पण्डाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम, थराद बैण्ड के कार्यक्रम,

आकोली प्रतिष्ठोत्सव

—: वरघोड़ा :—

प्रतिष्ठोत्सव पर प्रति दिन बड़े ठाठ बाट तथा शान से वरघोड़े निकलते थे। जिन में हाथी, घोड़े बैण्ड, पालखी रथ आदि रहते थे। चित्र में एक ऐसे ही विराट् वरघोड़े का दृश्य।

—※ रथ यात्रा ※—

रथयात्रा भी बड़े सुन्दर ढंग से निकाली गई जिसकी शाभा निराली ही थी चित्र में रथयात्रा नगर परिक्रमा के लिये बढ रही है।

जलयात्रा, कलश लेकर चलने की तय्यारी

आकोली प्रतिष्ठोत्सव पर एक विशाल जलयात्रा निकाली गई।
चित्र में कलश जल से भर दिये गये हैं तथा लेजाने की तय्यारी होरही है।

श्री पुखराज जी पोरवाल के कौमिक जनता को आकर्षित कर रहे थे। चढ़ावे का कार्यक्रम भी बहुत चल रहा था, लाखों रुपयों के चढ़ावे के बाद ही अर्द्ध रात्री को जाजम उठी ! अर्द्ध रात्रि को भी वही उत्साह था क्योंकि कल प्रतिष्ठोत्सव का खास कार्यक्रम होने वाला जो था...........।

वैशाख सुदी ६
दि० ७-५-६२

हिल्लोर खाता विशाल जन समुदाय---किल्लोल करते बैण्ड-बाजे-बिगुल-ढ़ोल ! आकोली की सड़कें श्रावक बन्धुओ से बिलकुल भरी हुई—पैर रखने की भी जगह नहीं। पंचायत मण्डप में श्री आदिनाथ जिनालय के सामने हजारों जनता श्रद्धान्वित खड़ी है। मन्दिर के शिखर से लेकर नीचे धरती तक चारों तरफ स्वधर्मी बन्धु ही ! मीलों और कोसों दूर से हजारों नागरिक प्रतिष्ठोत्सव में भाग लेने के लिये आये हैं। महिलाएं छज्जों, खिड़किओं तथा गच्छियों पर चढ़ी लालायित नेत्रों से त्रिशिखरी जिनालय की ओर दृष्टि लगाये खड़ी हैं। एक तरफ बैण्ड बज रहे हैं, ढ़ोल बज रहे हैं, बिगुल बज रहे हैं, वाद्ययन्त्र बज रहे हैं तो दूसरी ओर मन्त्रोच्चारण के साथ क्रिया सम्पन्न हो रही है। ध्वनि प्रसारक यन्त्र पर 'ऊं पुण्याहाम्-पुण्याहाम, प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्' के स्वर गूंज रहे हैं और हजारों कंठ उसे दुहरा उच्चरित कर रहे हैं। घड़ियां निकलती जा रही हैं-- ठीक ६ बज कर ४६ मीनीट पर बैण्ड का स्वर एक दम ऊंचा हो गया, चारों दिशाओं में बिगुल बज उठे, फोटोग्राफरों के बटन दब गये, रुपयों की बौछार होने लगी और स्वाहा की ध्वनि कर्ण को बेधती-चीरती दशों दिशाओं में व्याप्त होगई। श्री आदिनाथ प्रभु श्री वासु पूज्य जी तथा श्री सुपार्श्वनाथ जी के बिम्ब ३० हजार जनता के बीच गादी नशीन कर दिये गये, ३ ध्वज दण्ड ३ कलश व दो पाषाण कलश समारोपित कर दिये गये। तीर्थंकर भगवन्तों की जय जयकार के नारे गूंज उठे। ३० हजार कण्ठों ने जय जयकार की और समारोह अन्तिम चरण पर आ गया। सभी परठे की ओर अग्रसर हो गये, फले चुनड़ी की नौकारसी थी। लगभग ३० हजार का मनुष्यों ने भोजन किया। जैन थे जैनेतर थे सभी थे। दोपहर और संध्या तक यह क्रम जारी रहा।

दोपहर को शा० शांतिलाल जी रुगनाथमल जी मदनलालजी सुरेशचंद्रजी बेटा पोता सरदारमल जी लौलयगोत परमार फर्म:--शांतिलाल सरदारमल एण्ड कंपनी करजन (महाराष्ट्र) की ओर से नव पद पूजा पढ़ाई गई जिसमें जम कर श्रद्धाजू भक्ति में लीन होगये।

फिर वही वरघोड़ा शानदार और जानदार ! तथा परठे की ओर सभी का अभियान रात्रि को उत्सव पण्डाल में संगीत का कार्यक्रम खूब जमा। फालना की मण्डली ने अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत किया। महत्वपूर्ण दिवस के कार्यक्रम पूर्ण हो चुके हैं।

वैशाख सुदी ७ दि० १०-१९६२

अंतिम दिन—नौ दिवसीय प्रतिष्ठोत्सव का आज आखरी दिवस था। कल प्रतिष्ठा हो चुकी थी और आज बृहद् शांति स्नान का कार्यक्रम है। आज भी उत्साह में कोई कमी नहीं थी। स्वयं सेवकगण उसी गति से दौड़ दौड़कर कार्य कर रहे थे जिस तरह मैंने उन्हें पहिले दिन देखा था। उसी उमंग से वे आज भी कर्तव्य पथ पर जुटे हुए थे। पंच महानुभाव भी बराबर व्यवस्था संभाले हुए थे। केप्टिन श्री अमीचंद जी बराबर व्यवस्था जमाने में लगे थे। जिन पूजन जिन दर्शन—गुरुवंदन तथा भोजन आदि सभी कार्य क्रिया समाप्त कर भक्ति रस में सभी जम गये उत्सव मण्डप में।

प्रारंभिक क्रियाओं तथा मंत्रोचारण के साथ बृहद् शांतिस्नात्र पूजन का सभारम्भ हुआ। हर एक पूजन की समाप्ति के बाद अभिषेक के समय संगीत-लय छिड़ जाती थी और थराद बेण्ड बिगुल के साथ घोषणाएं करते जो कि बड़ा ही लुभावना दृश्य था। हजारों श्रद्धालु श्रद्धान्वि[illegible] संगीत में लीन

शांति और सुखद रात्रि की समाप्ति के बाद ज्यों ही दि० ११-५-६२ का प्रभात उदित हुआ नौ दिवस का शानदार कार्यक्रम नैत्रों के सम्मुख चल चित्र की नृत्य कर रहा था, हमें उस नये प्रदेश में जहां की भाषा, रीति रीवाज, साज-सज्जा हमारे लिये बिलकुल भिन्न व अलग थे। नौ दिवस व्यतीत करने के बाद ऐसा प्रतीत होरहा था मानों आकोली तो क्या सारा मारवाड़ झूम झूम कर गारहा है:—

म्हारो देश मारवाड़, ना कोई नदिया पहाड़, ना कोई झील न झाड़।

थे तो कुछ स्वर लहरियों में। इस प्रकार बड़े ही समारोह पूर्वक शांति स्नान पूजन समाप्त हुई। शांति कलश का चढ़ावा हुआ और शांतिकलश घर पर लेजाकर रात्रि जागरण किया गया। अंत में आरति और मंगल दीपक का चढ़ावा होकर उत्सव समाप्त हुआ।

सभी परठे की ओर बढ़े और भोजन आदि से निवृत्त हुए। आज के कार्यक्रम की समाप्ति के साथ प्रतिष्ठोत्सव का समापन भी होरहा है। रात्रि को संगीत के स्वर गूंज उठे और ज्योंही संगीत स्वर लहरियों ने बिदाली मानो नौ दिवसीय कार्यक्रम ने भी बिदा ली।

आकोली श्री आदीनाथ जिन प्रतिष्ठोत्सव के

मार्ग दर्शक मुनिराज

संघ प्रमुख सुकवि मुनिराज श्री विद्याविजय जी, महाराज, कुशल प्रवक्ता मुनिराज श्री कल्याणविजय जी महा०, तपस्वी मुनि श्री हेमेन्द्र विजय जी महाराज, प्रसन्नचित्त मुनि श्री सौभाग्य विजय जी महाराज, सरल स्वभावी मुनि श्री शांति विजय जी महाराज, सुन्दर व्याख्या नी मुनि श्री देविन्द्र विजय जी महा०, सेवाभावी मुनि श्री रसिक विजय जी महा०, शीघ्र कवि सुमधुर व्याख्या नी श्री जयन्तविजय जी महा०, वैया वृत्यादि करण तत्पर मुनि श्री जयप्रभा विजय जी महा०, सेवापरायण मुनि श्री पुण्यविजय जी महा०, स्वाध्यायानुरागी मुनि श्री भुवन विजय जी महा०, विद्यार्थी बाल मुनि श्री भानु विजय जी महा०, मुनि श्री लक्ष्मणविजय जी महाराज,

साध्वी मण्डल

साध्वी श्री शांति श्री जी, सा० श्री ललित श्री जी, सा० बुद्धि श्री जी, सा० श्री चरण श्री जी, सा० श्री लावण्य श्री जी, सा० श्री कुसुम श्री जी, सा० श्री कुमुम श्री जी, सा० श्री हंस श्री जी, सा० श्री रत्नप्रभा श्री जी, सा० श्री दमयन्ति श्री जी,

क्रिया विधान

श्राद्धवृतालंकृत श्रीमान् पुखराज भाई सा० आहोर जैन रत्न श्री राजमल जी लोढ़ा शास्त्री मंदसौर श्री हेमचन्द्र जी गुरा सायला

फोटोग्राफी

श्री जगन वी. मेहता (बम्बई)

—: पंचगणों की एक बैठक :—

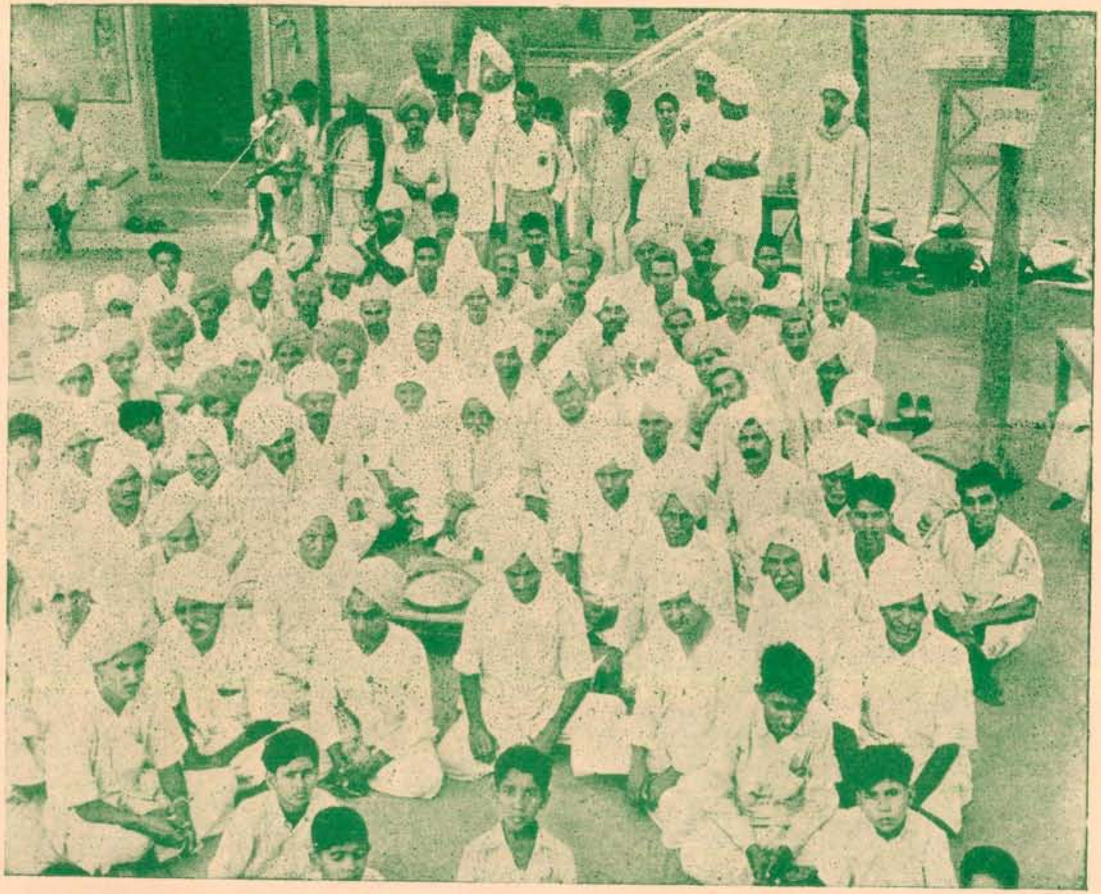

वैशाख सुदी पंचमी को आकोली में सम्पन्न "पट्टी के पंचगणों की बैठक का एक दृश्य.

आकोली नगरे श्री आदि जिनेन्द्र प्रतिष्ठोत्सव

प्रमुख व्यवस्था केन्द्र

क्रिया मण्डप

क्रिया मण्डप कहिये या उत्सव मण्डप; प्रकृति की शुष्क छटाओं के बीच में आंधी, झोंकों तथा हिलोरों का सामना कर मजबूती से अपना कर्त्तव्य निभाने वाला यदि कोई बेजान चीज थी तो वह था क्रियामण्डप ! ३०० फुट लम्बे तथा ५० फुट चौड़े या १५००० वर्ग फुट क्षेत्र फैले इस मण्डप की छटा अद्भुत थी ! मध्य में जिनेन्द्र देवों की प्रतिमाएं, गौतमस्वामी का बिम्ब तथा गुरूदेव श्री राजेन्द्र सूरिजी की प्रतिमा विराजमान थी जिनकी प्रतिष्ठा श्री आदीनाथ जिनालय में वैशाख सुदि ६ बुधवार को होने वाली थी। पृष्ठ भूमि में तथा दांयी ओर कलाकृतियों की शोभा आकर्षण का केन्द्र थीं तो बायीं ओर बड़े बड़े चित्र यात्रियों को श्रद्धान्वित कर रहे थे। कलाकृतियों पर ३॥ हजार रुपया व्यय हुआ था। सारे मण्डप पर कुल ७ हजार ! मण्डप के ऊपर जैन ध्वज लहरा रहे थे जो मीलों दूर से दृष्टिगोचर हो यात्रियों का पथ प्रदर्शन करते थे। जिन प्रतिमाओं के सम्मुख एक विशाल कक्ष था जिसमें प्रात: दर्शन, दोपहर पूजन तथा रात्रि को भक्ति एवम् संगीत के कार्यक्रम सम्पन्न होते थे। उपर छत थी जो भगवान् भास्कर की प्रचण्ड किरणों, पवन के तीव्र वेगों तथा आंधियों के धूल कणों को रोकती थी। छत पर विभिन्न झंडियां, पताकाएं और सुन्दर सुन्दर वस्तुएं टंकी हुई थीं। कलाकृतियों का विस्तृत वर्णन अन्यत्र दिया गया है।

पंचायत मण्डप

पंचायत मण्डप उसका स्वाभाविक ही नामकरण हो गया क्योंकि वहां 'पंचों की पेढ़ी' स्थित थी यही नहीं आदीनाथ प्रभु का भव्य जिनालय भी यहीं स्थित था। वास्तव में मण्डप जिन मन्दिर के बाहर था किन्तु 'पंचों की पेढ़ी' उत्सव का सारा संचालन कर रही थी ! इसी मण्डप में एक प्याऊ थी जो शीत जल प्रदाय के साथ एक आवश्यक आवश्यक्ता की पूर्त्ति करती थी। खर्च हजारों का हुआ और क्षेत्र फल भी लगभग ७००० वर्गफुट होगा ही। हां ! एक विशेषता भी छत बहुत ऊंची थी और औषधालय भी इसकी शोभा को द्विगुणित कर रहा था। पूछताछ दफ्तर या इन्क्वारी ऑफीस कहिये इसी के अन्दर स्थापित था तथा अधिवेशन मण्डप से इसकी दूरी १०० कदम भी न थी ! उत्सव मण्डप से छोटा अवश्य था किंतु १० हजार मनुष्यों को समालेने की क्षमता थी। मण्डप के चारों ओर द्वार बने थे जो साज सज्जा में निराले थे जिन पर जीवन दर्शक मंत्र लिखे थे।

राजेन्द्र नगर

जैन धर्मशाला (उपाश्रय) के पीछे की बाजू पड़ी रेतीली भूमि में बाहर से आये अतिथियों के लिये एक राजेन्द्र मण्डप का निर्माण किया गया। जो वर्गाकार घेरे में लगभग ९०००० वर्ग फुट के क्षेत्र में विस्तृत था। अलग अलग कक्ष अस्थाई तौर पर निर्मित थे। तथा कई तम्बु तने हुए थे। ४ हजार रुपया इस नगर के निर्माण में खर्च हुआ किंतु इसने अपनी सेवा से व्यवस्था को बराबर बनाये रखा। बाहर आये महानुभावों को अत्यधिक सुविधा रही इसके निर्माण से ! बांस तथा बारदान

ने एकता सूत्र में बंध कर हजारों मानवों को शांति देकर मानों मनुष्यों को भी आह्वान् किया कि वे भी परस्पर सहयोग और संगठन से प्रगतिशील रहें तो वे समाज और राष्ट्र तो क्या विश्व तक को शांति दे सकते हैं। यही अनूठा आदर्श मूक भाषा में प्रदान कर रहा था इस नगर का निर्माण प्रकार !

अधिवेशन मण्डप

सज्जा कार—श्री इंद्रमल जी बागरा
श्री इंद्रमल जी सियाणा
श्री सरूपजी सियाणा

दो हजार रूपये की लागत से निर्मित इस मण्डप में जहां अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का अधिवेशन हो रहा था वहीं भविष्य की सुन्दर योजनाओं का निर्माण भी इस मण्डप में होने जा रहा था। किन्तु उसकी एक उल्लेखनीय विशेषता थी और वह कि इसे श्रमदान द्वारा निर्मित किया गया गुरूदेव श्रीमान् राजेन्द्र सूरिश्वर जी महा, तथा परिषद् संस्थापक श्रीमद् यतीन्द्र सूरिश्वरजी महा की जय पताकाओं से प्रारम्भ हुआ यह मण्डप जहां विभिन्न परदों से कई संदेश देरहा था वहीं 'श्रीमद् राजेन्द्र वचानामृत', 'श्री यतीन्द्र वचनामृत' 'बिन्दु में सिन्धु' और बोर्ड जीवन के अनुरूप जागरण का आदेश दे रहे थे। तोरणद्वारों से सज्जित तथा विद्यु त दीपों से जगमगाये हुए इस मण्डल की शोभा निराली तथा अनोखी थी। सामने ही श्री इन्द्रमलजी बागरा वालों द्वारा निर्मित एक चित्र लग रहा था जिसमें हिमालय के उत्ताल हिम शिखरों से उदित गुरूदेव तथा परिषद् संस्थापक स्व० यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० भारत वर्ष को अपने आशीर्वाद देरहे हैं जिनके करकमलों से चार दिव्य किरणें निकल रही हैं जो क्रमशः समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रसार, समाज सुधार तथा अर्थिक विकास (परिषद् के चतुः उद्देश्यों) के प्रकाश देरही हैं। इसी के नीचे ये शब्द अंकित थे—'जीवन जो तुम दे न सको तो लेने का अधिकार नहीं'। मण्डप की साज सज्जा तथा शोभा अनूठी थी।

श्री राजेन्द्र औषधालय

प्रतिष्ठोत्सव के अवसर पर एक अस्थाई औषधालय श्री राजेन्द्र औषधालय का निर्माण भी किया गया था जो कि नगर के बीचों बीच स्थित था। औषधालय में वैद्य श्री धूलसिंहजी तथा उपवैद्य श्री वृद्धिशङ्कर जी शर्मा कठोर मेहनत द्वारा उपचार तथा सेवा करते रहे। कई नागरिकों ने वहां उपचार करवा कर लाभ प्राप्त किया तथा अकोली श्रीसंघ की सुन्दर व्यवस्था की सराहना की।

पूछताछ कार्यालय

एक छोटा सा किन्तु आकर्षक केबिन राजेन्द्र औषधालय के पास ही पूछताछ कार्यालय का था जो एक वृक्ष की ठण्डी ठण्डी छाया में जानकारियां प्रदान करता रहता था। इससे बाहर के तथा स्थानीय लोगों के अत्यधिक सुविधा रहती थी तथा एकदम कार्यक्रमों आदि की जानकारी प्राप्त हो जाया करती थी। इससे व्यवस्था व्यवस्थित रखने में बहुत अधिक सहयोग मिला जिससे कई प्रकार की कठिनाइयाँ अपने गर्भ में ही समाप्त हो गई। यह आकोली श्री संघ की सूज-बूझ का ही कारण थीं।

★

श्री आदीनाथ प्रतिष्ठोत्सव आकोलीनगर

इस अवसर पर बोले गये चढ़ावों के महानुभावों की

स्वर्ण नामावली

१ सा. चंदाजी धुबाजी, आकोली पेली ध्वजा आदीश्वर भगवान की।

२ सा. चन्दाजी सुरतींगजी, आकोली भगवान के जीमणी बाजु की धजा।

३ सा. डुंगरजी पन्नाजी, आकोली भगवान के डाबी बाजु की धजा।

४ सा. बरदीचन्दजी नोकाजी, आकोली पेलो इंडो (स्वर्ण कलश) आदिनाथ भगवान को।

५ सा. आइदानजी वदाजी, आकोली बीजो इंडो (स्वर्ण कलश) जमणी बाजु।

६ सा. परतापजी हिन्दुजी, आकोली तीसरो इंडो (स्वर्ण कलश) डाबी बाजु।

७ सा. मूलचन्द नवाजी, आकोली पेलो स्वर्ण दंड आदिनाथ भगवान को।

८ सा. मूलचन्द गलबाजी, आकोली दूसरो स्वर्ण दंड, जीमणी बाजु।

९ सा. रकबीचन्द नेमाजी, आकोली तीसरो स्वर्ण दंड, डाबी बाजु।

१० सा. आइदानजी नथाजी, आकोली घूम्मट का बड़ा स्वर्ण कलश।

११ सा. सोगालाल नथाजी, आकोली चौकी उपर स्वर्ण कलश।

१२ सा. आइदानजी नवाजी, आकोली मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान को बिराजमान करने का।

१३ सा. परतापचन्द सोनाजी, सांथु भगवानरे तोरण वांदवा का हाथी उपर बैठ कर।

१४ सा. मगराज समनाजी, आकोली भ. महावीर स्वामी को बिराजमान करने का।

१५ सा. धरमचन्द समनाजी, आकोली श्री आदीश्वर भगवान को बिराजमान करने का।

१६ सा. हंजारीमल नेमाजी, श्री वासुपूज्यजी भ. बिराजमान करने का।

१७ सा. सुलतानजी नेमाजी, दूसरे शिखर में वासु पूज्य भगवान को बिराजमान करने का।

१८ सा. सलतानाजी प्रेमाजी, आकोली श्री वासु पूज्यजी के पास में बिराजमान करने का।

१९ सा. अमीचन्द नवाजी, आकोली श्री सुपार्श्व-नाथजी को बिराजमान करने का।

२० सा. सरतानमल प्रेमाजी, आकोली पार्श्वनाथजी को बिराजमान करने का।

२१ सा. भूरमल भगवानजी, आकोली भगवान को बिराजमान करने का।

२२ सा. खूमचन्द फुलाजी, आकोली भगवान को बिराजमान करने का।

२३ सा. बाबुलाल चन्दाजी, आकोली श्री पारसनाथ भगवान बिराजमान करने का।

२४ सा. अचलचन्द लालचन्द, गुड़ा श्री गौतम स्वामी जी को बिराजमान करने का।

२५ सा. मिश्रीमल हांसाजी, आकोली गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म. को बिराजमान करने का।

२६ सा देवीचन्द पनाजी, तखतगढ़ गोमुख यक्ष बिराजमान करने का।

२७ सा. लालचन्द केराजी, आकोली चक्रेश्वरी देवी बिराजमान करने का।

२८ सा. चुनीलाल जसाजी, आकोली भगवान को पुकने का।

२९ सा. देवीचन्द पन्नाजी, तखतगढ़ मोवणखोबा रोपबा का।

३० सा. पूनमचन्द नरसींगजी, बागरा भगवान को तोरण बदावा का।

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

आकोली नगरे श्री आदीनाथ प्रतिष्ठोत्सव नोकारसी का लाभ
लेने वाले महानुभावों की स्वर्णिम सूचि

(१) वैशाख बुदी १३ बुधवार ता० २-५-६२ को शा० तिलोकचंद, किशनलाल, शेषमल, ओकचंद, जयंतिलाल, रमणलाल, चम्पालाल, महेशकुमार, हीरालाल बेटा पोता चंदाजी गोत खिमेसरा फर्म चंदाजी चम्पालाल तथा चंदाजी मिश्रीमल अहमदाबाद।

(२) वैशाख बुदी १४ गुरुवार ता० ३-५-६२ को शा० प्रतापचंद, मिश्रीमल, नेनमल, जवानमल, बेटा पोता हिन्दूजी गोत खिमेसरा फर्म चंदाजी चम्पालाल तथा चंदाजी मिश्रीमल अहमदाबाद।

(३) वैशाख बुदी ३० शुक्रवार ता० ४-५-६२ को शा० वरदीचंद, रतनलाल, हेमराज, माणकचंद, छगनलाल, कांतिलाल, पोपटलाल, मोहनलाल, राजमल, शांतिलाल, जवेरचंद, मीठालाल, मोहनलाल, सागरमल, खुशालचंद, बेटा पोता नौकाजी गोत नोणेशा फर्म-शा० बरदीचंद, नौकाजी एण्ड संस एवं शा० रतनलाल माणकचंद कुं० मु० वाई (महाराष्ट्र)।

(४) वैशाख सुदी २ शनिवार ता० ५-५-६२ को शा० जेरूपचंद, सोनमल, पीरचंद, सरेमल, पुखराज, शांतिलाल, ताराचंद, किशनलाल, छोगमल, शंकरलाल मीठालाल, पारसमल, कांतिलाल, प्रकाशमल, चम्पालाल, रमणलाल, सूरजमल, मोहनलाल, उत्तमचंद, ललितकुमार, नरेन्द्रकुमार बेटा पोता डूंगरजी गोत नोणेसा फर्म-शा० रामलाल डूंगरजी एण्ड कं० एवं सोनमल डूंगरजी मु० वाई (महाराष्ट्र)।

(५) वैशाख सुदी ३ रविवार ता० ६-५-६२ को शा० बाबुलाल, धरमचन्द, छोगालाल, शांतिलाल, मांगीलाल, हिम्मतमल, महेशकुमार, बेटा पोता चंदाजी गोत नोणेशा फर्म-चंदाजी बाबूलाल तूनी (आंध्रप्रदेश)

(६) वैशाख सुदी ४ सोमवार ता० ७-५-६२ को आईदानमल, दोलचन्द, तिलोकचन्द, वेलचन्द, छगनलाल, जीवराज, माणकलाल, मोहनलाल, पोपटलाल, बेटा पोता वदाजी गोत नोणेशा फर्म-शा० आईदानमल वदाजी, शा० वेलचन्द वदाजी भवानीपेठ पूना।

(७) वैशाख सुदी ५ मंगलवार ता० ८-५-६२ को शा० आईदानमल, धरमचन्द, शेषमल, बाबूलाल बेटा पोता नथाजी गोमरामसीणा फर्म-शा० नथाजी शेषमल एवं शा० चमनाजी धरमचन्द मु० मुद्दे बिहाल (मैसूर)।

(८) वैशाख सुदी ६ बुधवार ता० ९-५-६२ को भंडारी शा० मुकचन्द, हंसराज, अभयचंद, नवलमल, मिश्रीमल, लालचन्द, चुन्नीलाल, मुनीलाल, लखमीचन्द, मंछालाल, चम्पालाल, बेटा पोता जीवाजी आकोली (मारवाड़) फर्म-शा० हंसराज अभयचन्द, पद्मस्टोर, जगवल्लभ स्टोर मद्रास की ओर से फलेचुनड़ी की नोकारसी।

(९) वैशाख सुदी ७ गुरुवार ता० १०-५-६२ को शा० हजारीमल, वनेचन्द, वरदीचन्द, भंवरलाल, सागरमल, बेटा पोता रूपचन्दजी गोत खिमेसरा फर्म शा० हजारीमल वनेचन्द तथा शा० भंवरलाल सागरमल मु० पंचगिनी (महाराष्ट्र) की ओर से सुबह स्वामीवात्सल्य और शा० किशनलाल, वीरचंद, वगतावरमल, मीठालाल, हरखचन्द, नैनमल, रमेशकुमार बेटा पोता मोतीजी गोत खिमेसरा की ओर से शामको स्वामीवात्सल्य किया गया।

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

[मालव क्षेत्रीय दल]

परिषद् के श्रमशील

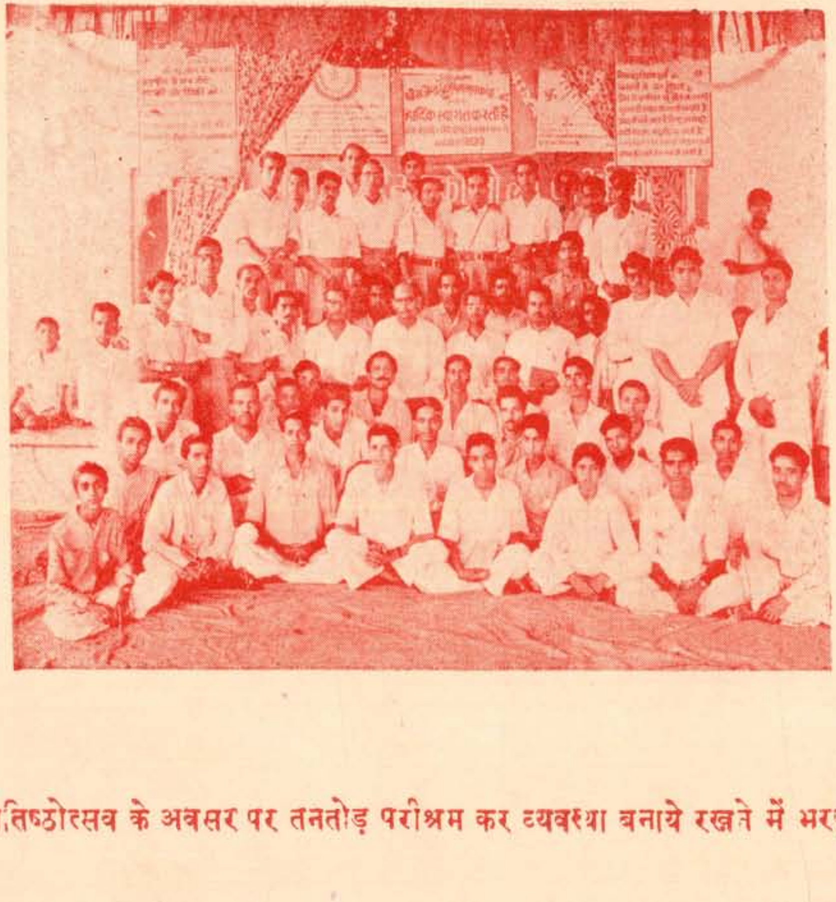

जिनने आकोली प्रतिष्ठोत्सव के अवसर पर तनतोड़ परीश्रम कर व्यवस्था बनाये रखने में भरपूर सहयोग दिया।

आकोली नगरे
श्री आदीनाथ जिन प्रतिष्ठोत्सव
के लिये प्रमुख कर्मिष्ठ

संचालक—श्री आदीनाथ राजेन्द्र जैन पेढ़ी
व्यवस्था तथा निरीक्षण—पंच

श्री त्रिलोक चन्द जी चंदा जी
श्री बाबूलाल जी चन्दा जी
श्री धर्मचन्द जी चन्दा जी
श्री कस्तूर चन्द जी

स्वयम सेवक दल—अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् (मालव क्षेत्रीय दल)
अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा आकोली
श्री पार्श्वनाथ जैन युवक मण्डल आहोर

संगीत—श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन संगीत मण्डल फालना, श्री लाल जी, संगीतज्ञ पाली (राज०)
बैण्ड—श्री महावीर बैंड खाचरौद
श्री यतीन्द्र जैन बैण्ड मण्डल थराद
मण्डप रचना—श्री तारा चन्द जी जैन शिवगंज
भोजनालय—श्री करीम भाई शिवगंज
द्वार सज्जा—श्री स्वरूप सियाणा

इनके अलावा प्रदर्शन—सज्जा की झांकियों, विद्युत दीपों की व्यवस्था तथा अन्य कार्यों में आकोली के स्वयं सेवकों ने सहयोग दिया

स्वयम्सेवक:—
कप्तान आकोली दल—श्री अमीचंद जी नवाजी
उप कप्तान आकोली दल—श्री शांति लाल जी

मालव क्षेत्रीय दल

कप्तान—श्री राजमल जी जैन राजगढ़
प्रमुख (निम्बाहेड़ा)—श्री सज्जनसिंह जी लोढ़ा
(नीमच) —श्री धन्नालाल जी जैन
(मंदसौर) —श्री नरेन्द्र कुमार जी चपरोत
(जावरा) —श्री कांतिलाल जी करनावट
(रतलाम) —श्री फकीरचन्द जी
(राजगढ़) —श्री राजमल जी जैन
(अलीराजपुर)—श्री कुन्दनलाल के० काकड़ी वाला

संरक्षण विभाग

कप्तान—श्री खोनराज जी जसाजी तथा उनके साथी

राजेन्द्र औषधालय

वैद्यराज—श्री धूलसिंह जी आकोली
श्री वृद्धिशंकर जी आकोली

आकोली परिषद्

अध्यक्ष—श्री नवलचन्द जी
मंत्री—श्री बाबूजी जसाजी

श्री आदीनाथ प्रतिष्ठोत्सव आकोली (राजस्थान)

कार्यरत, श्रमशील, निष्ठावान्

प्रमुख समितियां

आकोली में सम्पन्न श्री आदीनाथ जिन प्रतिष्ठोत्सव समारोह की सफलता तथा संचालन के लिये १७ प्रमुख समितियों का निर्माण किया गया। समितियों के सदस्यों ने दिन रात लगभग एक पक्ष से भी अधिक दिनों तक तन तोड़ परिश्रम कर व्यवस्था को सबल रूप दिया। प्रत्येक समिति का प्रत्येक कार्यकर्त्ता जीतोड़ श्रम के साथ अपनी निष्ठा का परिचय देरहा था वहीं उनके संयोजक तथा प्रमुख घोर परीश्रम द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दे रहे थे। चारों कोनों से इनके श्रम की विजय दुन्दुभि बज उठीं, जब दर्शक तथा यात्री सुन्दर व्यवस्था और सफलता को देख कर झूम उठे:—

प्रमुख समितियां

(१) भोजन व्यवस्थापक समिति
(२) जल व्यवस्थापक समिति
(३) आवास व्यवस्थापक समिति
(४) प्रकाश व्यवस्थापक समिति
(५) स्वास्थ्य संरक्षण समिति
(६) अधिवेशन व्यवस्थापक समिति
(७) स्वयम् सेवक व्यवस्थापक समिति
(८) मण्डप व्यवस्थापक समिति
(९) मंगलगृह व्यवस्थापक समिति
(१०) श्रम व्यवस्थापक समिति
(११) वाहन व्यवस्थापक समिति
(१२) काष्ठ व्यवस्थापक समिति
(१३) बिस्तर व्यवस्थापक समिति
(१४) बर्तन व्यवस्थापक समिति
(१५) मन्दिर पूजन व्यवस्थापक समिति
(१६) सुरक्षा व्यवस्थापक समिति
(१७) पूछताछ विभाग

★

........ये श्रमवीर-ये कर्तव्यशील

आकोली शाखा परिषद् का स्वयम्सेवक दल

जिसकी दिनरात कड़ी मेहनत ने
आकोली प्रतिष्ठोत्सव की
सफलता को द्विगुणीत
कर दिया।

श्री पार्श्वनाथ जैन युवक मण्डल आहोर

सदा सरल और सहनशीलता
पूर्वक सेवा कार्य में दत्तचित्त
स्वयमसेवक गण

श्री आदीनाथ प्रतिष्ठोत्सव, आकोली

प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर पधारने हेतु सैंकड़ों आमंत्रण पत्रिकाएं तीन रंग में मुद्रित करवा कर देश के कोने-कोने में वितरित की गई पत्रिका का हुबहु नमूना निम्नानुसार है:—

ॐनमो केवलनाण: दंसण पवयणधरस्स । ॐनमो सुअपारगामीणं । अनन्तलब्धिनिधानाय श्रीगौतमस्वामिने नम:

सुविहित जिनेन्द्रशासन परंपरावतंसक–कलिकाल सर्वज्ञकल्प–सूरिपुरंदर श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छाधीश्वर–विश्वपूज्य–प्रात:स्मरणीय–प्रभुश्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वर पट्टप्रभावक चर्चा चक्रवर्ती श्रीमद्विजय धनचन्द्र-सूरीश्वर, साहित्य विशारद श्रीमद्विजय भूपेन्द्रसूरीश्वर, व्याख्यानवाचस्पति,-समर्थशासनप्रभावक श्रीमद्विजय–यतीन्द्रसूरीश्वर चरणारविंदेभ्यो नम: ।

युगादीश श्री आदिजिनेन्द्र प्रतिष्ठोत्सवे

श्री संघ आमंत्रण पत्रिका

आकोली नगर (राज.)

आत्मरिपुगण को हटा अरिहंत पद को पा लिया,
वा ज्योति केवलज्ञान की ज्योति सभर जग कर दिया ।
सन्निहित सत्साधना युत सुखद राह बतला दिया,
वन्दन करें आदीश जिनवर तम जगत का हर लिया ॥

चित्र	चित्र	चित्र
परम पूज्य आचार्य देव	आकोली मण्डन	परम पूज्य आचार्य देव
श्री	श्री	श्री
राजेन्द्रसूरीश्वरजी	**आदिनाथ भगवान**	**यतीन्द्रसूरीश्वरजी**
महाराज साहब		महाराज साहब

अधिक तो हम क्या लिखें, यह आप का ही काम है । उत्सव प्रतिष्ठा का यहां प्रभु आदिजिन का धाम है। पुण्य उदय से योग आया, बन्धुवर पधारिये, भेजते हैं पत्रिका तुम स्नेहयुत स्वीकारिये ॥

स्वस्तिश्री आदिजिनेन्द्र प्रणिपत्य तत्र श्री जिनमन्दिर, पाठशाला धर्मशालोपाश्रय, वाप्यादि एकविंशतिवकार विभूषिते ———————— नगरे, श्रीजिनेन्द्रोवदिष्ट सद्धर्माराधक, श्रीपंचपरमेष्ठिमहामंत्राराधक, देवगुरुभक्तिकारक, श्राद्धद्वादशव्रतसम्पन्न, मार्गानुसारीपैंतीसगुण समलङ्कृत दीन-हीन स्वधर्मीजन भक्तिवत्सल, संघ समाजसमुत्थान तत्पर सकल श्रीसंघ स्वधर्मी बंधुओं ———————— योग्य लिखि आकोली नगर से सकलश्रीसंघ स्वधर्मीबन्धुओं का सादर सस्नेह सविनय जयजिनेन्द्र पूर्वक प्रणाम वंचनाजी। अपरंच हमारे यहां पर परम कृपालु पूज्य गुरुदेवश्री के पावन पुण्य प्रताप से आनन्द मंगल वर्त रहे हैं आप श्रीसंघ के भी आनन्दमंगल के समाचारों की अहर्निश शुभाकांक्षा रखते हैं।

विशेष हमारे यहां पर प्रथम तीर्थपति श्री आदिनाथ भगवान का प्राचीन जिनालय विद्यमान था। मन्दिर की जीर्णावस्था को देख कर स्व० गुरुदेव श्री श्री १००८ श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने उपदेश देते हुए मार्ग दर्शन दिया। गुरुदेव श्री ने फर्माया कि "जिनेन्द्र भगवान के दर्शन, पूजन से प्राणिमात्र के हृदय में साक्षात जिनदेव के दर्शन की अनुभूति होती है, भावों में निर्मलता एवं व्यवहार में विशुद्धिकरण होता है। इस बात का समर्थन करते हुए शास्त्रकारों ने उत्ताल स्वर लहरियों से उद्घोष किया है कि "जिणपडिमा जिण सारिखी" जिनेश्वर की प्रतिमा प्रत्यक्ष जिनेश्वर के समान है। इसीलिये जिन मन्दिर की समस्त आशातनाओं को टाल करके दर्शन पूजन करने से निःसंदेह आत्म प्रगति होती है। सात क्षेत्रों में जिन मन्दिर एवं जिन प्रतिमा भी हैं, उसकी रक्षा, सुव्यवस्था एवं उन्नति के लिये श्री संघ को प्रतिक्षण जागृत रहना चाहिये।" गुरुदेव के उपदेश से प्रभावित होकर स्थानीय श्री संघ ने मन्दिर का जिर्णोद्धार कार्य प्रारंभ किया, जो अब पूर्ण हो गया है। श्री संघ की प्रबल उत्कंठा थी कि प्रतिष्ठा का कार्य शीघ्र सम्पन्न करवाया जाय, किन्तु योग का अभाव था। परम कृपालु पूज्य गुरुदेव श्री का २०१७, पोष शुक्ला ३, २१ दिसम्बर ६० को श्री मोहनखेडा तीर्थ पर स्वर्गवास हो गया। पश्चात् श्री संघ ने मालवक्षेत्रस्थ संयमवयः स्थवीर मुनिराज श्री लक्ष्मीविजयी म. मुनिराज श्री विद्या विजयजी, म. आदि मुनिमण्डल को बार बार प्रार्थना-पत्र प्रेषित किये और गत गुरुसप्तमी को श्री मोहनखेड़ातीर्थ में उपस्थित मुनिमण्डल से प्रत्यक्ष में जाकर संघ के प्रतिविधियों ने प्रतिष्ठोत्सव कार्य सम्पन्न कराने के लिये विनती की।

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मुनिमण्डल ने श्री संघ की अत्याग्रहपूर्ण प्रार्थना को स्वीकृत किया और प्रतिष्ठोत्सव का शुभ मुहूर्त २०१६ वैशाख सुदी ६ बुधवार ६ मई १६६२ का निश्चत किया गया। संघस्थवीर, वयोवृद्ध मुनिराज श्री श्री १००८ श्री लक्ष्मीविजयजी महाराज के निर्देशानुसार इस शुभावसर पर संघप्रमुखसुकविवर मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज ने कुशल प्रवक्ता मुनिराज श्री कल्याणविजयी म. तपस्वी मुनि श्री हेमेन्द्रविजयजी म. प्रसन्नचित्त मुनि श्री सौभाग्यविजयजी म. सरल स्वभावी मुनि श्री शान्तिविजयजी म., सुन्दर व्याख्याता मुनि श्री देवेन्द्रविजयजी म. 'साहित्य प्रेमी", सेवा भावी मुनि श्री रसिकविजयी म., शीघ्रकवि, मधुर व्याख्यानी मुनि श्री जयन्तविजयी म, वैयावृत्यादिकरण तत्पर मुनि श्री जयप्रभविजयजी म., सेवापरायण मुनि श्री पुण्यविजयजी म., स्वाध्यायानुरागी मुनि श्री भुवनविजयी म., विद्यार्थीबाल मुनि श्री भुवनविजयजी म, मुनि श्री लक्ष्मणविजयजी म. आदि ठा. १२ सह पधारने की अनुमति प्रदान की। तदनुसार मालव प्रान्त से उग्रविहार कर यहां पर पधारे और आप के तत्त्वावधान में प्रतिष्ठोत्सव कार्य सम्पन्न कराने का निश्चय किया गया है।

❀ प्रतिष्ठोत्सव का कार्यक्रम इस प्रकार है ❀

१ वैशाख बदि १३ बुधवार ता० २-५-६२ को शा. तिलोकचन्द, किशनलाल, शेषमल, ओकचंद जयन्तिलाल, रमणलाल, चम्पालाल, महेशकुमार, हीरालाल, बेटा पोता चंदाजी गोत खीमसेरा फर्म चन्दाजी चम्पालाल व चन्दाजी मिश्रीमल, अहमदाबाद की ओर से नोकारसी की जायगी और शा. मूलचन्द, हजारीमल, पारसमल, नथमल, सागरमल बेटा पोता भुदाजी गोत नोणेशा फर्म—चिकोडी (मैसुर) की ओर से पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा पढ़ाई जायगी।

२ वैशाख बदि १४ गुरुवार ता० ३-५-६२ को शा. प्रतापचन्द, मिश्रीमल, नेनमल, जवानमल बेटा पोता हिन्दुजी गोत खीमसेरा फर्म—चन्दाजी, चम्पालाल व चन्दाजी मिश्रीमल अहमदाबाद की ओर से नोकारसी की जायगी। शा. मगराज पोपटलाल, बंशीलाल बेटा पोता भुदाजी गोत नोणेशा फर्म-चीकोडी की ओर से श्री समकित अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई जायगी एवं शा. नथमल, कानमल, मोहनलाल, बंशीलाल बेटा पोता धनराजजी गोत्र निबजीया परमार आकोलीवालों की ओर से कुंभ स्थापना कराई जायगी साथ ही श्री सिद्धचक्र, अष्टमंगल नवग्रह, दसदिग्पालादि की भी स्थापना की जायगी।

३ वैशाख बदि ०)) शुक्रवार ता० ४-५-६२ को शा. वरदीचन्द, रतनलाल, हेमराज, माणकचन्द छगनलाल, कान्तिलाल, पोपटलाल, मोहनलाल, राजमल, शान्तिलाल, जवेरचंद. मीठालाल, मोहनलाल सागरमल, खुशालचन्द, बेटा पोता नौकाजी गौत नोणेशा फर्म—शा. वरदीचन्द नौकाजी एण्ड सन्स एवं शा. रतनलाल माणकचन्द कुं. मु. वाई (महाराष्ट्र) की ओर से नोकारसी की जायगी और शा. चीमनलाल शान्तिलाल, उत्तमचन्द, सुरेशकुमार, आनन्दराज बेटा पोता प्रेमाजी गोत खीमेसरा फर्म—चीमनलाल शान्तिलाल एण्ड कुं. मैसुर के तरफ से श्री अष्टप्रवचनमाता पूजा पढ़ाई जायगी और श्री नंदावर्त स्थापना कराई जायगी।

४ वैशाख सुदि २ शनिवार ता० ५-५-६२ को शा. जेरूपचन्द, सोनमल, पीरचंद, सरेमल, पुखराज, शान्तिलाल, ताराचन्द, किशनलाल, छोगमल, शंकरलाल, मीठालाल, पारसमल, कान्तिलाल, प्रकाशमल, चम्पालाल, रमणलाल, सूरजमल, मोहनलाल, उत्तमचन्द, ललितकुमार, नरेन्द्रकुमार बेटा पोता डुंगरजी गोत नोणेसा, फर्म—शा. रामलाल डुंगरजी एण्ड कं. एवं सोनमल डुंगरजी मु, वाई (महाराष्ट्र) की ओर से नोकारसी की जायगी तथा शा. चन्दुलाल, भूरमल, सागरमल, मिश्रीमल, रतनचन्द, जुगराज, पुखराज बेटा पोता धुडाजी गोत खीमेसरा फर्म—चन्दाजी, धुडाजी, अलीबाग (महाराष्ट्र) की ओर से बारह भावना पूजन पढ़ाई जायगी और श्री वीसंस्थानक पट स्थापना कराइ जायगी।

५ वैशाख सुदि ३ रविवार ता० ६-५-६२ को शा. बाबुलाल, धरमचन्द, छोगालाल, शान्तिलाल मांगीलाल, हिम्मतमल, महेशकुमार बेटा पोता चन्दाजी गोत नोणेशा फर्म—चन्दाजी, बाबुलाल तूनी (आंध्र प्रदेश) की ओर से नोकारसी की जायगी और शा. मगराज, ओंकारमल, खुशालचन्द, लालचन्द भूरमल, पारसमल, बेटा पोता दोलाजी गोत्र खिमेसरा फर्म—खिमेसरा मेटल मार्ट, पूना की ओर से श्री सिद्धाचल नवाणुप्रकारी पूजा पढ़ाई जायगी एवं जलयात्रा निकाली जायगी।

६ वैशाख सुदि ४ सोमवार ता० ७-५-६२ को शा. आईदानमल, दोलचन्द, तिलोकचन्द, वेलचन्द, छगनलाल, जीवराज, माणकलाल, मोहनलाल, पोपटलाल बेटा पोता वदाजी गोत नोणेशा फर्म-शा, आईदानमल वदाजी शा. वेलचन्द वदाजी भवानी पेंठ पूना की ओर से नोकारसी की जायगी तथा शा.

लालचन्द, दीपचन्द, मूलचन्द, मोहनलाल बेटा पोता केराजी गोत खीमेसरा फर्म-रेवदंडा (महाराष्ट्र) के तरह से गुरुदेवश्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई जायगी एवं गुरुमूर्ति व दंड कलशादि अभिषेक किये जायेंगे। साथ ही अखिल भारतीय श्रीराजेन्द्र जैननवयुवक परिषद के वार्षिक अधिवेशन उद्घाटन व बैठक होगी।

७ वैशाख सुदि ५ मंगलवार ता० ८-५-६२ को शा. आईदानमल, धरमचन्द, शेषमल, बाबुलाल, बेटापोता नथाजी गोम रामसीणा फर्म शा. नथाजी शेषमल एवं शा. चमनाजी धरमचन्द मु. मुद्दे बिहाल (मैसुर) की ओर से नोकारसी की जायगी तथा शा. मगराज नेनमल, बाबुलाल, शान्तिलाल, कांतिलाल, बेटा पोता हांसाजी गोत खिवेसरा फर्म श्री महावीर फेन्सी क्लोथ स्टोर, जालोर (राज.) की ओर से श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा पढाई जायगी और श्री जिनबिम्बों पर अठारह अभिषेक किये जायेंगे एव अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का खुल्ला अधिवेशन होगा।

८ वैशाख सुदि ६ बुधवार ता० ९-५-६२ को शुभ लग्न नवांश में मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान व दूसरे श्री जिनबिम्बों को गादीनशीन (प्रतिष्ठित) किया जायगा, ध्वजा दंड कलश समारोपित किये जायँगे और भंडारी शा. मुकचन्द, हंसराज, अभयचन्द, नवलमल, मिश्रीमल, लालचन्द, चुनीलाल, मुनिलाल, लखमीचन्द, मंछालाल, चंपालाल बेटा पोता जीवाजी आकोली (मारवाड़) फर्म-शा. हंसराज अभयचन्द, पद्म स्टोर, जगवल्लभ स्टोर मद्रास की ओर से फलेचुनडी की नोकारसी की जायगी और शा. शांतिलाल, रुगनाथमल, मदनलाल, सुरेशचन्द्र बेटा पोता सरदारमलजी लौलच गोता परमार फर्म-शान्तिलाल सरदारमल एण्ड कुं; करजत (महाराष्ट्र) की ओर से श्री नवपद पूजन पढाई जायगी।

९ वैशाख सुदि ७ गुरुवार ता० १०-५-६२ को श्रीसंघ की ओर से श्री बृहद् शान्तिस्नात्र पूजन पढाई जायगी और शा. हजारीमल, वनेचन्द, वरदीचन्द, भँवरलाल, सागरमल, बेटा पोता रूपचन्दजी गोत खिवेसरा फर्म-शा. हजारीमल वनेचन्द तथा शा. भँवरलाल सागरमल मु. पंचगिनी (महाराष्ट्र) की ओर से सुबह स्वामिवात्सल्य किया जायगा और शा. किसनलाल, वीरचन्द, वगतावरमल, मीठालाल, हरखचन्द, नैनमल, रमेशकुमार बेटा पोता मोतीजी गोत खिवेसरा की ओर से शाम को स्वामिवात्सल्य किया जायगा।

उत्सव मण्डप में चलचित्र

१ श्री तीर्थाधिराज शत्रुंजयतीर्थ पहाड रचना—शा. रूपचन्द दीपाजी नोणेशा के तरफ से।
२ इलाचीकुमार चित्ररचना—शा. मंगलचन्द आबाजी के तरफ से।
३ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चित्ररचना—शा. शेषमल भुदाजी के तरफ से।
४ कमठ योगी चित्ररचना—शा. जेरूपचन्द नरसाजी खिवेसरा के तरफ से।
५ त्रिशला माता के चौदह स्वप्न चित्ररचना-शा. कस्तुरचंद भगवानजी की तरफ से।
६ श्री आदिनाथ भगवान के पारणेकी चित्र रचना—शा. निहालचन्द, प्रेमाजी गोत्र खिवेसरा के तरफ से।
७ गुरुदेव श्री की चित्र रचना—शा. किस्तुरचन्द परकाजी खिवेसरा के तरफ से। जालोर स्वर्णगीरी

गृहस्थोचित विधिविधान कराने के लिये आहोर निवासी श्राद्धरत्नालंकृत श्रीमान् पुखराजजी भाईजी सा. मन्दौर निवासी जैनरत्न श्री राजमलजी लोढा शास्त्री एवं सायला निवासी श्री हेमचन्द्रजी गुरां को

आमंत्रित किया गया है। उत्सव की समुचित व्यवस्था के लिये अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद स्वयं सेवक दल एवं पार्श्वनाथ जैन युवक मण्डल आहोर को बुलाया गया है। श्री यतीन्द्र जैन बैंड मण्डल, थराद, एवं श्री महावीर बैंड खाचरौद (म. प्र.) महोत्सव की शोभा को बढ़ायेगा। प्रतिदिन, पूजा प्रभावना, अंगरचना, रोशनी होगी। रात्रि को भक्ति व नृत्य होगा। साथ ही श्री राजेन्द्रसूरि अर्धशताब्दी महोत्सव मोहनखेड़ा एवं श्री अंवति पार्श्वनाथ उज्जैन प्रतिष्ठोत्सव की फिल्म दिखाई जायगी। विविध प्रकारी संगीत कार्यक्रम, हाथी, घोड़े, रथ, पालकी, डंके, निशान बैंड बाजों के साथ प्रतिदिन रथयात्रा निकाली जायगी।

अतएव आप सकल श्री संघ से सानुरोध निवेदन है कि इस पुनित मंगलमय अवसर पर स्वजन मित्रमण्डल सह पधार करके उत्सव की शोभा में अभिवृद्धि करें। आपके पधारने से श्री जिनशासन, श्री संघ एवं गुरुगच्छ की विशेष समुन्नति एवं प्रभावना होगी। इत्यलम्, शुभम्! श्री वीर निर्वाण सं. २४८६, श्री राजेन्द्रसूरि सं. ५६ विक्रम सं. २०१६ वैशाख वदि ५ बुधवार।

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढी
पो॰ आकोली [राज॰]
जि॰ जालोर

ली॰
सकल श्री संघ, आकोली के तरफ से
शा॰ आईदानमल मूलचन्द
तेजराज छगनराज
धरमचन्द बेटा पोता नवाजी
का जयजिनेन्द्र पूर्वक प्रणाम बंचावसीजी।
(फर्म—शा. आईदान नवाजी, वाई (महाराष्ट्र)

सूचनाः—यहां पधारने वाले महानुभावों को मारवाड़ जंकशन, लूनी जंकशन, समदरी जंकशन होते हुए मारवाड़ बागरा स्टेशन पर उतरना चाहिये वहां से आकोली मात्र तीन मील है। वहां से मोटरादि की वाहन व्यवस्था की गई है। साथ ही सिरोही रोड से सिरोही होती हुई आकोली तक मोटरें चलती है। अहमदाबाद होकर आने वाले बन्धु पालनपुर से भीलडीयाजी तीर्थ होकर मारवाड़ बागरा स्टेशन उतरना चाहिये। यह पत्रिका पढ कर मन्दिर या उपाश्रय में चिपका दें।

नोटः—पधारने वाले महानुभावों से नम्र निवेदन है कि बिस्तर साथ लेकर पधारें।

(शेष पृष्ठ ३६ का)

३१ सा. चुनीलाल जसाजी, आकोली भगवान को वधाने का।

३२ सा. हिम्मतमलजी गुलाबचन्द, डुडसी भगवान को लुण उतारने का।

३३ सा. मोनमल साहेबजी, आकोली भगवान के मंदिर का दरवाजा खोलने का और संघ को थापा देने का।

३४ सा. शान्तिलाल लादाजी, तखतगढ़ संघ को गुलाल उड़ाने का।

३५ सा. गेनमल जसाजी, आकोली हाथी पर बैठ कर तोरण बांधने का।

३६ सा. बाबुलाल जसाजी, आकोली मूलनायकजी को पखाल करने का।

३७ सा. लक्ष्मीचन्द ताराजी, आकोली पार्श्वनाथजी को पखाल करने का।

३८ सा. भबूताजी असलाजी, आकोली वासुपूज्यजी को पखाल करने का।

जातीय गौरव-गाथा पर दो शब्द

—लक्ष्मीचन्द्र जैन 'सरोज' एम. ए. साहित्यरत्न

हिन्दी भाषा के एक सजग सुकवि ने कहा है:—

जिसको नहीं निज देश का निज जाति का अभिमान है।
वह नर नहीं, है निरा पशु और मृतक समान है।।

कवि के उपरोक्त कथन को ध्यान में रखते और कुछ अंशों में पहले जातीय साहित्यकार होने के नाते आज मुझे लगा कि मैं अपनी जातीय गौरव गाथा की कुछ माप जोख करूं और पूर्वापर को दृष्टि में रखते हुये दो शब्द इस प्रकार से लिखूं; जिससे मेरी जाति के लोगों में एक नया जीवन, एक नई चेतना, एक नई आशा और एक नई प्रेरणा की किरण का संचार हो सके।

कहा जाता है कि किसी समय लखनऊ में जैनों के एक लाख घर थे, और वे सभी लखपति से भी कहीं अधिक थे; धन से और मन से भी। उनके यहां एक नियम था—'यदि कोई नया गरीब जातीय भाई यहां रहने के लिये आवे तो उसे एक मुद्रा या रुपया देना और एक ईंट भी देना। घर-घर प्रचारित, यह जातीय नियम बड़े महत्व का था। वे लोग रुपया इसलिये देते थे कि वह नया बन्धु पराधीनता का पेशा नौकरी के चक्कर से बच सके और ईंट इसलिये कि वह अपना घर बनवा कर रह सके तथा किराये के मकानों अथवा दूसरों के द्वारा छोड़े गये मकानों में रहने के लिये विवश न हो सके बल्कि जातीय-गौरव लिये 'व्यापारे वसति लक्ष्मी' उक्ति को निस्संकोच होकर चरितार्थ कर सके। यों वे अपने अल्प प्रयत्न से अपने जातीय भाई को अपने ही समान बना लेते थे।*

हां तो लखनऊ के निवासी सभी लखपतिराय थे। वे काम-नाम और दाम के पूर्णतया धनी थे। राजस्थान के नगर जयपुर को जैसे जैन जनों की नगरी कहा जाता है, वैसे ही उत्तर प्रदेश के नगर लखनऊ को भी यह गौरव प्राप्त हुआ था। यहाँ के लोग, जैन जनों की मान्यता के अनुसार जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और चरित्र रूप एकाकार मोक्ष-मार्ग है' उस पर पूर्णतया चलने का दम भले ही नहीं भरते रहे हों पर उल्लिखित किम्वदन्ती के उदाहरण से यह स्पष्टतया ज्ञात होता है कि वे सम्यग्दर्शन के सातवें वात्सल्य अंग के पूर्णतया पालक थे। दूसरे शब्दों में जातीय बन्धुत्व की भावना लिये वे कुछ सम्यग्दृष्टि सम्यग्ज्ञानी अवश्य थे। उनके इस कार्य को जातीय आदर्श मानते हुये बड़ा गौरव होता है।

चूंकि अब जमाना बहुत बदल गया है और असली शास्त्र-युद्ध तथा शस्त्रयुद्ध एवं धर्म-युद्ध से नकली शीत-युद्ध, बल-युद्ध और छल-युद्ध पर आगया है, अतएव आज के आदमी ने भी अपने लिये युग के अनुरूप ढालने का उतना प्रयत्न किया है जितना भी उससे शक्य और सम्भव था और इस दिशा में जैन जाति के लोग तो जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ गये हैं। अब धर्म के साथ प्रदर्शन कर्म के साथ भाषण, न्याय के साथ सम्पत्ति, सेवा के साथ मेवा और काम के भी पहले नाम और दाम आ गया है। चरित्र चलचित्र बन गया तो बल दूसरों को दबाने का साधन बन गया। इस प्रकार आज के जैन लोग सेव बन गये हैं, ऐसे सेवकि जिनके विषय में एक मत से नहीं कहा जा सकता कि वे नमकीन अधिक हैं या चरपरे?

---

*इस प्रकार की किम्बदन्ती मालवा में मांडू के जैन जनों के सम्बन्ध में भी कही जाती है पर प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक का विश्वास मांडू की अपेक्षा लखनऊ की जनश्रुति पर अधिक है। कारण लखनऊ वालों के लिये आजीविका जितनी कष्ट साध्य रही होगी उतनी मांडू वालों के लिए नहीं। और एक दुखी दूसरे दुखी की बात को जितना जल्दी समझ सकता उतनी जल्दी सुखी नहीं। सुखी तो अपने सुख के आगे दूसरों के दुख की उपेक्षा ही किया करता है।

उदाहरण के लिये, मान लीजिये, एक सेठ हैं; नाम है दुर्भाग्यजी। रंग से सावले, शरीर से दुहरे और चरित्र से भ्रष्ठ। धर्मात्मा इतने कि नाम के लिये नया मन्दिर बनवा दिया, चतुर चालाक इतने कि जिस ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष बने, उसके सभी अधिकारियों के बार बार कहने पर भी रुपये लौटाने का नाम नहीं लेते। हरफनमौला इतने कि पानी जैसा रंग लिये, जरा सी देर में रुद्र तो जरा सी देर में बुद्ध। सुन्दरियों के शौकीन इतने एक नौकर उनकी खोज के लिये रखा। भोजन भट्ट, इतने कि संघ के साथ यात्रा करते हुये एक जगह मार खाई। ये चार छह मकानों के साथ तीन चार सोने चाँदी कपड़ा, कोयला की दुकानों के मालिक क्या हैं ? अपने लिये चक्रवर्ती ही समझते हैं। इनके यहाँ दुहरा जमा खर्च जहाँ है वहाँ आय कर बचाने की दृष्टि से किराया लेकर भी रसीद नहीं देने का भी इनका अपना नियम है। संक्षेप में इनकी दुनियाँ में मादकता है, सात्विकता नहीं।

जब एक किरायेदार ने चालीस रुपये देकर दुकान पर दो तीन आदमियों के सामने रसीद मांगी तो नहीं दी। तब उस बेचारे ने उन रुपयों का भी उल्लेख करते हुये दो बार आपकी सेवा में रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजे पर आपने अपना अपमान समझ नहीं लिये और खीझ कर किरायेदार को आगे से न निकलने तथा नल से पानी न भरने के लिये कह दिया। जब इतने पर भी सन्तोष न हुआ तो अपने जातीय भाई को जल्दी ही मकान खाली कर देने के लिये कहा नहीं तो खुद आकर एक मिनट में सारे बरतन-कपड़े फेंक देने की धमकियां देना शुरू किया। जब इतने पर भी मन नहीं भरा तो सभी किरायेदारों को उसके विरुद्ध उकसाना और उसका बढ़िया ऊपर वाला मकान उन्हें देने के लिये कहा। चूंकि वे भी जैन ही थे, अतएव इन्होंने जल्दी ही उस जैन किरायेदार के स्वर्ग को नर्क में परिणित करने की ठान ली।

एक दिन जब उल्लिखित किरायेदार और दूसरे नीचे वाले किरायेदार की औरतों में झगड़ा हुआ तो सेठजी ने ऊपर वाले किरायेदार के न होने पर भी नीचे वाले किरायेदार के द्वारा पत्थर फेंके जाने पर उसे तो कुछ नहीं कहा। हाँ ऊपर वाले भूखे प्यासे किरायेदार के आने पर, छह सात गुण्डा साथियों के साथ सेठजी विजय-यात्रा के लिये आधमके। दो आदमियों ने ऊपर चढ़कर खिड़की तोड़ी अन्दर घुसकर किवाड़ खोल दिये तो सेठजी ने कमरे में जाकर गालियों की बौछार के साथ किरायेदार और उसके परिवार के लोगों के गले दबाकर मारने के लिये साथियों को संकेत किया। जब वे चिल्लाये तो बाहर के हिन्दू-मुसलमान इकट्ठे होकर तमाशा देखने लगे। जब सेठ और उनके साथियों ने भीड़ देखी तो भागे। कहने लगे—'हम तो समझा रहे थे न कि मार पीट कर रहे थे।' पर फिर भी बहुतेरे हिन्दुओं और मुसलमानों ने यह समझ ही लिया कि जैन लोग जो "अहिंसा परमोधर्मः और जीव दया सर्व प्रथम" के नारों से आकाश गुंजित करते हैं वे वास्तव में कितने अहिंसक हैं ? जब सेठजी ने शान्ति और सुरक्षा के प्रतिनिधियों तथा आदर्श पुलिस थाने के सिपाहियों की जेबें गरम करदी तो उन्होंने गरीब किरायेदार की न्यायोचित मांग की उपेक्षा करदी। जले पर नमक छिड़कते हुये सेठजी किरायेदार से कहने लगे—"जब बड़े मन्त्री और मिनिस्टर भी मेरा बाल बांका नहीं कर सके तब फिर तुम तो किस खेत की मूली हो।" वह बेचारा एक ठंडी सांस लेकर चुप हो जाता।

उपरोक्त उदहारण से ज्ञात होता है कि आज जाति में दो रोग हैं:—एक तो झूठ का है और दूसरा फूट का है। धार्मिक दृष्टि से हम लोग भले ही झूठ को पाप घोषित करते रहे हों परन्तु सामाजिक और व्यवहारिक दृष्टि से उसे हम कुशलता का अंग मानते हैं फलतः हजारों बरस बीत जाने पर भी दूसरा सत्यवीर हरिश्चन्द पैदा नहीं हो सका अथवा प्रकाश में नहीं आ सका। हमें अध्ययन और अनुभव से यह भी ज्ञात होता है कि जातिवाला एक दूसरे को जीभर कर दबाता है और अपने ~.गु से स्वार्थ की खातिर दूसरे की दुर्दशा करने कराने में हिचकता नहीं है। कभी कभी यह भी देखने में आता है कि जाति वाला जाति वाले को उतना नहीं चाहता जितना

दूसरी जाति वाले को चाहता है। गरीब का महत्व न तो आज जाति की दृष्टि में है और न सरकार की ही दृष्टि में, न धर्म की दृष्टि में और न कर्म की दृष्टि में...और तो और गरीब की दृष्टि में भी गरीब का महत्व नहीं, इससे बढ़ कर और क्या अचरज होगा ? जब कि देश और जाति में गरीब ही अधिक हैं।

अनेकानेक आचार्यों के प्रयत्नों के बावजूद भी आध्यात्मिकता के आदर्श के लिये वीतराग विज्ञानता तो नहीं आ सकी पर हाँ कर्त्तव्य पालन से उदासीनता अवश्य आ गई। परिणाम स्वरूप अब हम विश्वबन्धुता के दिवा स्वप्न देखते हैं परन्तु पड़ौसी के यहां मृत्यु हो जाने पर भी हमारा रेडियो कभी बन्द नहीं होता है। सच तो यह है कि आज का जो जातीय व्यवहार है वह बाहर से जितना अमृतसागर है वह भीतर से उतना ही विष कुण्ड बना है। *

कहाँ आगा और कहाँ पीछा ?

कुछ दिनों पहले, महावीर जयन्ती के अवसर पर, अन्तर्राष्ट्रीय जैन सम्मेलन कलकत्ता की ओर से एक पुस्तक वितरित की गई थी, जिसका नाम है "समाज पतन की ओर" और जिसके लेखक हैं हरीशंकर अग्रवाल। इस में एक जगह बताया गया कि सेम्मेलन द्वारा बार बार प्रयत्न करने पर भी समाज के प्रमुख उद्योगपति साहु शान्तिप्रसादजी के एक कारखाने के मैनेजर नेमीचन्दजी ने अपना वह आदेश वापिस नहीं लिया, जिसमें जैन काम करने वालों को अपने नाम के आगे जैन नहीं लिखने कहा गया था। हम खुद जैन नहीं लिखें और हमारे भाई जो अपने लिये जैन लिखते हैं, उन्हें भी जैन न लिखने दें, इस बुद्धि की बलिहारी है। आज तो इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हम लोग जहाँ अपने नामों के आगे जाति या गोत्र लिखते, वहाँ जैन अवश्य लिखें। यह इसलिये नहीं कि हम हिन्दुओं से अलग रहें बल्कि इसलिये कि हमारी जाति के दूसरे भाई हमें पहिचान सकें और हम उन्हें जान सकें। अतएव खण्डेलवाल, अग्रवाल जैसी जाति या गांधी, मुणत सेठिया, सेठो, भाटी, बौरावा, हरीश, फणीश, काश्यप लोढा जैसे गोत्र के स्थान में या इनके आगे जैन अवश्य लिखें। हमारा आज का यह अल्प प्रयत्न अनागत के लिये बड़ा सुखद होगा। इससे हम जैन हैं' यह भी बोध हो सकेगा और दूसरी जाति के भी न समझे जा सकेंगे।

पर केवल नाम के आगे जैन लिख ही रह गये और जैन जनों के योग्य काम कुछ भी नहीं किया तो व्यर्थ ही बदनामी होगी। इसलिये हम सब जहाँ तक हो सके, अच्छे काम अधिक से अधिक करें और बुरे काम कम से कम करें। यह मैं खास तौर पर इसलिये कह रहा हूं कि आम जनता की जैन जनों के सम्बन्ध में अच्छी धारणा नहीं रह गई है। इसलिये एक राजस्थानी कवि कहता—'लोहू तो अण छान्यो पीवे पाणी पीवे छान रे' तो दूसरा हिन्दी का कवि कहता—

साहूकारों के रूप में हैं जहाँ चोर औ गिरह काट।
है अभिशापों से भरा जहाँ पशुता का व्यापक ठाट बाट॥

इसलिये आप चाहे व्यापारी हों अथवा अध्यापक वकील हों अथवा मुनीम, अधिकारी हों या लिपिक आप चाहे सरकारी मिनिस्टर हों और चाहे स्वतन्त्र नेता हों पर एक बात आप हमेशा ध्यान में रखिये कि अपने साथ आपको अपनी जाति के लोगों को भी बढ़ाना है। केवल आपके बढ़ने से जाति बढ़े या न बढ़े पर जाति के बढ़ने से आप निश्चय ही बढ़ेंगे। अतएव अपने जैसा दूसरों के सुख-दुख का भी ध्यान

---

* कोई इन पंक्तियों का वस्तुतः आशय यह नहीं समझले कि किसी गांव वाले या सबके सब सेठ वस्तुतः ऐसे ही हैं अथवा लखनऊ के सेठ और गरीब ऐसे नहीं हैं आशय इतना ही है। कि कहीं भले आदमी अधिक हैं और कहीं बुरे आदमी अधिक हैं। कहीं गरीब आदमी भी अधिक भले हैं तो कहीं सेठ भी आशा से भी अधिक बुरे हैं। इस दिशा में यह तो लोकोक्ति ध्यान में रहे–माना, अरब या काबुल के घोड़े प्रसिद्ध हैं पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वहां घोड़ों के साथ गधे भी नहीं हैं।

रखिये और जैन धर्म, जैन समाज, जैन साहित्य तथा जैन संस्कृति के प्रचार और प्रसार के लिये आप से जो कुछ भी हो सके वह कीजिये। समाज संगठन और धार्मिक शिक्षण में अगर आप सहयोग न दे सकें तो महरबानी कर असहयोग भी मत कीजिये। भगवान महावीर ने अहिंसा का दिव्य संदेश दिया था पर उनको तीर्थंकर मानने वाले जैन आज अहिंसा की आड़ में कायर हो गये हैं। कुछ वर्ष पहले हुआ जबलपुर कांड या शान्तिनाथ मन्दिर वाला प्रकरण भी कुछ अंशों तक इसका उदाहरण है। जबलपुर काण्ड का आधार "सन्मति सन्देश" का रामचरित अंक अभी भी बिना कारण जब्त है। पत्र का कार्यालय लुटा, संपादक अपमानित हुआ, जैनों की दुकानें लुटीं, मन्दिरों की मूर्तियां टूटीं पर किसी भी मध्यप्रदेश के मिनिस्टर ने जैन होकर भी इस मामले में सहयोग नहीं दिया। हां अपनी कुर्सी की मजबूती के लिये मामले को दबाना अवश्य पसन्द किया। इस मामले को सुलझाने के लिये सिद्धान्त संरक्षिणी। संघर्ष समिति बनी पर वह भी कुछ खास कर नहीं सकी। इससे खीझकर तब ही भँवरपालसिंह भाटी ने प्रकाश भारिल्ल को (पत्र के सम्पादक) एक पत्र में लिखा—"अब तो मुझे अपने लिये जैन लिखते हुये भी शर्म आती है।" किन्हीं अंशों में बात बावन तोला पाव रत्ती सही भी है।

भगवान महावीर ने सन्देश दिया था अपरिग्रह का, समाज से कम से कम लेकर अधिक से अधिक देने का पर उनके अनुगामी जैन जनों के न केवल घर और दुकानें ही बल्कि मन्दिर और साधु भी परिग्रह के जीते जागते उदहारण बन गये हैं। मन्दिरों में चोरियां होती, उनके धन के लिये पंचों झगड़ा होता पर फिर हमारी आँखें नहीं खुलती हैं। हम वात्सल्य अंग की चर्चा करते हैं और कहते हैं कि साधर्मी भाई से वैसे ही प्रेम करना चाहिये जैसे गाय बछड़े से प्रेम करती है पर सही अर्थों में स्वामि वात्सल्य के नाम पर हजारों लोगों को भूखे-प्यासे-दुखी देखते हैं पर मन्दिर के द्रव्य को उन्हें देकर अपने जैसा बनाने की बात हम नहीं विचार पाते हैं। हम अनेकान्तवाद की डींग हाँकते हैं पर अपनी जाति में अनेकता से एकता लाने के लिये प्रयत्न नहीं करते हैं। पहले तो दिगम्बर श्वेताम्बर, फिर छोटे साथ या तेरह-बीस पंथी और फिर बाद में तो न जाने कितने भेद-प्रभेद आपको मिलेंगे और इन भेद प्रभेदों के साथ ही हमारी संकुचित मनोवृत्ति मिलेगी। अतएव आवश्यक है कि हम सब अपने लिये अब जैन पहले कहें। जैन किसे कहा जावे ? इस सम्बन्ध में जितने मुख उतनी ही बातें है पर जैन जनों के तीन जो बाह्य चिन्ह हैं, उनके विषय में मत-भेद लगभग नहीं है। जैन वह है जो पानी छान कर पिवे, जिनेन्द्र भगवान का दर्शन-पूजन करे और उन पर ही श्रद्धा या अस्था रखे तथा रात्रि में भोजन नहीं करे। यदि इस परिभाषा की दृष्टि से आज की जैन जाति पर दृष्टि डालें तो विदित होगा कि अधिकांश लोग पानी छानकर नहीं पीते और न नियमित रूप से मन्दिरों में दर्शन-पूजन के लिये ही जाते हैं। कुछ लोग तो महामहिमा अनादि निधन नमोकार मन्त्र का उच्चारण भी शुद्ध नहीं कर पाते हैं। रात्रि में भोजन नहीं करने वाले लोग आज उँगलियों पर गिने जाने लायक ही हैं अन्यथा सभी इस दिशा में एकदम आधुनिक निशाचर (राक्षस नहीं बल्कि रात्रि में भोजन करने वाला) बन गये हैं। रतलाम में ग्वालियर से एक धन्ना सेठ की बरात आई थी तो उसमें बारातियों ने रात्रि को भोजन करके यहां और व्यर्थ सामूहिक रात्रि भोजन की नींव डाल दी।

यह तो सभी लोग मानेंगे कि जातीयता, एक संस्कारमयी भावना है और यदि वह नहीं तो फिर जाति का होना न होना बराबर ही है। कुछ ही दिनों पहले रतलाम में एक जैन ने अपनी सुशीला सुलक्षणा कन्या का विवाह ब्रह्मण के साथ कर दिया, एक जैन ने इससे पहले एक कन्या का संबंध महाराष्ट्रियन से कर दिया था। ऐसे उदाहरण बतलाते हैं कि अब जातीय संस्कार काफी शिथिल हो गये हैं; याने उनका प्रतिबन्ध रहा ही नहीं है और अगर है तो केवल असमर्थों के लिये या समझदार शिक्षितों के लिये पर समर्थों और विशेषतया धनवानों के लिये जातीय प्रतिबन्ध बिल्कुल नहीं रह गये। यदि उल्लिखित

सम्बन्ध दिगम्बर-श्वेताम्बर तक सीमित होते तो आज एकता की कड़ी मजबूत होती, आदर्श उदाहारण बनते पर अतिसुधारवादी सर्वोदयी या मानववादी विचार लेकर जो ये संबंध हुये; इनकी सफलता सन्देहास्पद ही है। चार पैर वाले पशु वहुत होते हैं, जैसे गाय, भैंस, घोड़ा, बकरी, हाथी, रीछ, शेर पर सभी पशुओं की जैसे एक जाति जैसे उनके कुछ खास मौलिक से संस्कारों के कारण नहीं होती है ठीक उसी प्रकार मानव समाज में भी शारीरिक समानता होने पर भी देश-काल-जाति और स्वभावगत जो विशेषतायें हैं वे उसकी जातीयता को अन्य जाति वालों से पृथक सिद्ध करती रहीं हैं और इसकी पृष्ठ भूमि में संकुचितता के साथ कल्याण की कामना भी रही है। हम बढ़े और अवश्य बढ़ें पर धीरे धीरे क्रमश: और क्रम से, इतनी जल्दी नहीं कि मुँह के बल गिरें और उठने का नाम भी नहीं ले सकें।

पानी छान कर पीने में और रात्रि को भोजन नहीं करने में, जहाँ खुद सुख से रहने और दूसरों को सुख से रहने देने की भावना है वहाँ जिनेन्द्र-दर्शन में इन्द्रिय-निग्रह, वीतरागता, सर्वज्ञता और हितोपदेशिता की भावना अन्तर्निहित है। मेरी आस्था है कि अधिकांश जातीय प्रथायें, और धार्मिक संस्कार वर्त्तमान समाज के लिये कल्याण की कामना से प्रेरित होकर ही प्रचलित किये जाते हैं पर कालान्तर में युगानुसार उनमें परिवर्त्तन होता रहता है। जो जाति या जो धर्म, इस व्यवस्था से जितना अधिक मुँह मोड़ता है, उतनी ही जल्दी धरती पर धराशायी होता है।

हमारी दृष्टि आगे रहे आदर्श की ओर रहे, जीवन के सुन्दरतम भविष्य की ओर रहे, यह बात जितनी आवश्यक है उससे कहीं अधिक यह भी आवश्यक है कि हम आगे देखते हुये पीछे से असावधान न रहें; आदर्श की चर्चायें करते हुये यथार्थ को बिल्कुल भुला ही न दें; जीवन के सुन्दरतम भविष्य के स्वर्ग के स्वप्न देखते हुये भी वर्त्तमान के नर्क से जीवन से मुक्ति की भी बात नहीं भूलें। आज इतना ही मुझे आपसे प्रस्तुत निबन्ध में कहना है।

●

परिषद् की प्रगति समाज की प्रगति है और तरुण विचार धारा वाले इसके उन्नायक हैं। समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली यह संस्था है। मैं इसकी सफलता चाहता हूं।

—श्रीमद् यतीन्द्र सूरि

समाज हमारी है; हम समाज के हैं। परिषद् नया फिरका नहीं, नया दल नही, युवकों का संगठन है जिनने सेवा का मंत्र अपनाया है।

—सौभाग्यमल सेठिया

अहिंसा मार्ग और जैन दर्शन

डॉ० प्रभाकर माचवे

एको भावः सर्वथा येन दृष्टाः, सर्वे भावाः सर्वथा येन दृष्टाः,
सर्वे भावाः सर्वथा येन दृष्टाः, एको भावः सर्वथा तेन दृष्टाः।

—गुणरत्न

"जिसने एकको जान लिया उसने सबको जान लिया; जिसने सबको जाना, वही एकको जान सका।"

महावीर के दर्शन की चार विशेषताओं की ओर जो आज की दुनियां में भी उतनी ही अर्थपूर्ण है, मैं पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। पहली समस्या है एक और अनेक, खंड और समग्र के बीच सम्बन्ध की। कई दर्शन हैं, जो केवल एक पर ही जोर देते हैं। और इस प्रकार से एकांगिता बढ़ती है। कई एकछत्रवादी, कट्टर धार्मिक-राजनैतिक रूढ़ मान्यताएं और हठवाद उसी में से निकले हैं। एक पुस्तक, एक नेता, एक सत्य का ठेकेदार, दुनियां में दुराग्रह बढ़ाने में बहुत कामयाब हुए हैं। उसमे उल्टे सहिष्णुता या दूसरे की दृष्टि को समझना बहुदेववादी और जो देवता को नहीं मानते उन दर्शनों में हर व्यक्ति की स्वतन्त्रता और विवेक पर आश्रित अनेकांगी विश्वासों में से जगा है। पश्चिम में ऐसे दर्शनों को 'प्लूरैलिस्टिक' दर्शन कहते हैं। आज का समाज और व्यक्ति मन भी इतना अधिक जटिल, उल्लासपूर्ण और अनेक कोणवाला बन गया है, कि किसी भी प्रकार का एक रंग सब पर चढ़ाना हमें गलत रास्ते पर ले जा सकता है। जैन दर्शन की यह एक प्रमुख विशेषता है, जो उसके स्याद्वाद और सप्तभंगनय में व्यक्त हुई है। सापेक्षवादी गणित के युग में अब उसका महत्व और भी बढ़ गया है।

आस्रवो भव-हेतु-स्यात् संवरो मोक्ष-कारणम्।
इत्यम् आर्हती दृष्टिरन्यदस्याः प्रपंचनम्॥

"आस्रव" और "संवर" ही जैन दर्शन के प्रमुख पहलू हैं। आत्म-तत्व की परिपूर्णता ही जैन दर्शन का प्रधान उद्देश्य है, न कि विश्व का सम्यगर्थ समझाना। एक ओर जहां कुछ भौतिकवादी दर्शन दुनियां को समझने की नहीं, उसे बदलने की बात करते हैं, या अन्य परमतत्त्ववादी दर्शन मात्र को माया कह कर नजर से ओझल कर डालना चाहते हैं, जैन दर्शन का आग्रह 'स्व' पर जोर देने में है, न कि 'पर' पर। आखिर दुनिया और उसके बारे में सोचना कहां से शुरू होता है? किसके लिए यह सब सोचना है? वैज्ञानिक लोग वस्तुनिष्ठता की बहुत बात करते हैं। क्या यह वस्तु अपने से अलग, अपने से काट कर, निरपेक्ष रूप में अस्तित्व रखती है? फिर उनके 'द्रव्य' और 'गुण' हम कैसे जानते हैं? यह जानना क्या है, अगर जानने वाला कोई न हो? और उस जानने वाले से परे इस 'वस्तु' की वास्तविकता क्या है? क्या है उसकी 'लोक स्थिति'? यह प्रश्न उठा कर जैन दर्शन उन पुद्गलों तक पहुँचा जो लाइब्निटज के "मौनेड" की तरह सब ओर भरे हैं। और वे ही अपने विस्तार और संकोच से अस्तित्व को बनाते हैं। यह "स्व" पर जोर सांख्य के प्रकृति पुरुष की भांति केवल रोमांटिक आकर्षण विकर्षण में समाप्त नहीं होता। जैनमत 'अपने' पर जोर देकर उस अपने को कसने या ढील देने में विश्वास करता है। अपने तईं चुनने या न चुनने की यह स्थिति बहुत कुछ आधुनिक अस्तित्ववादी दर्शन के निकटतम आती है। सारी दुनियां को जब और जो भी बदलना चाहते हों वे बदलें, उसके लिए रुकने की जरूरत नहीं हमें अपने भीतर अपने ही संयम-असंयम को देखना चाहिये।

❀ जैन दर्शन की विशेषता ❀

वहीं मुझे महावीर-दर्शन की तीसरी विशेषता, जो आधुनिक युग में बहुत महत्वपूर्ण जान पड़ती है, की याद आती है। और वह है हर व्यक्ति की योग्यतानुसार मोक्षाधिकारी की कल्पना। महावीर-मत में श्रमण और श्रावक और श्रावक के दो मार्ग हैं। हर व्यक्ति से एकसी अध्यात्मिक कसरत नहीं चाही जाती। इन दो प्रवृत्ति-निवृत्तिपरक मार्गों का सह-अस्तित्व एक अच्छी चीज है। कीर्केगार्द ने कहा था कि वस्तुत: प्रत्येक व्यक्ति को शक्ति के अनुसार तीन स्तर होते हैं एक सौंदर्यन्वेषी का दूसरा नैतिक शिवता को प्राप्त करने वाले का और तीसरा सत्य-शोधक था। एकास्तर को अस्वीकार करके ही दूसरे स्तर तक व्यक्ति चढ़ सकता है। ये तीनों सोपान हैं। जैन-दर्शन में भी जो साधना मुनि से या तीर्थंकर से चाही जाती है, उसी की यांत्रिक रूपसे हर साधारण व्यक्ति से अपेक्षा नहीं की जाती। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि सब व्यक्ति एकसे नहीं होते—ने भौतिक अर्थ में, न अध्यात्मिक। सो यह सापेक्षता इस मामले में भी बड़ी लचीली है और काम की है। अन्यथा कई और धर्मों में आग्रह दुराग्रहकी सीमा तक पहुँचाकर सबसे एकसी साधना चाही जाती है। जो मनुष्य की सीमाओं और कमजोरियों को बेखते, संभव नहीं।

अहिंसा का मार्ग

अन्तिम बात जो मुझे कहनी है, वह अहिंसा के विषय में है। विदेश में गांधी-दर्शन पढ़ाते हुए बार-बार महसूस हुआ कि आज के विश्व में जो अशान्ति है, उसका मूल कारण अहिंसा के महत्व को ठीक से न समझने के कारण है। कई बार प्रश्न उठाये जाते थे कि विराट् और सामूहिक हिंसा के साधन जब विज्ञान ने जुटाये हैं, तो व्यक्तिगत अहिंसा का क्या मूल्य पर इस का मूल्य सर्वाधिक है। शांति का वाद न बनाकर यदि देश-देश के भीतर जो तनाव, और ठंडी घनता की दीवार पैदा हो रही है। उसे कम करने या पिघलाने का कार्य केवल अहिसा से हो सकेगा। भारत की याद विदेश में बुद्ध, महावीर, गांधी को लेकर की जाती है। अशोक के शस्त्रसंयास और अकबर के सर्व धर्म समभाव को लेकर की जाती है सहिष्णुता और परस्पर-प्रेमका जैसा पाठ भारत ने अपने तीन हजार बरसों के इतिहास में दिया, और भी दे रहा है वह ऐसा है कि विदेशी उसे देख-सुनकर मुग्ध हैं।

विदेशियों के लिए यह एक चमत्कार से कम नहीं कि इतनी बड़ी फौज और सशस्त्र बेड़े रखने वाले ब्रिटिश साम्राज्य-वाद ने चुप चाप १९४७ में अपनी सेनाएं वापिस ले लीं, हमारे सिपाही उन्हें गले में माला पहनाने गये, आंसू बहाये—और यह सब चमत्कार गांधी की अहिंसा से हुआ। रामचन्द भाई ने गांधी को जैन दर्शन से परिचित कराया और टालस्टाय ने उन्हें और भी आगे बढ़कर ईसाई दुनियां को उसी के अस्त्र से पराजित करने की प्रेरणा दी। थोरो के सत्याग्रह, और रस्किन के सर्वोदय तक गांधी की दृष्टि इसलिए पहुँच सकी कि हजारों वर्ष पूर्व इसी धरती पर एक क्षेत्रिय सामन्त राजपाट छोड़ कर निर्जन गहन कान्तारों में दिगम्बर घूमता फिरा। उसने किसी ग्रंथ को अपना आदर्श नहीं माना, निर्ग्रंथ कहलाया। अपना नाथ वह स्वयम् बना, अपना मार्ग स्वयम् बनाया। आज उसकी याद हम करते हैं, और नत-मस्तक हैं।

❀ तीन बात ❀

(साध्वीजी श्री महेन्द्रश्रीजी महाराज)

भुवन तीन हैं स्वर्ग मृत्यु पाताल
रत्न तीन हैं ज्ञान दर्शन चारित्र
तत्व तीन हैं देवतत्व गुरुदेतत्व धर्मतत्व
काल तीन हैं अतीत अनागत भविष्य
समकित भेद तीन है दीपक रोचक कारक
गारव तीन हैं ऋद्धि गारव रस गारव शातागारव
शल्य तीन हैं माया शल्य नियाणशल्य मिथ्यात्वशल्य
विराधना तीन है ज्ञान विराधना दर्शन विराधना चरित्र विराधना
वीर्य तीन है मन वीर्य वचन वीर्य काय वीर्य
अवस्था तीन है बाल युवा वृद्ध
दंड तीन है मनदंड वचनदंड कायदंड
वेद तीन है पुरुष स्त्री नपुंसक
वनस्पति के भेद तीन है संख्यात असंख्यात अनंत
करण तीन है मनकरण वचनकरण कायकरण
गुप्ति तीन है मनगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति
सद्‌गति तीन है मनुष्यगति देवगति सिद्धिगति
मनुष्य के क्षेत्र तीन है कर्मभूमि अकर्मभूमि अंतरद्वीप
साधु के मनोरथ तीन है कब मैं सूत्रों का पठन करूं
कब मैं गीतार्थ बनु
कब मैं प्रतिमा वहन करूं
मुद्रा तीन है जिनमुद्रा योगमुद्रा मुक्ताशुक्तिमुद्रा
पूजा तीन है प्रातःकालपूजा मध्यान्हपूजा सायंकालपूजा
दान तीन है अभदान उचितदान सर्वदान
स्वरूप तीन है मुनिस्वरूप चतुरस्वरूप सद्‌भाव स्वरूप
पृथ्वी तीन तरह से है उच्चप्रदेश निम्नप्रदेश सम प्रदेश
पुरुष तीन है उत्तम मध्यम अधम

आगम तीन प्रकार के है।

अनागम जो तीर्थंकर प्रभु बोलते हैं।

आगम जो गणधर प्रभु श्रुत रूप से गुंथते हैं।

परंपरा आगम जो सुधर्माप्रभु से लेकर पाट परंपरा चल रही है।

श्रावक के मनोरथ तीन है

मैं आरंभ परिग्रह का त्याग करूं।

श्रावक के व्रत अतिचार रहित पालन करूं।

मृत्यु समाधि पूर्वक प्राप्त करूं।

सम्यकत्व की दृढ़ता तीन प्रकार से है

जैसे किन्नर देवों के गायन सुनने में मन आकर्षित होता है।

वैसे गुरु उपदेश सुनने में मन में एकाग्रता होती है

जैसे क्षुधा से पीड़ित व्यक्ति की इच्छा अन्न के प्रति होती है।

वैसे ही मन की भावना सम्यकत्व को पालन करने में होती है।

जैसे रोगाग्रस्त व्यक्ति औषधि सेवन करने में उस औषधि द्वारा रोग मुक्त होने पर आत्मा में शान्ति होती है।

वैसे ही आचार्य गुरु की सेवा भक्ति करने में आत्मा को समाधि होती है।

वाचना तीन प्रकार के व्यक्तिको दी जाती है

पण्डित, सरल वृति वाला, गुरु के छिद्र को न देखने वाला।

देव तीन कारण होने से मानव लोक में नहीं आते

इस लोक में राग कम होने से। देव सुख में ग्रस्त हो जाने से। मानव गंध को न सहन करने से।

देवों की पहचान तीन प्रकार से होती है।

पृथ्वी का स्पर्श नहीं करते। आंख की पलक न गिरने से। फूल माला न कुम्हलाने से।

देव को चिंता का कारण तीन तरह से होता है।

माता पिता का आश्रय को देखने से। देवगति का त्याग के कारण। मलमूत्र में उत्पन्न के कारण।

देव इच्छा भी तीन प्रकार से करते हैं।

आर्य क्षेत्र—मनुष्यगति—सुकुल उत्पति।

देव छः माह पूर्व च्यवन का चिन्ह जान लेते हैं।

रत्त की डाबड़ा की झांक देखने से। फूल की माला झांकी देखने से। तेज लेश्या झांकी देखने से।

इन्द्र तीन प्रकार के होते हैं।

ज्ञानेन्द्र केवल ज्ञानी। दर्शनेन्द्र क्षायिक समकिती चारितेन्द्र यथा ख्यात चारित्र।

पृथ्वी का कम्पन तीन प्रकार से होता है।

सागर का जल सख्य उछलने से। ज्योतिष वैमानिक देवों का युद्ध होने से। ज्योतिष वैमानिक प्रभु वंदन करने को आते है उस कारण।

वेदना तीन प्रकार से होती है
शीत उष्ण मिश्र

श्रुति के उपयोग में मानव अनेक प्रकार की जानकारी ले सकता है। आधुनिक काल में ऐसे व्यक्ति हैं कि अपने को गुढ़ रहस्य का ज्ञान न होने के कारण एकान्त पक्ष का अवलंब करके जैसी जैसी डिंग मारने लगते हैं किन्तु कल्पना की बात कहां तक ठीक हो सकती है। ओस विन्दु के समान क्षण भर भी रह सकती है। अपने पास एक ऐसा स्रोत उसको ही पहचान कर सभी ज्ञान का भास मिल सकता है। क्या प्रभु के अनुयायी प्रभु की आज्ञा का उलंघन करके अपने अपने नाम को उज्वल रखने के लिये अन्य समाज पर आक्षेप लगाना यह प्रभु की आज्ञा का उलंघन नहीं है। प्रभु ने दीक्षा लेने के बाद किसी वस्तु का खण्डन या मण्डन नहीं किया उन्होंने तो दर्शन प्राप्त कर जनता को तारने की ही प्रेरणा की।

हम तनिक वस्तु को पाकर हवाई किले मानने लगते हैं कुछ भी पाचन न कर सकते जितना-जितना समाज में साहित्य-स्वाध्याय बढ़ता रहे उतना-उतना समाज का लक्ष दिन प्रति बढ़ता रहेगा। ऐसी शक्ति प्रवाह को न विकसित करें तब यह जीवन की सफलता का मार्ग नहीं ले सकेगें। स्वयं जानकारी करके बाद परको जानना सही मार्ग का रास्ता है। जिसने एक को जाना उसने सभी को जाना।

अपने मन की भ्रमणा को दूर करके एकमय एकरस बनकर समाज सेवा करें दिन प्रति अपने प्रभु के मार्ग का साधक बने।

●

'युवक समाज की जन्म पत्री बनाते हैं और परिषद् ही समाज सेवा का एक अच्छा माध्यम है।'

—मुनि जयन्त विजय

'युवक दल-दल व कीचड़ से बाहर निकल कर प्रस्फुटित होने वाले कमल के समान है जो समाज का कर्णधार है। परिषद् को सहयोग दीजिये समाज के भावी विकास के लिये।

—मुनि देवेन्द्र विजय

बिन्दु बिन्दु विचार :-

● भीलड़ियाजी पर टैक्स

प्राचीन जैन तीर्थ भीलड़ियाजी मंदिर में दर्शन का जो यात्री कर लगाकर भीलड़िया ग्राम पंचायत ने अदूरदर्शिता का परिचय दिया है वह एक विचारणीय प्रश्न है ! प्रजातंत्र और धर्म निरपेक्ष राज्य में इस प्रकार के प्रस्तावों से और अधिक क्या शर्मनाक चीज हो सकती है। भगवान के दर्शन पूजन पर टैक्स लगा कर जो हमारे अधिकारों पर कुठाराघात किया गया है उसका प्रतिकार यदि डट कर नहीं किया गया तो यह बात निश्चित है कि हमारी समाज को अपमान के अलावा और बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी व हर पंचायत इस प्रकार के टैक्स लगा कर हमारे साथ खिलवाड़ किया करेगी। इस प्रकार के कर जहां एक ओर हमारी कमजोरी से फायदा उठाने का साजिश रूप है वहां हमारी भावी पीढ़ी को विमुख करने के भी षड़यंत्र रूप हैं। अतएव ग्राम ग्राम और नगर नगर के प्रत्येक जैन बन्धु से निवेदन है कि वह कड़े शब्दों में इस निरंकुश तानाशाह पूर्ण प्रस्ताव की डट कर भर्त्सना करे तथा कड़े विरोध प्रस्तावों द्वारा गुजरात सरकार तथा केन्द्रिय शासन से उक्त कर को रद्द करने की मांग करे। आशा है हर गांव की समाज जैन समाज के साथ हुए इस अन्याय का सामना करेगी और निडरता का परिचय देगी।

● वह मुस्कराहट

गत महावीर जयंति पर जब दिल्ली की जैन समाज ने गृहमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के सम्मुख छुट्टी की मांग रक्खी तो उनने मुस्कराहट के साथ कह दिया कि भगवान महावीर तो कर्मवाद में विश्वास करते थे फिर उस दिन तो और भी अधिक कार्य करना चाहिये; छुट्टी की आवश्यक्ता ही क्या ? कितनी हास्यास्पद दलील है ? भगवान महावीर की छुट्टी की मांग को टालने के लिये किस तरह का उत्तर हमारे नेता गण दिया करते हैं यह विचारणीय प्रश्न है ? जैन समाज आज तक केवल एक मांग रखती आई और वह भी इस चीज की, प्रभो महावीर की जयंति के दिन पूर्ण छुट्टी घोषित की जाय। यदि इसे भी मजाक का मामला बना दिया जाय तो इससे बढ़ कर हमारा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है ? जैन समाज का ऐसे समय पर कर्त्तव्य होजाता है कि वह अपनी मांग पर अटलता का परिचय देकर पूरे जोश के साथ हमारे नेताओं को हमारी न्यायिक मांग मंजूर कर देने के लिये मजबुर करदे। हमारी जैन संस्थाओं तथा जैन समाज के अग्रणीय महानुभावों को इस पर गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिये।

● अनुकरणीय आदर्श

भारत में एक ऐसा राज्य भी है जहां जैनियों की संख्या बहुत कम होते हुए भी वहां की सरकार भगवान महावीर के उपकारों को विस्मृत नहीं कर सकी और उनने महावीर जयंति को राष्ट्रीय त्यौहार घोषित कर शासकीय तौर पर महावीर जयंति मनाने का निर्णय किया वह राज्य है पंजाब जो भारत के उत्तर में है तथा इस प्रकार के आदर्शों द्वारा भारतीय प्रजातंत्र में धर्म निरपेक्षता को सही सिद्ध कर रही है। पंजाब सरकार के इस उदार निर्णय की जितनी प्रशंसा की जाय कम है क्यों कि अन्य राज्य में जैनियों की संख्या इतनी अधिक होने पर भी महावीर जयंति को शासकीय तौर पर मानने की जूं किसी के कान पर नहीं रेंगी। यह एक आदर्श है जिसे समय रहते अन्य राज्य सरकारों को मानकर भगवान महावीर की जयंति को राष्ट्रीय त्यौहार घोषित कर भगवान वीर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना है।

● कुरीतियों के प्रति जनमत

जैन समाज में आज जिस चीज की अत्यधिक चर्चा हो रही है वे हैं कुरीतियां जिन्हें समाप्त करने के लिये नवयुवक हरचंद कोशिश कर रहे हैं तथा अन्धविश्वास और पुराने रीति रिवाजों पर चलने वाले कई व्यक्ति उन्हें पत्थर की लकीर मान कर आज भी अपना रहे हैं। युग बदल चुका है व इस बदले युग में समाज को भी बदलना है तौर तरीकों से किंतु इसके लिये जनमत जागरण ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। इससे कि हम एक दम प्रतिबंध लगाने की मांग करें तथा इन्हें मानने वाले लोगों की कटु आलोचना करें।

मारवाड़ की महत्वपूर्ण रस्म–

फले चुनड़ी

[शाश्वत धर्म के विशेष प्रतिनिधि द्वारा]

मारवाड़ के धार्मिक रीति रिवाजों और उत्सव महोत्सवों में जो अत्याधिक महत्वपूर्ण चीज़ है वह है 'फले चुनड़ी की नोकारसी'..........मालवा आदि प्रदेशों में जहां ८–६ रुपये किलोग्राम में 'मिक्स घी' भी नहीं मिलता और शुद्ध देशी घी के दर्शन इसलिये नहीं होते कि ईमानदारी कुछ दूर जाती जा रही है..........इन वर्षों में 'फले चुनड़ी की नोकारसी' को करने का सौभाग्य किसी ने लुटा हो इतिहास की पंक्तियों में ढुंढ़े कहीं मिलता है ! जब आकोली श्री संघ की पत्रिका में 'फले चुनड़ी' का नाम पढ़ा तो कई ऐसे भी थे जो मतलब तो ठीक नाम भी नहीं समझ सके ! जो मालवे से जा रहे थे उनमें उमंगों की श्रृंखला में फले चुनड़ी की जानकारी भी एक कड़ी थी ! और जब दि० ६-५-६२ को वह दिवस आया तो मालवे के स्वयम् सेवकों ने जी भर कर उसे देखा और उसकी जानकारी वहां के लोगों से प्राप्त की !

फले चुनड़ी का चढ़ावा भी सभी चढ़ावों से अधिक होता है तथा सारे प्रतिष्ठोत्सव में होने वाले चढ़ावों की आवक का माप दण्ड भी 'फले चुनड़ी की नोकारसी' का चढ़ावा ही माना जाता है । आकोली प्रतिष्ठोत्सव में शा० मुकचंदजी, हंसराजजी, अभयचन्दजी, नवलमलजी, मिश्रीमलजी, लालचन्दजी, चुन्नीलालजी, मुनिलालजी, लखमीचंदजी मंछालालजी, चम्पालालजी, बेटा पोता जीवाजी आकोली ने २६ हजार रु० का चढ़ावा बोल कर इसे भावों के वायुयान पर हृदयांतरिक्ष की सैर कराई । और भीनमाल में भी ३७ हजार रुपये का चढ़ावा हुआ बताते हैं । बस ! इन्हीं ज्वलंत उदाहरणों से फले चुनड़ी की महता को हम समझ सकते हैं ।

● फले चुनड़ी की विधि

फले चुनड़ी की विधि भी मालव वासियों को बड़ी निराले पन को लेकर महसुस हुई । प्रातःकाल जब रसोई तय्यार हो जाती है तो सारे ग्राम के पंच महानुभाव इकट्ठे होते हैं तथा ढ़ोल नगारों के साथ फले चुनड़ी के चढ़ावे का लाभ लेने वाले महानुभाव को ग्राम बाहर सड़क के किनारे ससम्मान ले जाया जाता है जहां 'साफे' आदि से उनका अभिनन्दन किया जाता है तथा किसी भी एक वृक्ष पर चुनड़ी ओढ़ा दी जाती है । चुनड़ी का उपयोग एक आमंत्रण की तरह होता है जो हर एक जैन तथा जैनेतर भाई के लिये होता है । और यही कारण है कि इस रस्म को 'फले चुनड़ी की नोकारसी' कहते है । जब तक चुनड़ी उस वृक्ष से हटा नहीं ली जाती किसी भी प्रदेश का, किसी भी जाति का, किसी भी भाषा का, किसी भी धर्म का कोई भी महानुभाव आकर परठे में भोजन कर सकता है । इस नोकारसी में अधिकाधिक 'लपसी' की रसोई ही बनाई जाती है । आकोली में इस रसोई के लिये २५–२५ मील से पैदल व्यक्ति आये तथा लगभग ३० हजार लोगों ने भोजन किया । इसके उपरांत भी ५० मन 'लपसी' बची जो गरीबों को दो दिन की मेहनत के बाद बांटी जा सकी । सड़क से निकलने वाला हर व्यक्ति जो किसी भी जाति धर्म विशेष का हो अपना हर कार्य छोड़ कर पहिले फले चुनड़ी की नोकारसी में भोजन करता है तथा फिर आगे बढ़ता है ।

इस प्रकार फले 'चुनड़ी की नोकारसी' मारवाड़ के प्रतिष्ठोत्सवों का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम माना जाता है ।

फले चुनड़ी सम्पन्न

३० हजार जनता द्वारा लाभ

भोजन कर रहे विशाल जन समुदाय की एक झलकी.

ब्राह्मणलोग रसोई बनाने में तत्पर ! चित्र में 'लापसी' का कढ़ाव तय्यार होरहा है ।

श्री आदीनाथ जिन प्रतिष्ठोत्सव आकोली

उत्सव मण्डप में चलचित्र

प्रतिष्ठोत्सव के उपलक्ष में क्रिया मण्डप में चलचित्र सुन्दर झांकियों का प्रदर्शन किया गया। विद्युतदीपों की रोशनी से प्रभासित तथा कृत्रिम शक्ति द्वारा चलित ये झांकियां हजारों जनता के आकर्षण की केन्द्र रही। प्रति दिन प्रतिपल झांकियों के सम्मुख हजारों की भीड़ लगी रहती थी जो इन नयनाभिराम दृश्यों को निहारा करती थी। जहां एक तरफ मंत्रोच्चारण की ध्वनि यात्री के हृदय को लीन प्रभु के चरणों में श्रद्धान्वित करती थी जैन इतिहास तथा संस्कृति के प्रतीक इन चलचित्रों की अद्भूत छटा उसके हृदय को धर्म विव्हल करती थी। लगभग १० दिनों में २ लाख मनुष्यों ने इसे अपने मुखारविन्दों से महारा।

चलचित्रों की सूचि

१. श्री तीर्थाधिराज शत्रुंजय तीर्थ पहाड़ रचना
— शा० रूपचंद दीपाजी नोगेशा की तरफ से

२. छप्पनकुमारी चित्र रचना
— शा० मंगलचंदजी आंबाजी की ओर से

३. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चित्र रचना
— शा० शेषमलजी भुदाजी के सौजन्य से

४. कमठयोगी चित्र रचना
— शा० जेरूपचंदजी नरसाजी खिमेसरा के तरफ से

५. त्रिशलामाता के चौदह स्वप्न चित्र रचना
— शा० कस्तुरचंदजी भगवानजी के सहयोग से

६. श्री आदीनाथ भगवान के पारणे की चित्र रचना
— शा० निहालचंदजी गोमाजी खिमेसरा के सौजन्य से

७. जालोर स्वर्णगीरी की चित्र रचना
— शा० किस्तुरचंदजी परकाजी खिवेसरा की ओर से

इनके अलावा गुरुदेव श्री, श्रेणीक महाराजा आदि के चित्र मण्डप की दिवालों पर शोभायमान थे। मण्डप की साजसज्जा का पूरा विवरण अन्यत्र दिया गया है।

आकोली नगरे श्री आदीनाथ जिन प्रतिष्ठोत्सव की झलकियां

पानी की निःशुल्क सराहनीय व्यवस्था

आकोली नगर में पानी प्राप्त करने के एक मात्र साधन यदि हैं तो वे केवल कुए हैं। वे कुए जिनमें खारा पानी तो कहीं मीठा पानी होता है। प्रतिष्ठोत्सव के अवसर पर श्री संघ ने व्यवस्था कर सारे नगर में क्या जैन तथा क्या जैनेतर निःशुल्क मीठे पानी की व्यवस्था की तथा हर घर के सामने इस हेतु चलाई गई टंकियां आकर खड़ी रह जाती थी जिससे गरीब और अमीर, श्रमिक और मालिक सभी निःशुल्क मीठा पानी प्राप्त करते थे। ६ दिनों तक यही क्रम जारी रहा तथा कई ऐसे लोगों ने जो मीठे पानी के दर्शन तक नहीं करते थे इसका लाभ उठाते रहे जो मीलों दूर से गाड़ियों में लाया जाता था।

पग पग पर प्याऊ

कहा जाता है कि मारवाड़ में पानी की कमी है किंतु आकोली इसके लिये अपवाद रहा। पानी की बराबर व्यवस्था बनाये रखने के लिये यहां कई प्याऊओं का निर्माण किया गया तथा गली गली और कौने कौने में प्याऊए पानी का प्रदाय करती थीं। पीने के पानी की व्यवस्था मारवाड़ और फिर गर्मी में की जाना अत्यधिक प्रशंसनीय कदम है।

पत्तलों के दर्शन भी नहीं

जैसा कि कई प्रदेशों में रिवाज है भोजनादि पत्तलों में परोसा जाता है किंतु २५-२५ हजार मनुष्यों की नोकारसियों में भी एक भी पत्तल के दर्शन नहीं हुए सभी थालियों की व्यवस्था ही थी। प्रतिदिन थालियों में हजारों मनुष्य भोजन करते थे।

२ ट्रक भर गादी और गोदड़े.

वैसे तो पत्रिका में स्पष्ट निर्दिष्ठ था की ओढने बिछाने की सामग्री साथ लावें किंतु आकोली श्रीसंघ व्यवस्था में पीछे नहीं रहा लगभग ३-४ ट्रक गादी और गोदड़े इस अवसर पर इकट्ठे किये गये जिनमें हर ट्रक में लगभग ६००-७०० गादी गोदड़े होंगे।

रात्रि को संरक्षण व्यवस्था

बाहर से पुलिस की व्यवस्था थी ही किन्तु आकोली के स्वयंसेवकों ने रात्रि गश्त का कार्य भी अपने हाथों में ले लिया। श्री सोनराजजी बसाजी के नेतृत्व में दिन रात्रि ५-७ स्वयसेवक गश्त के लिये निकलते तथा देखरेख और सुरक्षा में हाथ बंटाते। यह एक उल्लेखनीय कदम था।

५० मन लपसी बची

३० हजार मनुष्य भोजन कर गये

प.ले चुनड़ी की नवकारसी के दिन लगभग ३० हजार मनुष्यों (जैन तथा जैनेतर) ने भोजन किया जिसमें भोजनादि व परोसदारी की अच्छी व्यवस्था रही किंतु इसके उपरांत भी ५० मन लपसी (लाफसी) बच रही जिसे वितरीत करने के लिये आकोली के पंचों को दो दिन कड़ी मेहनत करनी पड़ी। स्मरण रहे इस नवकारसी की बोली २६ हजार रुपये की थी।

स्वयंसेवकों में भरपूर जोश

प्रतिष्ठोत्सव की शानदार सफलता और व्यवस्था का अत्यधिक श्रेय आकोली के स्वयंसेवकों को है जिनमें भरपूर जोश खरोश के दर्शन हुए।

पंचों का सबल मार्ग दर्शन

शानदार प्रतिष्ठोत्सव की सफलता पंचों के सबल मार्गदर्शन का ही फल है। प्रतिक्षण पंचगण पेढी पर व्यस्त ही दिखा करते थे तथा हर कार्य अपने हाथों से करने की उनकी एक महान् प्रणाली थी जो दूसरों के लिये सदा प्रेरणादायी रही।

रोशनी की व्यवस्था

आकोली में कोई बिजलीघर अथवा पावर हाऊस नहीं है लेकिन फिर भी अस्थाई बिजली की रोशनी का प्रबन्ध किया गया तथा सैंकड़ों बल्ब नगर में लगाये गये। गली गली में इसकी सुन्दर व्यवस्था थी।

ग्राहकों से निवेदन

जिन ग्राहकों ने अब तक चन्दा नहीं भेजा है कृपया अंक मिलते ही वार्षिक शुल्क ५) पांच रुपये भेजकर अनुगृहित करें।

शुल्क भेजने का पता :—

सौभाग्यमलजी सेठिया, वकील

अध्यक्ष अ० भा० राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

शाश्वत-धर्म

[आकोली प्रतिष्ठा विशेषांक]

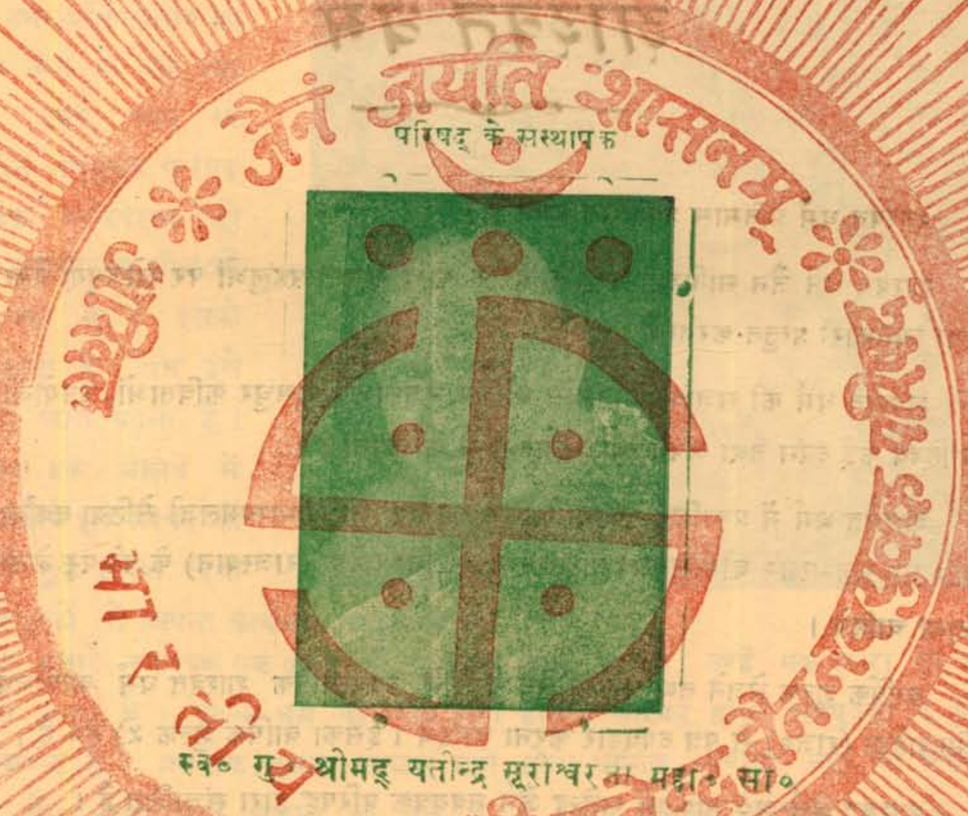

परिषद् के संस्थापक

स्व० गुरु श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० सा०

परिषद् अधिवेशन खण्ड

शाश्वत धर्म

शाश्वत धर्म प्रतिमास प्रकाशित होता है।

शाश्वत धर्म जैन साहित्य, संस्कृति, दर्शन आदि समस्त पहलुओं पर खोजपूर्ण लेख तथा जानकारी प्रस्तुत करता है।

शाश्वत धर्म की सजावट प्रतिमास मौलिक रचनाओं, सुमधुर कविताओं, उपयोगी साहित्य कई व्यंग तथा अपने स्थाई स्ताम्भों से की जाती है।

शाश्वत धर्म में प्रकाशित कराने के लिये रचनाएं श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील बी० ए० एल-एल० बी० सम्पादक शाश्वत धर्म निम्बाहेड़ा (राजस्थान) के पते पर भेजी जाना चाहिये।

वार्षिक शुल्क भेजने तथा प्रतियां लेने के लिये व्यवस्थापक शाश्वत धर्म कार्यालय निम्बाहेड़ा (राज०) से पत्र व्यवहार करना चाहिये। इसका वार्षिक शुल्क ५) रु० है।

शाश्वत धर्म अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा संचालित है।

शाश्वत धर्म समाज का पत्र है तथा समाज को इसकी नींव सुदृढ करना है।

............परिषद् को पुष्ट बनाओ

—मुनि श्री विद्याविजयजी महाराज

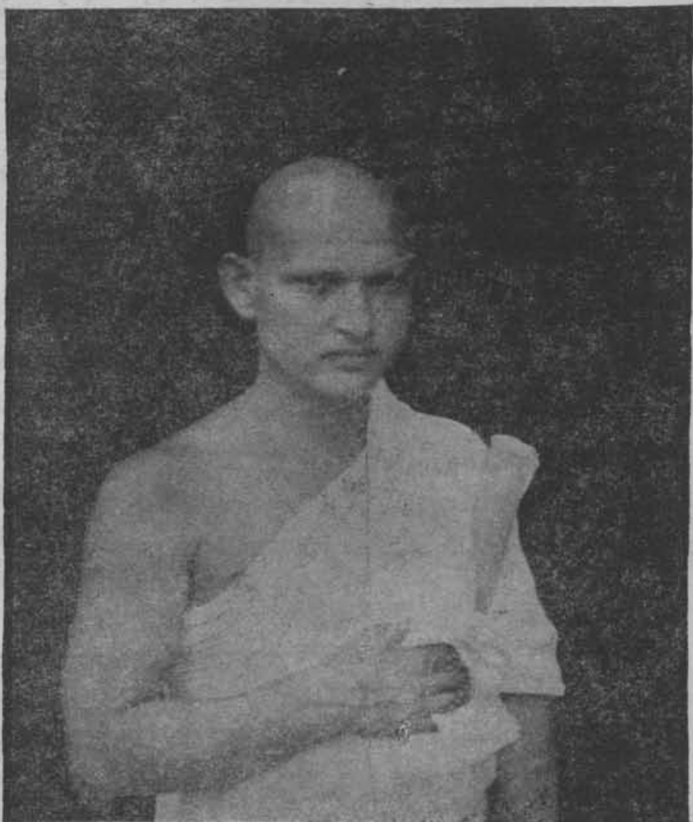

महानुभावों !

अति हर्ष का विषय है कि आकोली नगर में दो-दो कार्यक्रम सम्पन्न होने जा रहे हैं। उधर प्रतिष्ठोत्सव का कार्य आठ दिन से चल रहा है और इधर आज श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन हो रहा है। अधिवेशन चीज जो है वह क्या है ? इसको हमें समझना है और इसे समझ कर आगे बढ़ना है। गुरुदेव जब तक मालवे में रहे तो उन्होंने इस परिषद् को कार्य करते हुए संदेश दिया तथा नवयुवकों ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

आज हमारे नवयुवक एक दूसरे ही मार्ग पर चल रहे हैं, उन्हें एक दूसरा ही नया मार्ग मिल गया है। उनसे धर्म का कार्य नहीं होता। परिषद् हमारे नवयुवकों के लिये धर्म का साधन है। जब तक हमारा सगठन नहीं होगा धार्मिक भावनाएं नहीं आ सकेंगी। हम पीछे हैं। यदि दूसरे समाज को देखें तो वे हमारे समाज से आगे बढ़ रहे हैं। हमारा समाज उत्कृष्ठ और श्रेष्ठ है यदि यह भी पीछे रह जाय तो क्या हो सकता है ? भगवान महावीर के संदेश सबके लिये हैं। गुरुदेव ने जो परिषद स्थापित की मारवाड़ में आज उसका पहिला दिवस है। आशा है आप परिषद् को सहयोग देंगे तथा आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे। जगह जगह पाठशालाएं नहीं हैं परिषद् को इसके लिये पुष्ट बनावें तथा पूर्त्तियां करें। यही हमारा ध्येय है। इसके लिये मारवाड़ श्रीसंघ तथा नवयुवकों से निवेदन है कि तन मन धन से कार्य करेंगे तथा धर्म की प्रवृत्ति में सफलता प्राप्त करेंगे। जिससे लाभ होगा।

[पूज्य मुनिराज श्री विद्याविजय जी महा० द्वारा परिषद् के चतुर्थ अधिवेशन के उद्घाटन समारोह में दिया गया भाषण]

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का

नव-निर्वाचन तथा नवगठित केन्द्रीय कार्यकारिणी

केन्द्रीय अध्यक्ष—
श्री सौभाग्यमलजी सेठिया,
बी. ए., एल-एल. बी., वकील

केन्द्रीय उपाध्यक्ष—
(जो अपने अपने प्रान्त के प्रान्तीय अध्यक्ष रहेंगे)
मालव प्रान्तीय — श्री माधवसिंह चौधरी प्लीडर, नीमच
गुजरात प्रान्तीय—श्री चन्दुभाई दलसुखभाई
मारवाड़ प्रान्तीय—श्री जेठमलजी खूमाजी बागरा

केन्द्रीय प्रधानमंत्री—
श्री भंवरलालजी छाजेड़, नीमच

केन्द्रीय उपमंत्री—
(जो अपने अपने प्रान्त के महा सचिव रहेंगे)
मालव प्रान्तीय —श्री मदनलालजी करनावट
गुजरात प्रान्तीय—श्री हीराभाई पारिख
मारवाड़ प्रान्तीय—श्री उदेचन्दजी ओखाजी, आहोर

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री—
श्री राजमलजी लोढ़ा, मन्दसौर

केन्द्रीय प्रचार मंत्री—
श्री कुन्दनलालजी काकड़ीवाला, अलिराजपुर

केन्द्रीय संगठन मंत्री—
श्री राजमलजी जैन

केन्द्रीय अर्थ मंत्री—
श्री समीरमलजी जैन

केन्द्रीय विधि मंत्री—
श्री भंवरलालजी वकील बी. ए., एल-एल. बी.

उक्त पदाधिकारी गणों की १३ सदस्यीय केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति घोषित की गई है। इनके अलावा इस हेतु ५ सदस्यों का नामांकन केन्द्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा होगा जिनकी घोषणा अभी शेष है।

उक्त सदस्यों के अलावा परिषद शाखाओं द्वारा निर्वाचित होकर आये प्रतिनिधि गणों की प्रान्तीय कार्यकारिणी गठित की गई है जो अपने अपने प्रान्त की व्यवस्था तथा समस्याओं पर विचार करेगी।

(उक्त चुनाव दिनाङ्क ८ मई १९६२ को परिषद के प्रतिनिधिगणों के बीच निर्विघ्नता पूर्वक निर्विरोध सम्पन्न हुए)

निर्वाचन के तुरन्त बाद पदाधिकारियों ने शपथ ग्रहण की जिन्हें केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील ने गुरुदेव की साक्षी तथा सत्य निष्ठा से शपथ दिलवाई। शपथ विधि उसी समारोह में सम्पन्न हुई। शपथ लेने वालों में श्री सौभाग्यमलजी सेठिया, श्री माधवसिंह जी चौधरी, श्री मदनलालजी करनावट, श्री राजमलजी जैन, तथा श्री कुन्दनलालजी काकड़ीवाला थे।

परिषद् अधिवेशन को पूज्य मुनिवरों के आशिर्वचन

उद्घाटन समारोह में

परिषद् को पुष्ट बनाईये इसलिये कि समाज में
कुछ काम करना है तो !

—मुनि विद्याविजय

खुले अधिवेशन में

समाज की प्रगति के लिये परिषद् को अपनाईये,
यह गुरुदेव का संदेश है।

—मुनि जयन्तविजय

एक संस्मरणात्मक आंखों देखा हाल—

परिषद् का चतुर्थ अधिवेशन

●— सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा

मालवा हो या मारवाड़, निमाड़ हो या गुजरात जहां जहां भी परिषद् की दुन्दुभि के स्वर सुनाई दिये जनता ने, नागरिकों ने, समाज ने तथा संगठन प्रेमियों ने उसका हृदय से स्वागत किया, अभिनन्दन किया तथा उसके उद्देश्यों को अपनाने की शपथ लेकर समाज के भविष्य के यशस्वी बनाने का संकल्प किया। यह एक अतिशयोक्ति नहीं वस्तुस्थिति हैं जिसके कारण परिषद् ३ वर्ष का शैशव व्यतीत करने बाद ही इतनी अधिक उन्नति की सीढ़ियां पार कर गई कि समाज के हर अंग ने उसे गले लगाकर आशिर्वाद दिया तथा स्वर्गीय परम पूज्य गुरूदेव श्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज द्वारा संस्थापित इस संस्था के स्वप्नों को साकार बनाने में योग दान दिया !

प्रथम अधिवेशन पावन पवित्र तीर्थ मोहनखेड़ा में हुआ था, दूसरा रतलाम में तथा तीसरा खाचरौद में इस प्रकार क्रमशः विकास की ओर अग्रसर परिषद् ने मालव के बाद मरूधर में प्रवेश किया तथा 'फतापुरा' और 'आकोली' इन दो स्थानों ने उसे दुवाएं देकर बल प्रदान किया! दोनों स्थानों पर इसकी शाखाएं स्थापित हो गई।........वह पावन बेला भी आई जब दिनांक ७ मई ६२ को चतुर्थ अधिवेशन होने जारहा था।

● शानदार शोभा यात्रा

वैशाख शुक्ला चतुर्दशी सोमवार तदनुसार दिनांक ७ मई १९६२ को प्रातः आकोली की गलियों में विशेष सरगर्मी थी––क्यों न होती–आज परिषद् का चतुर्थ अधिवेन प्रारम्भ होने जा रहा था तथा उसके लाड़ले कर्णधारों का आगमन हो रहा था। स्फूर्ति के साथ सभी ने 'क्रांति' के स्वागत की तय्यारी की तथा सभी नागरिक गण ढ़ोल, डंकों, बैण्डबाजों के साथ मोटर स्टैण्ड की ओर बढ़ गये। पिछे पिछे आकोली का एक स्वयम् सेवक दल मार्च पास्ट करता हुआ जारहा था तथा उसके भी पिछे अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का मालव क्षेत्रीय स्वयम् सेवक दल बढ़ रहा था। मैंने देखा प्रायः लगभग ९ बजे उष्ण तथा शुष्क नदी को पारकर सड़क पर पहुँच गये थे तथा बिगुलों द्वारा माननीय नेताओं के आगमन की घोषणा हो चुकी थी........किन्तु क्या खाकी वर्दी में 'लेफ्ट-राईट' करता हुआ एक दल और बढ़ता आरहा था, शायद यह आहोर का स्वयम् सेवक दल था....जी ! हां अनुमान बिलकुल ठीक रहा। केन्द्रिय अध्यक्ष माननीय श्री सौभाग्यमलजी सेठिया बी. ए. एल. बी. वकील तथा केन्द्रिय उपाध्यक्ष माननीय श्री माधवसिंह जी चौधरी प्लीडर सड़क के एक किनारे पर निर्मित पर्ण कुटी से शायद आकोली के विहंग दृश्य का अवलोकन कर रहे थे कि पंच श्री त्रिलोकचन्द जी, परिषद् अध्यक्ष श्री नवलमल जी, परिषद् मंत्री श्री बाबुलाल जी ने उन्हें रेशमीन मालाओं से लाद दिया ! श्री सेठियाजी मेवाड़ी वेश में थे शेरबानी श्वेत चुड़ीदार पाजामा तथा केशरीया साफा ! श्री चौधरी जी पास ही पेंट तथा बुशर्ट में खड़े थे। दोनों नेताओं के अभिनन्दन के पश्चात् शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई किन्तु श्री करनाट जी तथा श्री काकड़ी वालाजी अपने साथियों सहित अभी आना शेष थे। उनकी प्रतीक्षा की गई तथा स्वागत करने के उपरांत शोभा यात्रा आगे बढ़ी, आगे आगे खाचरौद का महावीर बैण्ड था तथा पिछे तीनों स्वयम् सेवक दल (आकोली, आहोर तथा मालव क्षेत्रीय) अपने अपने ध्वजा के साथ दो दो की कतार में चल रहे थे। कुल स्वयम् सेवकों की संख्या लगभग १५० थी। तीनों दल भगवान महावीर जय 'वन्दे वीरम' आदि ननादों के साथ अपने गीत गा रहे थे। पीछे आकोली वासियों का झुण्ड तथा बाहर से आये नागरिकों के साथ परिषद् के नेता चल रहे थे।

ज्यों ही शोभा यात्रा गांव में पहुँची गोखड़ों तथा छज्जों पर खड़ी महिलाओं ने मंगल गीत तथा अक्षत वर्षा के साथ परिषद् के संचालकों का स्वागत किया। हजारों जनता ने शोभा यात्रा को देखा जिसकी छटा अभूतपूर्व थी। हजारों जनता ने शोभा यात्रा परिषद् मण्डप में आकर विसर्जित हुई जहां वह एक समारोह में परिवर्तित होगई। जहां श्री ऊकचन्दजी वकील (भीनमाल) ने ध्वज वंदन की रस्म अदा की।

● उद्घाटन–समारोह

परिषद् अधिवेशन का उद्घाटन समारोह फालना मण्डली के स्वागत गीत से हुआ! आपने नेताओं के स्वागत में फालना मण्डली ने नयनाभिराम नृत्य के साथ उनका सम्मान किया तथा मुनि श्री ने मंगलाचरण द्वारा मंगल कार्य की शुरूआत की मंगल कामना की! परिषद् शाखा मंत्री श्री बाबुलालजी ने स्वागत भाषण पढ़ा तथा वह वितरित किया गया। उद्घाटन हेतु बागरा निवासी श्री जेठमलजी खूमाजी से निवेदन किया गया उनने उद्घाटन भाषण के पश्चात् मुनिप्रवर्त्तक श्री विद्याविजयजी ने शुभ कामनाओं के साथ परिषद् को पुष्ट बनाने की अपिल की। उद्घाटन ज्योति प्रज्जवलन द्वारा हुआ वह ज्योति सारे मारवाड़ को आलोकित कर देगी यही शुभ आशा चारों ओर से टपक रही थी। अब जनता श्री सेठियाजी के भाषण को सुनने के लिये लालयित थी! श्री सेठियाजी उठे आभार प्रदर्शन की रस्म अदा की तथा परिषद् के उसूलों पर एक शानदार भाषण दिया। दोपहर के १२ बज चुके थे समारोह संक्षिप्त रूप में ही सफलता पूर्वक समाप्त हो गया।

● कार्यकारिणी की बैठक

भोजन तथा विश्राम के बाद दोपहर को केन्द्रिय कार्य समिति की बैठक प्रारम्भ हुई श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील की अध्यक्षता तथा तथा मुनि श्री जयन्तविजयजी महाराज के सानिध्य में जिसमें समाज व्यवस्था तथा परिषद् प्रगति पर काफी विचार विमर्श हुआ तथा प्रगतिशील प्रस्ताव पारित किये गये। जिनमें भीलड़िया जैन तीर्थ पर लगे यात्री कर का विरोध, जैनगुरूकुल की स्थापना हेतु, त्रिस्तुतिक जैन समाज की जनगणना आदि सम्बन्धि प्रगतिशील प्रस्ताव प्रमुख हैं। श्री सेठियाजी ने परिषद् की समस्याओं तथा समाज की स्थिति का एक सुन्दर चित्र खींचा तथा परिषद् को अत्याधिक सहयोग देने की अपील की। भीनमाल निवासी श्री ऊकचंदजी वकील तथा जेठमलजी वकील ने पूर्ण आश्वासन दिया कि वे मरूधर से पूर्ण सहयोग दिलवायेंगे। बैठक में श्री भंवरलालजी वकील ने भी इस हेतु सहमति प्रकट की। आभार प्रदर्शन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

● विराट आम सभा

रात्रि को 'पंचों की पेढ़ी' के सामने मण्डप में एक विराट् आमसभा श्री जेठमलजी वकील (भीनमाल) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। आमसभा में श्री ऊकचंदजी वकील ने समाज की स्थिति पर भाषण देकर कारण सहित प्रकाश डाला। श्री माधवसिंहजी चौधरी वकील ने परिषद् और समाज का सामंजस्य बतलाते हुए घोषणा की कि समाज की प्रगति परिषद् की प्राप्ति में निहित है। श्री राजमलजी लोढ़ा ने परिषद् पर प्रकाश डाल कर अपील की कि समाज को भविष्य को सुन्दर बनाने के लिये परिषद् को अपनाना आवश्यक है। श्री सोहनलालजी लहरी के ओजस्वी गीत तथा श्रीचंदजी के संगीत के बाद अध्यक्ष महोदय ने प्रकाश डालते हुए समाज व्यवस्था पर विचार प्रकट किये। आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम तो समाप्त हो गया किंतु आमसभा की भारी भीड़ ने परिषद् के प्रति प्रेम को तो जतलाया ही यही नहीं परिषद् प्रचार के लिये संकल्प भी किया।

(शेष पृष्ठ ७१ पर देखिये)

परिषद् ध्वजोत्तोलन....!

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के चतुर्थ अधिवेशन के शुभारम्भ के पूर्व श्री ऊखचन्दजी वकील भीनमाल ने ध्वजोत्तोलन की रस्म अदा की। चित्र में वीर केशरीया गगन चूम रहा है और विशाल जनसमुदाय जयनाद कर रहा है। पृष्ठभूमि में परिषद् अधिवेशन का सजा सजाया मंडप दिख रहा है

परिषद् अधिवेशन का उद्घाटन

परिषद् के अधिवेशन का उद्घाटन श्री जेठमलजी सा० बागरा निवासी ने ज्योति प्रज्ज्वलन द्वारा सम्पन्न किया। चित्र में मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा० विराजमान हैं तथा अध्यक्ष श्री सेठियाजी मंच पर बैठे हुए है। श्री जेठमलजी आशिर्वाद मुद्रा में खड़े हैं तथा श्री सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा उनका मुद्रित उद्घाटन भाषण पढ़ते हुए।

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के
चतुर्थ अधिवेशन में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव क्रमांङ्क १

परमविदुषी साध्वीजी श्री मोती श्री जी. तथा धर्मनिष्ठ, दानवीर सेठ श्री भुदर भाई जवेरी थराद निवासी के दुखद निधन पर।

—श्री सौभाग्यमलजी सेठीया

—श्री माधवसिंहजी चौधरी

२ मिनिट के मौन के पश्चात् निम्न प्रस्ताव सर्वानुमति से पारित किया गया। "अखिल भारतीय श्रीराजेन्द्र जैन नवपुवक परिषद् विदुषि साध्वी जी श्री मोती श्री जी महा. तथा समाज के आगेवान धर्म निष्ठ, दानवीर सेठ श्री भूदर भाई जवेरी थराद निवासी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। तथा शासन देव से दिवगंत आत्माओं को शान्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना करती है।"

प्रस्ताव क्रमांङ्क २

प्राचीन जैन तीर्थ भीलड़ीया पर ग्राम पंचायत द्वारा लगाये गये यात्री कर के सम्बन्ध में।

—श्री सौभाग्यमलजी सेठीया

—श्री माधवसिंहजी चौधरी

निम्न विरोध प्रस्ताव सर्वानुमति से स्वीकृत किया गया।

"अखिल भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् प्राचीन जैन तीर्थ भीलड़ीयाजी पर जाने वाले यात्रीयों पर ग्रा. पं. द्वारा लगाये गये यात्रीकर का घोर विरोध करती है और उसके हटाये जाने बाबत गुजरात सरकार एवं केन्द्रीय शासन से अनुरोध पूर्वक निवेदन करती है।"

नोटः—यह प्रस्ताव समस्त शाखाओं की ओर से गुजरात सरकार को भेजा जावे जिसकी प्रतिलिपि केन्द्रीय सरकार को प्रेषित की जावे।

प्रस्ताव क्रमांङ्क ३

अखिल भारतवर्षीय त्रिस्तुतिक जैन समाज की जनगणना के सम्बन्ध में:—

—श्री माधवसिंहजी चौधरी

—श्री सौभाग्यमलजी सेठीया

काफी विचार विमर्श के बाद निर्णय किया गया की अखिल भारतवर्षीय त्रिस्तुतिक जैन समाज की जनगणना करवाई जावे तथा इस हेतु समस्त शाखा परिषदों को शीघ्र कार्यवाही सम्पन्न करने का निर्देश दिया जाय।

प्रस्ताव क्रमांङ्क ४

जैन गुरुकुल स्थापित करने के लिए

—श्री बालचन्दजी जैन

—श्री राजमलजी जैन

"अपने केन्द्र स्थल की उन्नति होना अति

आवश्यक है; केवल धर्मशाला बनाने से कार्य पूर्ति नहीं होती अतः वहां एक जीवित कार्यक्रम के निमित्त एक सुन्दर गुरुकुल (उच्चादर्श) की प्रस्थापना हो, जिसमें धार्मिक शिक्षण आवश्यक हो।"

इस मूल प्रस्ताव पर काफी विमर्श हुआ तथा निर्णय किया गया कि इसकी योजनाओं तथा प्रारम्भिक कार्यवाही हेतु एक समिति गठित की जाय जो अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत दो माह की अवधि में की जावे।

समिति में निम्न महानुभाव नियोजित किये जाते हैं।

(१) श्री उकचन्दजी सा. वकील, भीनमाल (२) श्री जेठमलजी सा. वकील भीनमाल (३) श्री इन्द्रमलजी भगवानजी बागरा (४) श्री छगनलालजी आहोर (५) श्री शान्तिलाल जी बख्तावरमलजी आहोर (६) श्री सौभाग्य मलजी सेठीया निम्बाहेड़ा (७) श्री राजमलजी लोढ़ा, मन्दसौर।

प्रस्ताव क्रमाङ्क ५

पर्दा प्रथा के सम्बन्ध में

—श्री जेठमलजी लूणावत
—श्री ओंकारलालजी जैन

परिषद् पर्दाप्रथा का घोर विरोध करती हुई इस हेतु बालिकाओं तथा प्रौढ़ महिलाओं में शिक्षा का प्रचार किया जाय।

प्रस्ताव क्रमाङ्क ६

आकोली जैन समाज के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव।

—श्री सौभाग्यमलजी सेठीया
—श्री माधवसिंहजी चौधरी

परिषद् जैन समाज आकोली द्वारा इस आयोजित परिषद् के अधिवेशन में दियेगये अपूर्व सहयोग के प्रति धन्यवाद का प्रस्ताव पारित करती है। तथा भविष्य में इसी प्रकार के सहयोग की आशा करती है।

प्रस्ताव क्रमाङ्क ७

विधान परिर्वतन हेतु (श्री अध्यक्ष के सौजन्य से)

—श्री सौभाग्यमलजी सेठीया
—श्री माधवसिंहजी चौधरी

इस हेतु निम्न सदस्यों की एक समिति नियोजित की जाती है।

(१) श्री जेठमलजी सा. वकील (२) श्री भंवरलालजी वकील (३) श्री कस्तूरचन्दजी सा. वकील (४) श्री ऊकचन्दजी सा. वकील (५) श्री माधवसिंहजी सा. वकील।

नोटः—परिषद के अखिल भारतीय रूप हो जाने से परिषद विधान में आमूल तथा व्यापक परिवर्त्तन किये गये हैं जो स्थानाभाव के कारण प्रकाशित नहीं किये जा रहे हैं। जो महानुभाव देखना चाहें १ रु. शुल्क प्रति कापी केन्द्रीय कार्यालय को भिजवादें।

परिषद् के परामर्शदाता

मुनि श्री जयन्तविजयजी महाराज

जिनका प्रेरक मार्गदर्शन परिषद् को सबलवाणी प्रदान कर,
उसके भविष्य को यशस्वी बना रहा है.

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के

चतुर्थ अधिवेशन

पर डाक, तार तथा संचार व्यवस्था द्वारा प्राप्त

शुभ सन्देश

बैरिस्टर श्री शिवलाल टी. पोरवाल,
जालोरी गेट, जोधपुर.

अ. भा. श्री रा. जै. नव. परिषद् का वार्षिक अधिवेशन दिनांक ७ व ८ को आकोली में होने जा रहा है। इस बात की बड़ी खुशी है, ऐसे अधिवेशन जैन युवकों के चरित्र निर्माण व मानसिक स्थिरता व अहिंसक प्रवृत्ति को काफी हद् तक सक्रिय मदद करेगा और आजकल के विज्ञान के युग में अगर नैतिक सन्तुलन मनुष्य मात्र का नहीं रहा तो विश्व शान्ति खतरे में रहेगी और तमाम मानव जाति को भले भारती हो या विदेशी राष्ट्रों में रहने वाले मानव तो अपना जीवन निर्वाह शांति से नहीं कर पायेंगे और दिन प्रतिदिन हिंसक प्रवृति के लगाव में मानव का जीवन आ जाने से किसी राष्ट्र में भावात्मक एकता निर्माण नहीं हो सकती और समाज देश के लक्ष्य से हम सदैव के लिए दूर ही रहेंगे।

गुरुदेव श्री मद्विजय यतिन्द्र सूरीश्वर जी महाराज के उपदेश व आशिर्वाद से निर्मित व स्थापित इस अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नव० परिषद् की नींव ऐसी लगे (महावीर स्वामी से प्रार्थना करता हूँ) कि यह परिषद् न केवल राजस्थान या भारत के चरित्र निर्माण का ही काम करे लेकिन विश्व के मानव के कल्याण का संदेश लेकर काम करने का अवसर इस परिषद् को प्राप्त हो यह तभी हो सकता है कि जब हम सब इस बात में विश्वास रखने वाले लोग तन मन धन इस कार्य को हाथ में जो लिया है उसे पूर्ण रूप से सक्रियात्मक कदम आगे बढ़ते चलें तो मुझे पूरा विश्वास है कि जो भावना गुरुदेव महाराज की थी वह निश्चित सफल हो के हो रहेगी। मुझे दुःख है कि मैं कार्यवश इस अधिवेशन में भाग न ले सकूंगा, मैं कोशिश करूँगा ८ को अगर आ सकूँ, लेकिन अगर मैं असमर्थ रहूं तो मुझे माफ कीजिये। मैं अधिवेशन की सफलता चाहता हूँ और महावीर स्वामी से प्रार्थना करता हूं कि इस अधिवेशन को एक 'आदर्शभूत' अधिवेशन बनावें जिससे

दूसरे नवयुवक इसके मार्ग दर्शन का लाभ उठावें।

परिख चंदुलालजी दलसुखभाई, बम्बई—

"महत्व ना कामों ना लीधे हु आवी सकु तेम नथी तो मने माफ करस्यो अने गुरु महाराज नी दया थी, आपना सामे जो आ दुनियां मां भयाति हसे ते चौकस आप श्री जे प्रमाणे कहेस्यो ते प्रमाणे सेवा करवानी खात्री आंपु छुं परिषद् नीं सफलता इच्छुं छुं।" तार के द्वारा भी सूचना प्राप्त हुई।

Sorry can not accept invitation letter follows.

थराद जैन युवक मण्डल, आणंद—

"गामे गाम जैन धरमनी ध्वजा फरके अने जैनु सुं छे ते जैन अने जैनेत्तर जनता समझे ते माटे प्रयत्नों थवा जरूरी छे, अने समाज ना आगेवानो ऐ संगठन करी, आगर आवंवु आवश्यक छे, अधिवेशन मां दरेक कार्यो में सफलता थावो तेवी हमारी प्रभु पासे प्रार्थना छे।"

श्री पुनमचन्दजी नागनलालजी दोषी, मुख्य अध्यापक, ताल्लुका शाला, डीशा जि० बनासकांठा।

"आमन्त्रण मल्यु महावीर देवनां प्ररूपेला जैन मार्गानुसारी राह ने आज काल ना नवयुवानँ भुले छे, कलिकालनी छाया मां अनजायी रत्न त्रयी थी विमुखता जाय छे, तेवा समय आं परिषद् द्वारा समाज ना पतित जनो नी उद्धार करी जैन धर्म नी उन्नति नां श्रेयकारी मार्गो जनता आंगण रंजु थसे परिषद् नी सफलता इच्छुं छुं। प्रभु तेमनां कार्य मां सहायक थयी धर्म नो सभाज नो उद्धार थाय ऐवी प्रार्थना।"

श्री राजमलजी पोरवाल, नीमच.

"परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि जो अधिवेशन होने जा रहा है उसमें अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हो ताकि परिषद् चतुर्मुखी उन्नति करे।"

श्री उदयभानजी प्रेमचन्दजी, बम्बई.

"अधिवेशन का आमन्त्रण पत्र मिला, हमारे बाबूजी का लड़का एकाएक बीमार हो जाने से इस अवसर पर उपस्थित नहीं हो सकूंगा, इसका खेद है। अधिवेशन का कार्य शांति से पूर्ण ही यह मैं चाहता हूं। इस अवसर पर ठोस कार्य करें।"

श्री मांगीलालजी 'किसान नेता' मन्दसौर.

"Best wishes Adhiveshan success" (टेलीग्राम द्वारा)।

श्री चांदमलजी सिरोहिया, निम्बाहेड़ा (राज.)

"आवश्यक कार्यों से उपस्थित न हो सकूंगा, अधिवेशन की सफलता के लिये शुभ-कामना। विश्वास, प्रेम, सहयोग, ईमान आदि गुणों का आदान प्रदान होगा, जीवन में ऐसे प्रयत्न आये दिन होना ही चाहिये। तन तोड़ परिश्रम से आये दिन ऐसे शुभ कार्य हो रहे हैं। इसके लिये कोटि-कोटि बधाई है।"

देसाई चंद्रकान्त केशवलाल, पालनपुर (गुज.)

"आपनी आमन्त्रण पत्रिका मली, अधि-वेशन मां आव्वां माटे बहुत इच्छा हति, पण अनिवार्य संजोगा अनुसार आवी शकेल नथी।"

अधिवेशन नी दरेक रित सफलता इच्छुं छुं. अने जे जे कार्यवाही थाय ते दरेक रिते सफल नीबडे तेवी आशा राखुं छुं।

श्री पंडित लालचन्द्र भगवान गांधी, बड़ौदा.

"शुभ कार्यों की हम अनुमोदना करते हैं

तथा अ. भा. श्री रा. जै. नवयुवक परिषद् के अधिवेशन के लिए शुभेच्छा दर्शाते हैं। समाज की उन्नति हो।"

श्री लक्ष्मीचंद्र जैन 'सरोज' एम.ए.

'प्रतिष्ठा एवं परिषद् सम्बन्धी दोनों निमन्त्रण पत्रिकाएं यहाँ यथा अवसर पर आ गई थी। यदि मैं वहाँ किसी भी प्रकार आ पाता तो मुझे बड़ी खुशी होती पर कुछ अशुभ कर्म जन्य घरेलू उलझनों के कारण आने में असमर्थ हूं। अतएव अपने आराध्य देव आदिनाथ से लगाकर भगवान् महावीर तक, सभी तीर्थंकरों से यही प्रार्थना है कि वे संघ के सदस्यों और परिषदों के प्रतिनिनियों को अपने धर्म और समाज के प्रति वहुत कुछ कार्य कर सकने के लिए अपूर्व बल एवं उत्साह दें। दूसरे शब्दों में प्रतिष्ठा सही अर्थों में धार्मिक वातावरण का निर्माण करके जनता के जीवन का धरातल उन्नत कर सकने में समर्थ हो और परिषद् का अधिवेशन धार्मिक-सामाजिक तथा शैक्षणिक सभी दृष्टियों से आदर्श एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हो।"

श्री शान्तिलाल पारिख, कुक्षी

"मैं इस वर्ष सम्मेलन में सम्मिलित नहीं हो सकूंगा कृपया क्षमा करें, परिषद् के प्रति मेरा उत्साह आज भी वही है और सदैव रहेगा, परिषद् के लिए मैं हूँ और मेरा जीवन है।"

श्री पोपटलाल धरू, थराद

"अनिवार्य कारणो ने लीधे हुँ आवीशकुं तेम नथी, शुभ प्रसंग पू० गुरूदेव की कृपा से सफल नीवड़ो, आजनी आ परिस्थिति मां त्रण वर्ष का परिषद् कुदके अने भुसके प्रगति करे ती थाय छे, समाज नी अन्दर ना सड़ाओ धीमे-धीमे दूर थाय छे, परिषद्मां सामेल थया लोकाकर्षण थये जाय छे, अने साविमां पण परिषद् पोताना उद्देश्य ने लक्षमां राखी मालवा, मारवाड़ अने गुजरातमाँ तेनो नाद जोर शोर से रजु करशे तेनी प्रार्थना गुरूदेव प्रत्ये करूं छे।"

बाबूलाल जैन, बड़ी सादड़ी (राज०)

"इस पूनित अवसर के साथ ही वहाँ पर जाति के वार्षिक अधिवेशन होने के समाचारों से अवगत हुआ। मेरी अधिवेशन में सक्रिय भाग लेने की हार्दिक इच्छा थी, लेकिन कार्याधिक्य होने की वजह से आने में असमर्थ हूँ। अधिवेशन की सफलता चाहता हूँ।"

श्री पन्नालाल जैन, टाण्डा

"Accept My best wishes for success"

श्री मनोहर सुराणा, नीमच छावनी

"दुःख एवं वेदना है इस मन को अधिवेशन में सम्मिलित न होने के कारण। यहीं से शुभकामनाएं एवं सदेच्छाएँ हैं हमारी उस कार्यक्रम के लिये जो वहां सम्पन्न होने जा रहा है! गुरुदेव श्री राजेन्द्र के शुभाशीर्वाद से सब कार्य मंगलमय व सानन्द सम्पन्न हो ऐसी शुभकामनाएँ हैं हमारी।"

समाज उत्थान के लिये—

परिषद् का आविर्भाव

(चतुर्थ अधिवेशन पर प्राप्त एक शुभ संदेश)

राजगढ़
२-५-६२

यह जो श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक-परिषद् का वार्षिक अधिवेशन हो रहा है इसका समाज उत्थान के लिये भारी महत्व है ।

आज के इस प्रगति-शील युग में हर समाज उत्थित होकर मानव-समाज में आगे आने का प्रयास कर रहा है । सभी अपनी अपनी विचार धाराओं को विश्व के प्रांगण में द्रुत-गति से फैलाने का प्रयास कर रहे हैं । इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए "परिषद्" भी समाज को योग्य दृष्टि-कोण देने हेतु वार्षिक समारोह का आयोजन कर हर विषय पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है ।

यद्यपि परिषद् के माध्यम से समाज संगठन का कार्य प्रारम्भ हुआ है किंतु प्रबल संगठन तो जब ही हो सकेगा जब कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस संगठन को अपना समझ कर इसे बढ़ाने का प्रयास करेगा ।

समाज के हर छोटे बड़े कार्य किसी न किसी प्रकार से सम्पन्न तो होते ही हैं किन्तु समाज की आंतरिक दशा में सुधार नहीं हो पा रहा है। इस ओर समाज के विचारवान व्यक्तियों ने गम्भीरता से विचार करना चाहिये ।

श्री रा० जै० न० युवक परिषद् की स्थापना का मूल उद्देश्य ही समाज सुधार व संगठन है । समाज के अनेक व्यक्ति अभी इस संगठन की क्रिया से प्रथक हैं इस अधिवेशन में सम्पूर्ण समाज ने इस संगठन को अपना कर सफलता प्रदान करना चाहिये ।

अपना जैन-समाज एक विशाल वट् वृक्ष के सदृश्य है । यद्यपि साम्प्रदायिक भेदों के कारण कभी-कभी हम प्रथकता का आभास पाते हैं किन्तु हमें तो अब इन विचारों को महत्व देना चाहिये कि हम सभी भगवान महावीर के सिद्धान्तों के अनुयायी हैं । सभी सम्प्रदायों के मूल प्रेरणा की जड़ वे ही हैं ।

अधिक भाषण बाजियां ही केवल समाज के लिये लाभदायी सिद्ध नहीं होती । प्रत्यक्ष-रूप से कार्य-कर्त्ताओं को अपनी सम्पूर्ण योग्यता से समाज में सौहार्द का वातावरण निर्माण करना पड़ेगा ।

मुनि-समुदाय से भी मैं आग्रह-पूर्वक निवेदन करता हूं कि उन्हें भी इस संगठन में सक्रिय सहयोग देकर समाज को संगठन में जुड़ जाने हेतु आव्हान् करना चाहिये । इस युग में अलगाव की भावना नष्ट कर देगी ।

माननीय अध्यक्षजी की शोभायात्रा

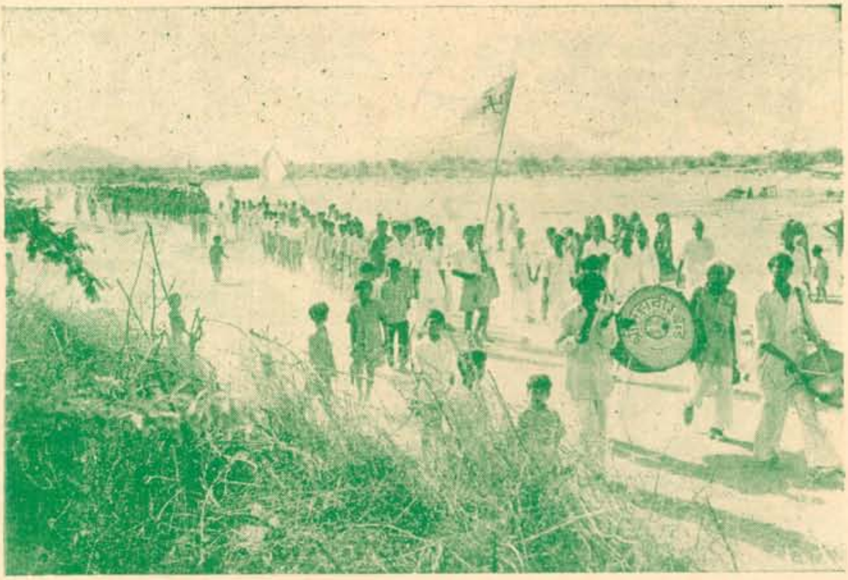

आकोली मोटर स्टैण्ड पर पहुँचते ही परिषदाध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठया वकील का भव्य अभिनन्दन किया गया। चित्र में उनके सम्मान में निकाली गई शोभायात्रा का अग्र भाग। सबसे आगे महावीर बैंड स्वागत गीत गारहा है पीछे आकोली दल, परिषद् मालव क्षेत्रीय दल तथा आहोर दल अपने अपने ध्वजों के साथ मार्चपास्ट करते बढ रहे हैं।

....भव्य अभिनन्दन

ज्योंही शोभायात्रा अधिवेशन मण्डप में पहुँची श्री सेठियाजी के सम्मान में फालना मंडली के बालकों ने सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। चित्र में मंच पर परिषद् कर्णधार बैठे हैं तथा नीचे फालना मंडली कार्यक्रम कर रही है।

राजस्थान के आकोली नगर के सभी बन्धुओं को मैं धन्यवाद के साथ निवेदन करता हूं कि आपने अपने यहाँ अधिवेशन करवाकर समाज उत्थान में योग दान दिया है परिषद् आपकी आभारी है।

बन्धुओं! इस नवीन संगठन की बागडोर योग्य एवं कुशल संगठन कर्त्ताओं के हाथ में है। समाज के उत्थान हेतु ही इसका आविर्भाव हुआ है। हमारे इस छोटे से प्रयास से अनेक योग्य एवं नौजवान कार्यकर्त्ताओं का समूह समाज में दृष्टि गोचर हो रहा है यही समाज की महान् शक्ति है जो संगठित होने पर आशा के फूलों का हार बना देगी।

मारवाड़, मालवा, गुजरात इन तीन प्रांतों में (त्रिस्तुतिक-समाज) अपना अधिक विस्तार है। अतएव मारवाड़ निवासियों से अधिक आर्थिक सहयोग प्रदान कर देश में फैले हुए सभी लोगों का हम एक विशाल संगठन बना सकें इसके लिये योग्य प्रचारकों को हमें समझाने के हेतु भेजना पड़ेगा।

अपने समाज में अनेक युवक हैं वे योग्य हैं और वे समाज सेवा भी करना चाहते हैं किन्तु आज उनके सामने कोई व्यवस्थित कार्यक्रम नहीं है इस कारण उनकी शक्ति का अपव्यय हो रहा है। जब समाज के हर नौजवान को यह दिखेगा कि—मेरा भी थोड़ा उपयोग इस योग्य कार्य के लिये होना चाहिये तो वह स्वयं की प्रेरणा से ही काम करेगा।

श्री मोहन खेड़ा-तीर्थ का चतुर्मु खी विकास हो इस हेतु अखिल-भारतीय-स्तर पर एक कमेटी का निर्माण किया जावे। कुछ उत्साही एवं योग्य लोगों को ही इस समिति में लेना चाहिये।

आर्थिक विकास के लिये मध्यम वर्गीय व्यक्तियों को आपस में सहकारिता की भावना से लघु उद्योगों का विकास करना चाहिये। आपस के संगठन से शक्ति भी पैदा होगी और सम्पत्ति की भी प्राप्ति होती है। समाज के हर पैसेवर एवं प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्तियों को चाहिये कि वे समाज की गरीबी एवं बेरोजगारी मिटाने में सहयोग करें।

सबसे ऊँचा एवं आदर्श-वादी समाज ही आज गर्त में चला जा रहा है। ज्ञान का पुजारी आज माया का दास बन रहा है इसीलिये सभी कोमों में अंधेर गर्दी बढ़ती जा रही है। हर व्यक्ति आज अपने को प्रथम मानकर चलता है इसी कारण वह दुःखी भी है।

एक योग्य गुरुकुल का निर्माण भी इसी अधिवेशन में होना चाहिये। मोहन-खेड़ा-तीर्थ अत्यन्त उपयुक्त स्थान है अतएव पहिले यहाँ एक ज्ञान-शाखा स्थापित करनी चाहिये धीरे-धीरे यह संस्था उन्नत होकर देश व्यापी रूप धारण कर लेगी।

हर अच्छे कार्य में अच्छे व्यक्तियों का सहयोग मिलता ही है। इस बात को ध्यान में रखकर संगठन कर्त्ताओं को आशान्वित विचारों से ओत-प्रोत रहना चाहिये। इस संगठन को पूज्य गुरुदेव श्री का शुभ आशीर्वाद प्राप्त है अतएव उन्हीं का अनुयायी यह समाज अवश्य ही सहयोग प्रदान करेगा।

पू० गुरूदेव श्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी महा० सा० की जो अमूल्य सेवाएं समाज के लिये हुई हैं वे तो चिरस्मरणीय हैं, किन्तु उनके

अन्तिम स्वाँसों में भी यही स्वर था कि इस पुण्य भूमि पर एक जैन-धर्म की योग्य शिक्षा देने वाला आदर्श गुरूकुल हो। जिसमें पढ़कर विद्यार्थी जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ बनकर निकले। आज समाज यह अच्छी तरह जानता है कि शिक्षण के क्षेत्र में आज हमारा घोर पतन है। हमारी धार्मिक शिक्षा से आज का शिक्षण अलग है आज का विद्यार्थी धार्मिक संस्कारों से परे रहता है। उसके शरीर एवं मन पर विदेशियत का ही संस्कार आज भी पड़ रहा है।

यदा-कदा धार्मिक पाठशालाऐं हैं भी तो उनकी व्यवस्था ठीक नहीं है अतएव समाज को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। पिछले अनेक वर्षों से मैं इसी प्रयास में लग रहा हूं कि किसी भी प्रकार से समाज के द्वारा एक गुरू-कुल स्थापित हो, हुआ भी सही किन्तु स्थान के अभाव में उसे बन्द करना पड़ा अब तो मोहनखेड़ा तीर्थ पर भारी भवन निर्माण हो चुका है और जो इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये बनाया गया हैं, आज भी यदि समाज के प्रमुख अंग व परिषद् सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करे तो मैं आपको एक व्यवस्थित गुरुकुल चलाकर समाज की आवश्यकता की पूर्ति कर सकता हूँ।

समाज के कवियों व लेखकों को भी पारि-तोषिक देकर प्रोत्साहित करना चाहिये तथा गरीब विद्यार्थी जो होनहार हों किन्तु अर्थाभाव के कारण पढ़ नहीं पा रहे हों उनके लिये भी एक फण्ड होना चाहिये जो इसकी पूर्ति कर सके।

सामाजिक धन यदा-कदा झगड़ों के कारण रुका पड़ा है उसका उपयोग नहीं हो पा रहा है। जहां-जहां भी ऐसी सम्पदा हो वहाँ के समाज ने उसे निकलवाकर उचित उपयोग उस वस्तु का होना चाहिये। लाखों रुपया आज भी जैन-समाज के पास है किन्तु व्यवस्थित प्रबन्ध नहीं है। आज समाज में वर्ग-भेद की भावना व्याप्त है। अपना समाज दो हिस्सों में बँट रहा है। एक गरीब वर्ग है जो पिसता जा रहा है दूसरा धार्मिक वर्ग है जो बढ़ता जा रहा है। आज का धनिक-वर्ग यदि थोड़ा विचार करके देखे तो अपने समाज की गरीबी व बेकारी दूर करना है तो वे कर सकते हैं चाहिये अंतर में सच्ची भावना।

परिषद् पिछले ४-५ वर्ष से इसी प्रयास में है और हर अधिवेशन में इन्हीं विचारों को महत्व दिया जाता है। हमारे ये अधिवेशन समाज को योग्य दृष्टिकोण देने हेतु होते हैं— समाज के अनेक नवयुवक भी इस ओर बढ़ते ही जा रहे हैं। यदि हमारे समाज के समझदार व्यक्तियो ने से हमारे विचारों को समझ कर हमें सहयोग दिया तो फिर भविष्य में ही हम समाज की अनेक समस्याओं का हल योग्य रीति से निकाल सकेंगे।

अन्त में सभी उपस्थित महानुभावों से मेरी प्रार्थना है कि आप इस अधिवेशन से अधिक प्रेरणा प्राप्त कर अपने अपने स्थान पर जावेंगे और परिषद् की कार्यवाही को बढ़ायेंगे।

—बालचन्द जैन, राजगढ़

दुःख

(लेखक—श्री रूपचन्द जैन)

मनुष्य लोक में भी पीड़ा है, दुःख है, देवलोक में भी पीड़ा है, दुःख है, और नरक में तो निरन्तर हा-हा-कार मचा ही रहता है। ऐसा हम पढ़ते हैं, सुनते हैं तथा प्रत्यक्ष अनुभव भी करते हैं। और हम यह भी देखते हैं कि इन पीड़ाओं से बचने के लिए आदिकाल से आजतक हमेशा कुछ न कुछ क्रिया कर्म अवश्य हुए हैं, हो रहे हैं तथा होते रहेंगे।

मनुष्य-लोक में हम मानव दुःख के समय घबराते हैं चिल्लाहट मचाते हैं, लेकिन सुख के समय हम अपने आराध्य देव परमात्मा को भूल जाते हैं, यही भूल हमारी उन्नति में बाधक होती है, दुःख का कारण होती है।
कवि ने कहा है कि—

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय॥

विश्व की प्रचलित व्यवस्था में दुख का ही प्रधान स्थान है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि दुःख संसार का व्यवस्थापक है। जैसे—

भूख का दुःख न होता तो खेती या खाद्य-उत्पादन कौन करता? लज्जा जाने का दुःख न होता तो तन पर वस्त्र कौन पहनता और वस्त्र कौन बनाता? शीत, ताप और वर्षा का दुःख न होता तो मकान बनाने की क्या आवश्यकता पड़ती?

दुःख से बचने के लिए ही राज्य और राजाओं का निर्माण हुआ है। इस प्रकार हम देखते हैं कि दुःख रूपी विशाल मशीन में ही संसार की सारी व्यवस्थाएँ ढली हैं। और यह कहावत भी है कि—

"आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।"

दुःख न होता तो संसार की मशीन ही ग्रस्त व्यस्त हो जाती। दुःख ही मनुष्य को महान, बलवान और तेजस्वी बनाता है। संसार के इतिहास में हम जिन महापुरुषों के नामों को पढ़ते हैं, सुनते हैं, यदि उन सभी महापुरुषों के जीवन चरित्र का अध्ययन करते हैं तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि उनकी जो महत्ता है वह उनके कार्यों से भी बढ़कर उनकी दुःख सहन करने की क्षमता से है। उन्होंने दुःखों से जुझकर ही महत्ता प्राप्त की है। एक महान विचारक ने कहा है—

"सुख के संसार में विलास के कीड़े उत्पन्न होते हैं, और दुःख की दुनियाँ में दिव्य-शक्ति सम्पन्न पुरुषों का जन्म होता है।" यथा—

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने बनवास के घोर दुःख सहकर ही "मर्यादा पुरुषोत्तम" का पद पाया है। अनेकानेक [illegible]दनाओं को सहन करके

ही त्रिशलानन्दन "महावीर" कहलाये। हंसते हंसते प्राण देकर ईसा ईसाइयों के "आराध्य" बने। अंग्रेजों की लातें, घूसें तथा कारागार के कष्टों को सहन करने के पश्चात ही मोहनदास करमचन्द गान्धी "महात्मा" के पद के अधिकारी हुये। इन्हें तथा अन्य असाधारण पुरुषों को दुःखों ने जो महत्ता प्रदान की ऐसी महत्ता न कोई दे सका न दे सकेगा।

दुःख के साथ संघर्ष करते करते आत्मा में एक प्रकार की तेजस्विता तथा अन्तःकरण में दृढ़ता आती है, हृदय में बल आता है। दुःखों को सहन करने में विजय का स्वाद आता है। जिसका अनुभव सब को नहीं होता। अतएव दुःख हमारा शत्रु नहीं वरन मित्र है।

शत्रु तो वह मानसिक वृत्ति है जो आत्मा को दुःखों के सामने कायर बनाती है, और दुखों से दूर भागने के लिये प्रेरित करती है।

संसार में अगर दुःख है तो उन पर विजय प्राप्त करने की क्षमता भी हमारे अन्दर मौजूद है। उसको दूर करने के उपाय हैं। दुखों को जीतने का जो सच्चा उपाय है जो दिव्यशास्त्र है वह है परमात्मा की "सच्ची प्रार्थना"। लेकिन प्रार्थना भी दुःखों से बचने की नहीं वरन् दुःखों पर विजय प्राप्त होने की करना चाहिये। दुःख से बचने के लिये सोई हुई शक्तियों को जगाना है, प्रकाश में लाना है, विकसित करना है, जिससे हम स्वयं अच्छे विचारों की क्षमत्ता प्राप्त कर सकें तथा अपने कर्त्तव्यों का पालन कर सकें। अच्छे कर्मों को करके ही, विकारों को भस्म करके ही महत्ता प्राप्त महापुरुषों के आदर्शों को अपने समक्ष रख कर कल्याण का प्रयत्न करना चाहिये।

पाठकों से निवेदन है:—

समाज व परिषद् की उन्नति में योगदान दीजिये।

(१) शाश्वत के ग्राहक (वार्षिक) बनकर
(२) आजीवन संरक्षक बनकर
(३) दाता बनकर

शाश्वत धर्म का चन्दा (वार्षिक शुल्क) भेजने के स्थानः—

(१) श्री जगज्योत चन्द्र जी भण्डारी
श्री विद्यार्थीचंद जी भंडारी, व्यवस्थापक
हाथ करघा उद्योग, जोधपुर (राज०)

(२) श्री कुन्दनलालजी के. काकड़ीवाला
प्रचार मंत्री (केन्द्रिय)
अ. भा. श्री रा. जैन नव. परिषद्
अलिराजपुर वाया-दोहद (म. प्र.)

(३) श्री सुजानमलजी जैन
नीमचौक, रतलाम (म. प्र.)

(४) श्री शांतिलाल, बी. परिख
C/o श्री सरस्वति पुस्तक भण्डार
रतनपोल, अहमदाबाद (गुज.)

(५) श्री नवीनचन्द्र जैन
C/o पायरेक्स रेडीयोज, दो बत्ती रतलाम
या बजाजखाना, रतलाम (म. प्र.)

(६) श्री भंवरलाल जी छाजेड़
केन्द्रिय मंत्री अ. भा. श्री रा. जैन.
परिषद् नीमच (म. प्र.)

(७) श्री सौभागमल जी सेठीया, वकील
एडवोकेट, निम्बाहेड़ा (राज.)

परिषद् के सूत्रधार

श्री सौभाग्यमलजी सेठिया

बी० ए० एल-एल० बी० वकील

जिनकी संचालन शीलता, सुयोग्यता एवम् सबल कार्य क्षमता परिषद् के लिये भविष्य को यशस्वी के मार्ग को प्रशस्त कर रही है।

(पृष्ठ ६० का शेष)

दूसरा–दिन

● नवनिर्वाचन

प्रथम दिन की परिषद् अधिवेशन की अभूतपूर्व सफलता के बाद द्वितीय दिन उदित हुआ ! परिषद् के अधिवेशन मण्डप में नव निर्वाचन की रस्म प्रारम्भ हुई । मारवाड के श्री लहरी जी के अलावा कई प्रतीनिधी उपस्थित थे, गुजरात के श्री शांतिलाल जी पारिख तथा चन्द्रकान्तजी वोरा आदि उपस्थित थे ! मालवे के तो सभी थे ही ! समारोह समाज के प्रदेश की दूसरे प्रदेश के प्रति परिषद् माध्यम से हुई भावनात्मक एकता की ज्योती जला रहा था । नाम आये चुनाव की नई व्यवस्था थी । अध्यक्ष–१, उपाध्यक्ष–३, महामंत्री–१, उपमंत्री–३, इनका निर्वाचन होना था बाकी पदाधिकारियों का नियोजन केन्द्रिय अध्यक्षजी द्वारा होना था ! कार्यकारिणी के प्रस्तावों पर मान्यता लेने के बाद ज्यों ही चुनाव प्रारम्भ हुआ श्री माधवसिंहजी चौधरी ने लम्बी भूमिका और प्रशस्ती के साथ अध्यक्ष हेतु श्री सेठियाजी का नाम प्रस्तावित किया जिनका हर कोने से समर्थन हुआ ! श्री सेठियाजी ने उपाध्यक्ष पद के लिये श्री चौधरीजी का नाम उनकी पिछली सेवाओं के उल्लेख के साथ प्रस्तुत किया और बाद में क्रमशः सभी पदों का चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुआ । तथा सपथविधी सम्पन्न हुई चुनाव के बाद कार्यवाही समाप्त हुई तथा प्रतिनिधी गण भोजन, विश्राम हेतु रवाना हो गये ।

● भव्य खुला अधिवेशन

दोपहर को श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील की अध्यक्षता में भव्य खुला अधिवेशन प्रारम्भ हुआ बागरा की बालिकाओं के मंगलाचरण के साथ ! बाहर से आये शुभ संदेशों का वाचन श्री मदनलालजी करनावट ने किया तथा भाषणों का दौर प्रारम्भ हुआ । मुनिराज श्री जयन्त विजयजी महाराज ने कहा कि समाज विकास के लिये परिषद् की स्थापना स्वर्गीय गुरूदेव द्वारा की गई है अतएव समाज को इसे अपनाना ही चाहिये । मुनिराज श्री उद्बोधन के बाद श्री इंदरमलजी भगवानजी बागरा वालों ने परिषद् के सिद्धान्तों तथा कार्यविधी पर पहिले हिन्दी तथा बाद में मारवडी में ओजस्वी भाषण दिया । आपने समाज से अपील की कि हमें मरुधर में भी परिषद् को आवश्यक रूप से अपनाना है । मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी महाराज ने उपरान्त अपने ओजस्वी भाषण में समाज से अपील की कि वह परिषद् को अपनावे, ग्राम ग्राम में परिषद् द्वारा पाठशालाओं का संचालन कर भावी पीढ़ी का भला करें । श्री शांतीलालजी जैन के गीत के बाद श्री सौभाग्यमलजी सेठिया ने भाषण दिया जिनमें उनके प्रभावशाली ढंग से परिषद् की स्थापना पर प्रकाश डाला । श्री माधवसिंहजी चौधरी वकील, श्री राजमलजी लोढ़ा तथा श्री जेठमलजी वकील ने भी ओजस्वी भाषणों में समाज से बार बार अपील की कि वह परिषद् को तन मन धन से सहयोग दें । आभार प्रदर्शन के बाद समारोह समाप्त हुआ इसके बाद श्री लालचन्दजी आहोर वालों ने जावरा परिषद् द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित पत्रिका जैन जागृति का उद्घाटन किया ।

● आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम

रात्री को उसी मंण्डप में बागरा की बालिकाओं के मंगला चरण के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । थराद श्री यतीन्द्र जैन बैण्ड मण्डल ने बैण्ड पर अपने प्रशंसनीय कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसे जनता ने देखा और सराहा । सांस्कृतिक कार्यक्रम में युवक तरुण श्रीपुखराज जी पोरवाल ने मारवाड़ी कृषक का सुन्दर अभिनय किया तथा प्रतिष्ठोत्सव कविता गा गा कर लोगों को झुमा दिया जो अन्यत्र दी गई है कायक्रम बहुत सफल रहा कई अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किये गये जिससे लगभग ५ हजार जनता ने देखा और प्रशंसा की ।

इस कार्यक्रम के साथ परिषद् के शानदार चतुर्थ अधि[illegible] समाप्ति भी होगई ।

श्री वीशस्थानक तप उद्यापन उत्सव

भीनमाल (राज०)

यहां पर मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज के तत्त्वावधान में शा० ऊकचन्दजी आसूजी की धर्मपत्नी वीजुबाई की ओर से श्री वीशस्थानक तप का उद्यापन (उजमणा) उत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

एतदर्थ वैशाख सुदी पूर्णिमा से अष्टान्हिका उत्सव आयंबिल खाता में प्रारम्भ किया गया जिसमें प्रतिदिन विविध प्रकारी पूजन पढाई गई। रात्रि को भक्ति का कार्यक्रम रखा जाता था।

अन्तिम ज्येष्ठ विदी ७ को वीशस्थानक पूजन पढाई जाकर ज्ञान, दर्शन, चरित्र के उपकरण बढाये गये और यथाशक्ति स्वामिवात्सल्य किया गया।

मुनिराज श्री के तत्त्वावधान में प्रतिष्ठोत्सव जेठ सुदी ११ को सम्पन्न होगा। विविध आयोजन से पूर्ण कार्यक्रम होगा। प्रतिष्ठोत्सव के विस्तृत समाचार अगले अंक में पढिये।

सम्पादक की कलम का शेष

स्व० आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वर के इस आव्हान पर कार्तिक शुक्ला पूर्णमासी संवत २०१६ को 'श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्' उन्ही पुज्य श्री की निष्ठा में संस्थापन हुआ और उसके अन्तर्गत ग्राम २ और नगर २ में शाखाओं की स्थापना हुई और समाज में सर्वत्र संगठन की लहर उठी एवं सुशिक्षा का सुर्योदय हुआ, लेकिन कतिपय ग्राम और नगरों में ही समूचे भारत में फैले हुए समाज विघठन, अशिक्षा के रोग का इलाज नहीं हो सकता, उसके लिये सर्वत्र शाखाओं का स्थापन होना अनिवार्य था, तदरुप संस्था के प्रचारकों ने अल्पकाल में ही भागीरथ प्रयत्न कर मालव प्रान्त, निमाड़ क्षेत्र और गुर्जर देश में परिषद् की शाखाएं स्थापित की और अब मारवाड़ राजस्थान की ओर अपना प्रगति पथ किया एवं समाज में निर्मूल फैले हुऐ समाज-विघठन और अशिक्षा, कुरितियों का उन्मूलन कर समाज संगठन, सुशिक्षा एवं सुरिति का प्रचार प्रसार किया।

पुज्य गुरुदेव, आचार्य श्री का अन्तिम समय में यही आदेश और उपदेश रहा कि समाज को सुसंगठित और सुसिक्षित कर प्रगति के पथ पर अग्रसर करने का उद्देश्य ही परिषद् को उन्नत कर सकता है एतदर्थ प्रत्येक बन्धु का कर्तव्य है कि वे परिषद् को तन मन धन से अपनावें एवं सहयोग दें और उन्हीं पुज्य श्री की इस आदेश अनुपालना में परिषद के कर्तव्यनिष्ट कार्यकर्ता ने नगर २ एवं शहर २ घूमकर परिषद् का प्रचार एवं प्रसार करते हुए पुज्यपाद आचार्य पुज्य गुरुदेव श्री के उपदेश को समाज के सन्मुख रखते हैं, जिसमें समाज का स्वार्थ और हित छिपा है और अब प्रश्न यह रहता है कि परिषद् आपसे क्या चाहती है और परिषद् के अपनाने से क्या होगा परिषद् आपके सहयोग से सहकार-विकास चाहती है और परिषद की स्थापना से सुशिक्षा, सुसंगठन एवं कुरितीयों मे खर्च होने वाले धन की बचत व सच्चे स्वामीवात्सल्य की शिक्षा देती है, जिससे आपके इहलौकिक और परलौकिक में सुख की अभिवृद्धि होगी; अस्तु सब ही श्रावक श्राविकाओं से आग्रह है कि वे परिषद् के कार्यक्रमों में भाग लें एवं परिषद् के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क साधें, सहयोग दें एव स्वयं पार्षद बनकर देश धर्म एवं समाज की सेवा में रत हों, जिसमें आने वाली पीढियां आपके त्याग और बलिदान की गाथा पर गौरव कर सके जैसा कि आज हमें हमारे अग्रणी तीर्थंकरों, गणधरों एवं जिन शासन के महान श्रावक श्राविकाओं, सतियों पर गर्व है।

परिषद् के संचालक

[अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के पदाधिकारीगण]

केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं मालव प्रांतीय अध्यक्ष

श्री माधवसिंहजी चौधरी वकील

महामंत्री

श्री भंवरलालजी छाजेड़

केन्द्रीय उपमंत्री
मालव प्रांतीय प्रधानमंत्री

श्री मदनलालजी करनावट

परिषद् के चार उद्देश्य

समाज संगठन :: धार्मिक शिक्षा
समाज सुधार :: आर्थिक विकास

—० श्री सुरेन्द्रकुमार लोढ़ा ०—

चार दिशाओं से उठी आवाज विश्व के कण कण में व्याप्त हो भूतल को गूंजित कर देती है, चार कोनों से झंकृत स्वर सारे प्रांगण में संदेश प्रदान करते हैं और चार उद्देशों से बनी योजना समाज के भविष्य को यशस्वी तथा प्रशस्त बनाती है। श्री राजेंद्र जैन नवयुवक परिषद् के चार उद्देश्य आज समाज की उन्नति और प्रगति के लिये उन हिलोर खाती तरगों और लहरों के समान हैं जो बंजर भूमि में प्रवाहित होकर जन जन को शांति और सुख प्रदान करती हैं।

समाज संगठन

संगठन युग की मांग है और समय की आवाज। विगठित समाज उस रूपवति भिखारीन के समान है जो दर दर की ठोकरें खा कर विश्व में अपना अस्तित्व समाप्त कर देती है। वह समाज जो प्रेम और सद्भाव के प्रति लगाव न रखती हो, जिसे संगठन में विश्वास न हो वह इस बीसवीं सदी के वातावरण में जीवीत रह सके यह बिलकुल असंभव है. निरे स्वप्न के अलावा कुछ नहीं। आज विश्व के अस्तित्व के लिये भी भावनात्मक एक्यता, बन्धुत्व भाव और सहृदयता पर जोर दिया जाने लगा है, आज प्रत्येक राष्ट्र अपने को प्राणवान् बनाये रखने के लिये विभिन्न भाषा, धर्म, संस्कृति और सभ्यता के आराधकों के बीच की दिवालें तोड़ कर पास पास लाने का प्रणप्राण प्रयत्न करने लगा है वहां एक ही धर्म, एक ही विचार और एक ही आचार के मानने वाले संगठन से दूर और विषमताओं के पास जाते रहें यह एक विडम्बना ही है। युवक समाज की सम्पत्ति है तथा वर्त्तमान और भविष्य का सुन्दर संचालन ही उसी के हाथों सन्निहित है। युवकों की सुदृढता और निष्ठा ही समाज के भावी भविष्य के लिये अपेक्षित है। जिस समाज के नवयुवक अपने कर्तव्यों को भूल कर भौतिकवादी अन्धकार की गलियों में भटक गये उस समाज की पौ बारह पच्चीस ही समझिये। जिन नवयुवकों ने समाज के बुजुर्गों के आशिर्वाद से समाज संचालन नहीं सीखा उनकी समाज का विकास हो सका हो यह न भूत में सम्भव हुआ—न वर्तमान में हो सका- न भविष्य में हो सकेगा। इसलिये परिषद् ने समाज के निष्ठावान कार्यकर्ताओं का जिनमें समाजसेवा और समाजोत्थान के लिये एक लगन थी संगठन किया और समाजोन्नति के लिये उन्हें संदेश दिया। परिषद् का प्रथम उद्देश्य "समाज संगठन" है। इसका तात्पर्य यही है कि समाज की विषमताओं, झगड़े टंटों तथा मतभेदों का समापन हो और संगठन की शीतल पावन धारा प्रवाहित हो जिससे समाज का सब मैल धुल जाय और वह उज्जवलित रूप में विश्व के सम्मुख प्रस्तुत हो। जब तक संगठन नहीं होगा समाज के विकास की बात सोचना केवल हवाई किलों के अलावा कुछ नहीं। अतएव परिषद् को सहयोग देकर सबल बनाना समाज के संगठन को ही नहीं अपितु अस्तित्व को भी मजबुत बनाना है।

धार्मिक शिक्षा

समाज के संगठन के बाद उसके सुसंचालन व और उसकी सफलता के लिये यह आवश्यक है कि

उसका प्रत्येक बालक, प्रत्येक किशोर और प्रत्येक युवा शिक्षित हो. उसमें धर्म के सिद्धान्तों की शिक्षा कूट कूट कर भरी हो जिससे वह स्वतंत्रता पूर्वक समाज के भविष्य पर सोच सके। इस हेतु ग्राम ग्राम और नगर नगर में पाठशालाओं का संचालन अपेक्षित है। धार्मिक शिक्षा प्रसार हेतु पाठशालाओं की स्थापना करना परिषद् का प्रमुख उदेश्य है तथा इसके द्वारा ही समाज के बालकों में धार्मिक संस्कार पैदा किये जा सकते हैं। पाठशालाओं के साथ साथ युगकालिन पाठ्यक्रम भी होना चाहिये। इनके अलावा जैन दर्शन के प्रचार तथा प्रसार के लिये साहित्य प्रकाशन का लक्ष्य हो। इन्हीं समस्त उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु परिषद् द्वारा द्वितीय उद्देश्य 'धार्मिक शिक्षा प्रसार' का रहा जिससे कि समाज की हर प्रकार से प्रगति होती रहे।

समाज सुधार

अन्धविश्वास तथा अन्धानुकरण से वशीभूत हो समाज में चल रही रूढियों तथा रीतियों में जो समाज की नींव को हिला रही हैं जब तक समूल परिवर्तन नहीं होजाता आदर्श समाज का स्वप्न भी साकार नहीं होसकता। समाज के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिये इन कुप्रथाओं के स्थान पर सुप्रथाओं का संचार होना ही चाहिये। समाज में सुरीतियों तथा सुरुढियों के संचार से ही समाज प्रगतिशीलता की सीढ़ियों को पार कर सकता है। इसलिये परिषद् का तृतीय ध्येय समाज सुधार से सम्बन्धित रहा ताकि पुराने अन्ध रीवाजों और तरीकों में परिवर्तन किया जा सके। बिना इस क्रांति के समाज आज के प्रगतिशील युग में जीवीत नहीं रह सकती यदि उसे शान और आन से जीन्दा रहना है तो अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए समय के साथ चलना पड़ेगा।

आर्थिक स्थिति का विकास

आज समाज के कई व्यक्ति आर्थिक थपेड़ों की मारों से कराह रहे हैं उनकी आर्थिक स्थिति के विकास के लिये योजनाएं बनना ही चाहिये। लघुउद्योग, गृह उद्योग और कुटीर उद्योग के प्रचार से इस गिरी हुई स्थिति को ऊंचा उठाना चाहिये। एक ऐसी आदर्श कमर्शियल बैंक होना चाहिये जिससे समाज का मध्य वर्गीय समुदाय लाभान्वित होसके। इन्हीं सब स्थिति को दृष्टिगत कर और इन्हीं सब योजनाओं को मूर्त्त रूप प्रदान करने के लिये परिषद् का चतुर्थ उद्देश्य समाज के मध्यम वर्ग का आर्थिक विकास रहा। समाज में आथिक विकास के लिये योजनाएं प्रारम्भ करना इसका ध्येय रहा।

इस चतुः दिव्य उद्देश्यों पर परिषद् की स्थापना हुई है, वर्तमान में उसका शिशुकाल है तथापि उसके द्वारा इनकी सम्पूर्ति हेतु समुचित प्रयत्न किये गये हैं। इनकी सफलता और सबलता तभी निर्भर है जब कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति इसमें योगदान देकर इसकी प्रगति को अक्षुण्य बनाये रखने के लिये प्रयत्नशील रहे।

संशोधन कीजिये

पृष्ठ नं० ५५ कालम २ पंक्ति १२— रतलाम से श्री फकीरचन्दजी के स्थान पर श्री सुजानमलजी।

पृष्ठ नं० ६२ कालम १ पंक्ति १६— श्री छगनलालजी आहोर के स्थान पर श्री छगनलालजी सियाणा.

पृष्ठ नं० ६० कालम २ पंक्ति २६—श्री सोहनलालजी के स्थान पर श्री रिखबचन्दजी लहरी।

शिक्षामंत्री

श्री राजमलजी लोढ़ा

वित्तमंत्री

श्री समीरमलजी जैन

प्रचारमंत्री

श्री कुन्दनमलजी के० काकड़ीवाला

संगठनमंत्री

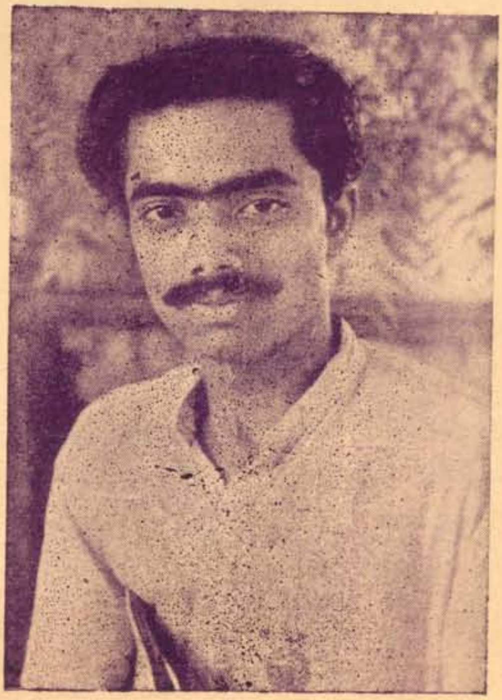

श्री राजमलजी जैन

कसौटी पर

—'अंगारा'

परिषद के चतुर्थ अधिवेशन के बाद राजस्थान के ग्राम ग्राम में उसके प्रति भक्ति पैदा हो गई।

अजी ! क्यों न जागृत होगी जहां सेवा है, रचनात्मकता है, निष्ठा है, पुरुषार्थ है, श्रम है और मानवता है वहां राजस्थान तो क्या अफ्रीका की बंजर भूमि में भी इसका प्रचार और प्रसार हो तो कोई आश्चर्य नहीं !

× × ×

भोयणीजी के बाद भीलड़ीयाजी में भी ग्राम पंचायत द्वारा जिन दर्शन पर यात्री कर लगाने का साहस।

आखिर पंचायतों ने तो यह जो समझ लिया है कि जैन समाज जो अन्याय करो आंख मूंद कर सह लेती फिर क्यों नहीं बहती गंगा में स्नान किया जाय यकीन न हो तो देखलो महावीर जयंति की छुट्टी का प्रकरण या रिलीजियस ट्रस्ट बिल का प्रस्ताव

× × ×

एक उद्योगपति के मैनेजर सा. ने यह आर्डर जारी किया कि उसके कारखाने का कोई मजदूर जैन शब्द अपने नाम के आगे न लगावे

शायद हमारे मैनेजर साहब को सत्य और अहिंसा, मानवता और प्रेम; दया तथा स्नेह से भी घृणा हो गई है क्यों न होती बीसवीं सदी के भौतिकवादी वातावरण का बाना जो पहना है खैर। भूला एक दिन रास्ते पर अवश्य .... ।

× × ×

कुछ नगरों की समाज के आंतरिक झगड़े अखबारों तक में आ रहे हैं

अजी। समाज के भीतर झगड़ा है या नहीं यह तो भगवान जाने किंतु हां कुछ विघ्न संतोषी ऐसे विकार अवश्य पैदा कर देते हैं जिनसे अब समाज को बचना है।

× × ×

भारत में मछली उत्पादन को अधिकाधिक प्राथमिकता दी जा रही है

आखिर भारत कृषि प्रधान तो देश है नहीं (!) अंकलसाम की भूमि (!) जो ठहरा ! यहां खेती बाड़ी के स्थान पर ऐसे पवित्र (!) कार्य नहीं होंगे तो क्या रूस और अमरिका में होंगे।

× × ×

भोगवृत्ति ही दुःखों का मूल कारण है—एक भाषण

किंतु साहब आज बीसवीं सदी में इसी का जो सिक्का चल निकला है त्यागवृत्ति तो अन्ध विश्वास दकियानूसी और पागलपन कही जाने लगी हैं किंतु कौन जाने आज का मानव ही मदान्ध होगया है।

मुनि विहार

भीनमाल (डाक से)

आकोली में प्रतिष्ठा समाप्त करवा कर मुनि श्री विद्याविजयजी महा० अपने सह मुनिमण्डल मुनि श्री कल्याणविजयजी, मुनि श्री हेमेन्द्रविजयजी म०, मुनि श्री सौभाग्य विजयजी म० मुनि श्री शांतिविजयजी म०, मुनि श्री देवेन्द्रविजयजी म०, मुनि श्री रसिकविजयजी म०, मुनि श्री जयन्तविजयजी म०, मुनि श्री जयप्रभविजयजी म०, मुनि श्री पुण्यविजयजी म०, मुनि श्री भुवनविजयजी म०, मुनि श्री भानुविजयजी म०, मुनि श्री लक्ष्मणविजयजी म०, बागरा आदि होते हुए यहां पधार गये हैं। यहां सम्पन्न होने जा रहे प्रतिष्ठोत्सव का सानिध्य आप द्वारा सम्पन्न होगा।

जैन समाचार

राजस्थान में परिषद् का भव्य स्वागत

नवयुवकों में जोश तथा उमंग का संचार

स्थान स्थान पर शाखाएं खुलने के आसार

आकोली (डाक से) मरुधर में परिषद् के सिद्धान्तों का स्थान स्थान पर स्वागत हो रहा है तथा शाखाएं स्थापित करने की दिशा में नवयुवक प्रयत्नशील हो गये हैं। कई स्थानों पर परिषद् स्थापना की प्रारम्भिक कार्यवाहियां सम्पन्न हो चुकी हैं तथा शीघ्राति शीघ्र विधिवत् स्थापना की घोषणाएं होने जारही है।

परिषद् के प्रवक्ता ने बताया है कि जहां जहां भी परिषद् का प्रचार हुआ है हर क्षेत्र में इसके प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया हुई है। सियाना, बागरा, जालोर, आहोर आदि नगरों में परिषद् के प्रति भारी श्रद्धा प्रकट की गई है तथा बुजुर्गों तक ने सहयोग देने की घोषणा करदी है इससे नवयुवकों ने दुने उत्साह से परिषद् की नींव सुदृढ़ करने के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये हैं।

आकोली और फतापुरा में परिषदों का कार्य जिस निष्ठा से चल रहा है उससे राजस्थान में परिषद् भविष्य उज्जल दिख ई दे रहा है।

परिषद् का सराहनीय प्रयास

आकोली (डाक से)

यहां सम्पन्न हुए प्रतिष्ठोत्सव में स्थानीय शाखा परिषद् के कार्यकर्त्ताओं ने अत्यधिक उत्साह तथा लगन के साथ व्यवस्था की जिसे दृष्टिगोचर कर समाज के हर क्षेत्र में उनकी प्रशंसा की गई। लगभग १५ दिनों तक ४०-५० स्वयं सेवक दिन रात कड़े परिश्रम के साथ सहयोग देते रहे। इस तन तोड़ परिश्रम की यहां आये सभी ग्रामों के नागरिकों ने सराहना की। यहां परिषद् की स्थापना से ही नवयुवकों में जोश है तथा परिषद् दिनों दिन प्रगति पर है। सदस्य भी बनाये जा रहे हैं तथा शीघ्र ही चुनाव भी कराये जा रहे हैं। यहां समाज में भी परिषद् के प्रति आस्था है तथा विश्वास है; उसे समाज का भी पूरा सहयोग प्राप्त होगा। श्रीमान पंच महानुभाव भी इसमें पूर्ण सहयोग देंगे।

भीनमाल में भव्य प्रतिष्ठोत्सव

भीनमाल। यहां जेठ सुदी ११ मई १३ को दो जिनालयों में भव्य प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है। इस हेतु पूरे नगर को सजाया जा रहा है तथा कार्य भी पूरे परिश्रम तथा जोर शोर से चल रहा है।

केन्द्रिय अध्यक्षजी का स्वागत जुलूस

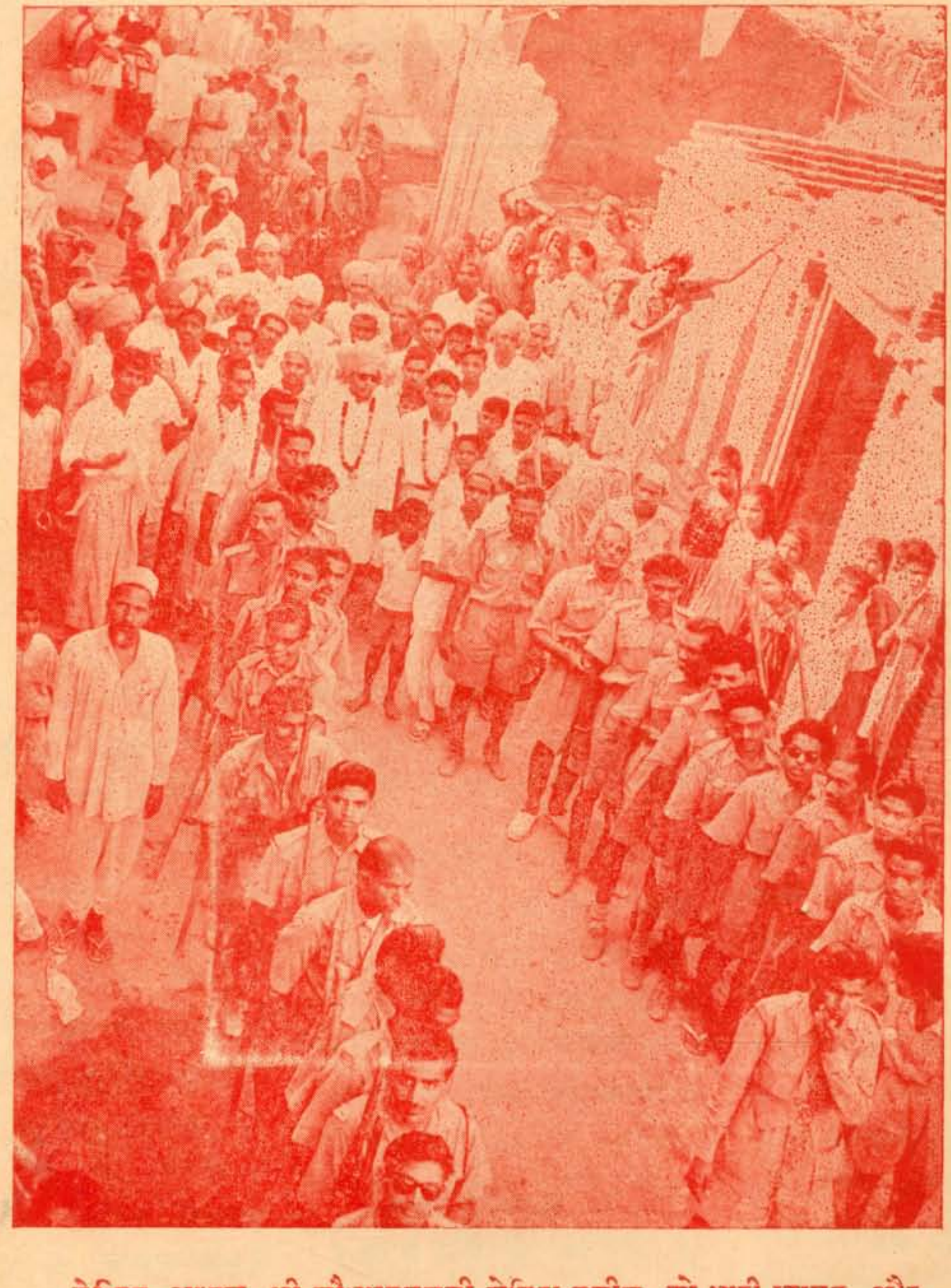

केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया वकील को भारी स्वागत और अभिनन्दन के साथ आकोली नगर में प्रवेश कराया गया। चित्र में स्वागत जुलूस का पिछला दृश्य। अतिथिगण और नगर के नागरिक दिखाई देरहे हैं। ऊपर छज्जों तथा गैलरियों पर खड़ी महिलाएं इस शुभ वेला में गीत गारहे हैं।

परिषद् गुरुदेव के स्वप्नों का साकार रूप

पैसे की भीख नहीं समाज संगठन की भीख मांगते हैं

जैन दर्शन सार्व कालिक और सर्व भौमिक

खुले अधिवेशन में श्री सेठिया की गर्जना

आकोली (डाक से)

'हम मारवाड़ में आकर आपसे धन दौलत की भीख नहीं मांगते, रुपयों पैसों की भीख नहीं मांगते, हम भीख इस चीज को मांगते हैं कि आप अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा दीजिये समाज का संगठन कीजिये, ऐसी कुरीतियों जिनमें समाज पीसा जारहा है निकाल फेंकिये। परिषद् गुरुदेव द्वारा संस्थापित है और उनके ही मार्ग पर चल रही है। इसके उसूल गुरुदेव के स्वप्नों के ही साकार रूप हैं।' इन शब्दों के साथ अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के चतुर्थ अधिवेशन में आयोजित खुले अधिवेशन में केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया बी. ए. एल. एल. बी. वकील ने अध्यक्ष पद से एक ओजस्वी भाषण दिया जो करतल ध्वनियों के बीच हजारों जनता में सहारा गया।

श्री सेठिया ने कहा कि परिषद ने जो चार उद्देश्य रखे हैं वे

समाज उन्नति के लिये वरदान रूप हैं। आपने उपस्थित स्वधर्मियों से अपिल की कि आप परिषद् को अपनाइये आशिर्वाद दीजिये, प्रेरणा दीजिये, थप थाईये और इसका भविष्य प्रशस्त कीजिये।

अपने भाषण में श्री सेठियाजी ने अधिकतर जैन दर्शन की चर्चा की तथा कहा कि जैन धर्म सर्वकालिक और सर्वभौमिक है इसने जीओ और जीने दो का सिद्धांत दिया है। यदि आप जीवन दान किसे नहीं दे सकते तो किसी का जीवन लेने का आपको कोई अधिकार नहीं। जैन धर्म अहिंसावादी है इसका मतलब यह नहीं कि यह कायरों का है दब्बूओं का है। इसमें शासक हुए हैं, नरेश हुए हैं, सम्राट हुए हैं। देशभक्त हुए है।

आपने अव्यवस्थाओं पर बोलते हुए कहा कि हम मंदिरों में भगवान की सेवा के लिये चांदी के टुकड़ों पर पुजारी को नौकर रखते हैं और बाहर आकर महावीर की संतान होने का ढोल पीटते हैं कितनी शर्म की बात है कि बेटा बाप की सेवा के लिये नौकर रखता है, पैसे का सेवक रखता है।

श्री सेठिया ने त्याग को महत्ता बतलाते हुए कहा कि त्याग कर आत्माएं परमात्माएं बनी। श्री राजेन्द्रसूरिजी छत्रचंवर पालखी त्याग कर जगतपूज्य बन गये। हमें भी उनकी जय-जयकार का तभी अधिकार है कि हम उनका अनुसरण करें।

मरुधर की जनता परिषद को अपना कर रहेगी

केन्द्रीय अध्यक्षजी के संक्षिप्त तूफानी दौरे से आशा की किरणें

सियाणा (डाक से)

गत १० मई १९६२ को प्रात: यहां केन्द्रिय अध्यक्ष श्री श्री भ्यमलजी सेठिया तथा मालव क्षेत्रीय परिषद् कर्णधारों का आगमन हुआ। मालव क्षेत्रीय प्रतिनिधि गणों की एक रैली जय वीर' तथा "जैन धर्म की जय" के गगन गूंजित नारों के साथ आगमन के तुरंत साथ निकली जिसका संयोजन स्वयम श्री सेठियाजी ने किया। परिषद प्रतिनिधिगणों की अनुशासन मद्धता को देखकर यहां की जनता चकीत रह गई तथा बिगुल को सुनकर लोग बाग परिषद कार्य में योग दान देने के लिये अपने घरों से बाहर निकल २ कर आगये। जिन दर्शन तथा पूजन के बाद श्री सेठियाजी ने यहां समाज के आगेवानों से चर्चा की तथा उनने परिषद की रूपरेखा संक्षिप्त समझाई

समाज के आगेवानों ने सफलता की शुभकामनाओं के साथ उन्हें शीघ्र अपने यहां शाखा स्थापना का आश्वासन दिया।

श्री सेठियाजी यहां से साथियों सहित आकोली गये और वहां से बागरा जालोर, आहोर ग्रामों आदि में गये जहां भी इसी प्रकार सुन्दर रैलियों का आयोजन रहा तथा समाज के स्वधर्मी बन्धुओं ने आशा प्रकट की कि परिषद सफल होगी हम तन मन धन से पूर्ण सहयोग देंगे।

श्री सेठियाजी का त्रि दिवसीय संक्षिप्त किंतु तूफानी तथा महत्वपूर्ण दौरा बहुत ही सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

दौरे की पूरी रिपोर्ट अभी प्राप्त नहीं होसकी है।

श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ का मेला सानन्द सम्पन्न

अलीराजपुर। यहां महावीर जयंती का शानदार जुलुस नगर में निकाला गया। दोपहर को श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा और रात्री को आम सभा का आयोजन सेठ श्री पन्नालालजी लालचदजी की अध्यक्षता में रखा गया। चैत्र सुदी १५ को श्री लक्ष्मणीजी में मेला का आयोजन रखा गया। सुबह ८ बजे शत्रुंजय महातीर्थ पर के दर्शन, दोपहर पूजा नवाणु प्रकारी, तीर्थ की परम्परा के अनुसार भातावितरण और संध्या को श्री जैन सकल संघ अलीराजपुर की ओर से स्व धर्मीवत्सल था पारां राणापुर, खट्टाली, दोहद, कुक्षी, बाग, राजगढ़ और अलीराजपुर से अनेकों यात्री गण पूर्णिमा मेले पर पधारें।

—कुन्दनलाल जैन काकड़ीवाला

छात्रवृत्ति के लिये आवेदन कीजिये

राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात व मैसूर प्रदेश के-होन ?? तथा टेकनिकल कालेज में शिक्षा पाने वाले छात्रों को मंडल की ओर से कर्ज छात्रवृत्तियां दिलवाई जाती हैं। छात्र वृत्ति पाने की इच्छुक छात्रों को चाहिये कि वे किस श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और कौनसी शिक्षा पाना चाहते है यह लिखकर आवेदन पत्र मंगवाले।

मंत्री
भारत जैन महामंडल
५०५ कालबा देवी
बंबई २

मालव प्रान्तीय अध्यक्ष द्वारा शपथ ग्रहण

अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के आगामी वर्ष के सम्पन्न निर्वाचन के तुरंत पश्चात पदाधिकारियों ने सत्य निष्ठा तथा गुरुदेव की साक्षी से अपने पद की शपथ ग्रहण की। चित्र में केन्द्रिय अध्यक्ष श्री सेठियाजी, केन्द्रिय उपाध्यक्ष तथा मालव प्रांतीय अध्यक्ष श्री माधवसिंहजी चौधरी प्लीडर को शपथ दिला रहे हैं।

श्री चन्दुभाई के निर्वाचन का भव्य अभिनंदन

गुजरात प्रदेश परिषदाध्यक्ष तथा अ०भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के केन्द्रिय उपाध्यक्ष पद पर दानवीर, समाज-सेवी, समाजरत्न सेठ श्री चन्दुलालजी के निर्विरोध निर्वाचन का गुजरात के ग्राम ग्राम में अभिनन्दन किया गया है तथा आशा प्रकट की गई है कि जब गुजरात क्षेत्र का कार्यभार सारा श्री चन्दुभाई जैसे सुयोग्य हाथों को सौंप दिया गया है तो परिषद् की बहुमुखी प्रगति तथा प्रचार हो सकेगा इसमें दो मत नहीं। श्री चंदूभाई ने कर्मठता तथा लगन से सदा कार्य किया है तथा उनके कंधों पर परिषद् का अवश्य नया ओज प्राप्त कर सकेगा। गुजरात प्रांत में परिषद् का प्रचार भी स्फूर्ति के साथ हो रहा है तथा ग्राम ग्राम में नवयुवक इस हेतु प्रयत्न शील हैं।

हर मास

सुरूचि पूर्ण सामग्री के साथ

जैन प्रांगण में ज्ञान ज्योति

प्रज्ज्वलित करनेवाला

मासिक पत्र

शाश्वत धर्म

[विज्ञापन देकर लाभ उठाइये]

शीघ्रता कीजिये

❋ मूल्य में भारी कमी ❋

श्री अभिधान राजेन्द्र कोष	मात्र १५०)
श्री सूक्त मुक्तावली	२)
श्री चन्द्रराज चरित्र	२)
श्री कामघट कथा	२)
श्री दृष्टान्त शतक	१
श्री शांतसुधारस भावना हिन्दी अनुवाद सह	१)
श्री राजेन्द्रसूरि स्मारक ग्रन्थ	१५)
श्री यतीन्द्रसूरि अभिनंदन ग्रन्थ	६)
श्री गच्छाचार पयन्ना भाषान्तर	२)

पुस्तकें मंगाने का पता—

मंत्री उदयचंद ओखाजी चोपड़ा

श्री भूपेन्द्रसूरि साहित्य समिति

मु. पो. आहोर (राजस्थान)

वाया एरनपुरा रोड

शाश्वत–धर्म का विज्ञापन दर

टाइटल पेज का चौथा पूरा पेज—	२०)
टाइटल पेज का तीसरा पूरा पेज—	१५)
टाइटल पेज का चौथा आधा पेज—	१०)
टाइटल पेज का तीसरा आधा पेज—	८)
अन्दर का पूरा पेज—	१२)
अन्दर का आधा पेज—	८)
अन्दर १ कालम पूरा—	८)
अन्दर आधा कालम—	४)

शाश्वत धर्म में

लेखादि भेजने का पता

सौभाग्यमल सेठिया, वकील

निम्बाहेड़ा

सहायतादि भिजवाने का स्थान

भंवरलाल छाजेड़ 'पत्रकार'

नीमच सीटी

आचार्य श्री उमंगसूरिजी का निधन

गत २० मई ६७ को साबरमती में जैनाचार्य श्रीमद् विजय उमंगसूरिजी महा० का निधन रात्रि १-३० पर होगया। आपने आ० श्री विजयवल्लभसूरिजी म० शिष्य श्री विवेक विजयजी महा० के पास दीक्षा गृहण की थी तथा आपको सम्वत् १९९२ में आचार्य पद पर अधिष्ठित किया गया था।

श्रीमद् उमंगसूरिजी का जन्म सम्वत् १९४६ में पंजाब के रामनगर (जिला-गुजरातवाला) में हुआ था। आपके पिता श्री नाम श्री लाला गंगारामजी था।

मृत्यु घड़ी तक आपका जीवन संयमी, सरलता, साधुता तथा क्रियाशीलता पूर्ण रहा।

शाश्वत धर्म हार्दिक दुःख प्रकट करता हुआ दिवंगत आत्मा की शांति हेतु शासन देव से प्रार्थना करता है।

श्री पारेख का निधन

श्री धुलचंदजी पारेख फर्म धनराज एण्ड कम्पनी सियागंज इंदौर वालों का स्वर्गवास गत ७ मई को अपने इंदौर स्थित निवास स्थान पर होगया। आपकी उम्र लगभग ६२ वर्ष की थी।

श्री पारेख का जन्म एक प्रतिष्ठित श्वेताम्बर जैन कुटुम्ब में हुआ था तथा आप एक कुशल व्यवसाई और धर्म प्रेमी थे। आपकी विशेष दिलचस्पी जीव रक्षा की ओर थी और आपने इस कार्य में बड़ी कर्मठता का परिचय दिया था।

आप अपने पिछे एक सुशिक्षित व भरापुरा परिवार छोड़ गये हैं। शाश्वत धर्म इस निधन पर हार्दिक संवेदना प्रदर्शित करता है तथा परम पिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना करता है।

साध्वीजी श्री का देहावसान

आचार्यविजय हिमाचलसूरिजी महा० के गच्छ की साध्वीजी श्री गम्भीर श्रीजी का स्वर्गवास रानी (राज०) में गत वैशाख सुदी ७ को होगया। आपकी स्मृति में कई अट्ठाई महोत्सव कराये गये।

शाश्वत धर्म परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना करता है।

साध्वी श्री नीमच में

नीमच छावनी (डाक से)—

यहां खरतरगच्छीय साध्वी श्री विचक्षण श्रीजी का आगमन हो गया है। आपके प्रवचन का हजारों लोग प्रतिदिन लाभ लेरहे हैं। स्थानीय श्रीसंघ द्वारा आपके चातुर्मास की भी विनती की गई है जिसकी स्वीकृति की पूर्ण आशा है।

परिषद् को तन मन धन से
योगदान देकर
सबल बनाइये।

शाश्वत धर्म

में दिया हुआ विज्ञापन आपको शत प्रतिशत व्यापार वृद्धि में सहयोग देगा.

कम दर ! अधिक प्रचार ! अधिक उन्नति !

आज ही सम्पर्क स्थापित कीजिये.

साभार-स्वीकार

३१) रु० भीनमाल निवासी शाह ऊकचन्दजी आसूजी की धर्म पत्नि श्रीमति त्रिजुबाई की ओर से विशस्थानक तप उद्यापन के निमित्त शाश्वत धर्म को प्राप्त हुए।

धन्यवाद ! —सम्पादक

ગૂર્જર જૈન જયોત

શાશ્વત-ધર્મનો ગુજરાતી વિભાગ

સંપાદક : મધુકર

મૌકિતક

ક્રોધનું મારણ ક્ષમા, અભિમાનના નિવારણ માટે નમ્રતા, માયાની જાળને છેદવા સરળતા અને લોભના પારને પામવા માટે સંતોષને ધારણ કર્યા પછી જ આત્મીય પ્રગતિના એંધાણો દેખાદે છે. તે પહેલાં આન્તરિક વિકાસના માટે સંવરની સંપ્રાપ્તિ દૂર છે.

જૈન કોણ?

શ્રીમદ્વિજય યતીન્દ્રસૂરીશ્વરાન્તેવાસી મુનિ જયન્તવિજય.

દુઃખથી મુક્તિ મેળવવી અને સુખ ભણી આગળ વધવું એ અનાદિકાળથી પ્રાણીમાત્રના લક્ષ્યો બની રહ્યાં છે, છતાં તે માટે થતા પ્રયત્નોમાં તેઓ કયાં સુધી સફળ નિવડયા છે, એ તો એના અંતરાત્મપ્રદેશ માંથી પ્રાદુર્ભૂત પ્રવૃત્તિઓના આધારે જ સમજી શકાય છે.

જૈન ધર્મ વિશ્વધર્મ છે. પ્રાણીમાત્રને પ્રકૃષ્ટગતિ તરફ પ્રેરિત કરવામાં તેણે આદિ કાળથી પ્રમુખ રીતે ભાગ ભજવ્યો છે. ભવની કડવાશ જેણે અનુભવી અને તેથી છૂટવાના મનોરથો સેવવા માંડયા જેણે તેના માટે જૈન ધર્મે પ્રશસ્ત માર્ગોનું વિધાન કર્યું અને પ્રત્યેકને પરવડે તેવા સરળ ઉપાયો પણ બતાવ્યા તેમાં આત્મિક, અને બાહરી; આચારિક અને વ્યવહારિક ભેદોની પરિગણના કરીને દરેક રીતિએ સમજાવવામાં આવ્યું. જે કોઈ તે પ્રમાણે ચાલીને તે દ્વારા સાધ્યસિદ્ધિની અપેક્ષા રાખે તે બરાબર તેનો લાભ ઊઠાવી શકે છે એવો ઉદ્ઘોષ છે. જૈન ધર્મ અને જિન શાસનનો!

કોઈ પણ વ્યક્તિ જૈનધર્મનું અવલંબન લઈ જિનશાસનની શીતળ છાયામાં જીવન યાપન કરીને સુખનો ભાગી બની શકે છે. જૈનત્વની ઝાંખી કરાવતાં કેટલાંક અવતરણો આલેખાયેલ છે. જેનું ચિંતન મનન પરમ આવશ્યક છે.

રાગદ્વેષાદિ અભ્યન્તર શત્રુઓ પર વિજય મેળવ્યો છે. જેણે, પરમાત્મપદ પ્રાપ્ત કરી ગયા છે જે એવા દેવ જિનેશ્વર અને એમની આરાધના કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે,

વીતરાગ વચનોથી એક શબ્દ પણ વિપરીત બોલાઈ જવામાં મહાન્ અનર્થ સમજનારો, તેનાથી થતી આશાતનાથી પ્રતિપળે ડરનારો અને પાપમય પ્રવૃત્તિથી દૂર રહેનારો સાચો જૈન કહેવાય છે.

પ્રાણિમાત્રને આત્મવત્ સમજીને તેમના સાથે નિજાત્મવત્ વ્યવહાર કરનારો સાચો જૈન કહેવાય છે.

અન્યાય અનીતિથી સર્વથા દૂર રહેનાર અને न्याय सम्पन्न विभवः નું દિવ્ય સૂત્ર ધ્યાનમાં રાખી ન્યાયમાર્ગ પર પ્રચલન કરનારો સાચો જૈન કહેવાય છે.

ખાઈ ને ખુશી ન રહેતાં ખવરાવીને ખુશી થનાર અને વીતરાગ પ્રણીત માર્ગનું અનુસરણ કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

ભક્ષ્યાભક્ષ્યનો વિચાર કરી પેયાપેયનો નિર્ણય કરીને પછી જ ભોજન પાન કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

જીવનશુદ્ધિ અને આત્મિકશાન્તિ જેનું પરમ ધ્યેય હોય અને તેની સિદ્ધિના માટે પ્રયત્નશીલ રહેનાર જ સાચો જૈન કહેવાય છે,

બીજાના ધનને માટીનું ઢેફું, પરસ્ત્રીને માતા ભગિની સમજી પ્રત્યેક ક્ષણનો સદુપયોગ કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

પ્રાણીમાત્રને દુઃખી થતા દેખીને તેમના દુઃખોને દૂર કરવા માટે તત્પર રહેનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

જિનેશ્વરોની પૂજા કરવા માટે તત્પર. સદ્‌ગુરૂજનોની સેવામાં કુશળ. અને ત્યાગમાર્ગ તરફ અગ્રેસર થનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

પ્રવૃત્તિમાર્ગનો પરિત્યાગ કરીને નિષ્કામવૃત્તિથી નિવૃત્તિમાર્ગનું અવલંબન લઈ અનુસરણ કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

ધર્મ માટે તન, મન, ધન સર્વસ્વ આપનાર અને ધર્મમાર્ગ પર અડીગ બનીને ચાલનાર જ સાચો જૈન કહેવાય છે.

દુનિયામાં અનેક પક્ષપક્ષાંતર અને પોતપોતાની વાતો કહેનાર ઘણાય છે છતાં પણ કોઈના ભરમાવામાં ન આવીને સદ્‌ગુરૂ દ્વારા પ્રદર્શિત સમ્માર્ગ પર દઢ રહેનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

માલ મિષ્ટાન્ન ન ખવરાવીને પોતાના સ્વધર્મી બંધુને જે વસ્તુની આવશ્યકતા હોય તેની પૂર્તિ કરી સ્વધર્મીને ચિંતા મુક્ત કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

સુદેવનો આરાધક, સદ્‌ગુરૂનો ઉપાસક અને સદ્ધર્મનો અનુપાલક સાચો જૈન કહેવાય છે.

ઈર્ષ્યાથી અલગ, મમત્વથી મુક્ત અને વિષયકષાયોથી અલિપ્ત રહેનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

ક્રોધને ક્ષમાથી માનને નમ્રતાથી, માયાને સરળતાથી અને લોભને અકિંચન્યતાથી જિતનારો સાચો જૈન કહેવાય છે.

ત્રણ કાળ જિનેશ્વરની પૂજા કરનારો સવિધિ ગુરૂવંદન કરનારો, યથાશક્તિ વ્રત પચ્ચક્ખાણ કરનારો અને સદાચરણને આચરનારો સાચો જૈન કહેવાય છે.

જેને સિદ્ધાન્ત શ્રવણની રુચિ હોય, જે ઉપયોગથી પ્રત્યેક કાર્યને કરતો હોય, અને જે પ્રાપ્ત લક્ષ્મીનો સદુપયોગ કરતો હોય તે જૈન કહેવાય છે.

ભૌતિકતાનો ભકત ન બનીને આધ્યાત્મિકતાનો અનુયાયી બની તે દ્વારા વાસ્તવિક લાભ ઉઠાવનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

ફેશનના ફંદાથી દૂર રહી સ્વસંસ્કૃતિના આધારે જીવન વ્યતીત કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય અને અપરિગ્રહ વ્રતોને આચરણમાં લાવનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

મનસા, વાચા, કર્મણા; ત્રણેમાં વિચાર જુદા, વાણી વ્યવહાર જુદો અને ક્રિયા પણ જુદી કરનાર નહિ પરંતુ કથન પ્રમાણે કરનાર અને વિચરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

સદ્‌જ્ઞાનમાં નિરન્તર મગ્ન રહેનાર અને તેનાથી પોતાની યથેષ્ટ સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરી આનંદ માણનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

(જુઓ પાનું ૧૦)

નમસ્કાર મહામંત્રનો ચમત્કાર

સ્વ. શ્રી ચંદુલાલ એસ. શાહ, અમદાવાદ

(સત્યઘટનાના આધારે)

પ્રસ્તુત કથામાં લેખક, નમસ્કાર મહામંત્રનો ચમત્કાર એક સત્ય ઘટનાને આધારે અહિં રજુ કરે છે. ઉકાભગત પાસે મેલી વિદ્યાનો ચમત્કાર જોઇને શ્રાવકકુળમાં જન્મેલ અને શ્રી નમસ્કાર મહામંત્ર પ્રત્યે પૂર્ણ શ્રદ્ધાવાન શ્રીકાંત મેલી વિદ્યાની સાધના માટે તલપાપડ બને છે, ને સ્મશાનમાં જઇને તેની સાધના મક્કમ દિલે કરી રહ્યા છે. ત્યાં શ્રી નવકાર મહામંત્રનો અદ્દભૂત પ્રભાવ શું પાડી જાય છે, તે હકીકત આ કથા જ તમને સ્વયં કહી દેશે.

નાનું સરખું ગામ અને સાંકડો માર્ગ.

લોકવર્ણના નામથી ઓળખાતી એક કોમના એક મહાત્માની ગામમાં પધરામણી થઈ હતી. ઉકા ભગત નામથી ઓળખાતા એ મહાત્માના દર્શન કરવા, આજુબાજુનાં ગામોમાંથી, એમના અનુયાયીઓ મોટી સંખ્યામાં એકઠા થયા હતા.

રસ્તો રોકીને એ બધા બેઠા હતા, ઉકા ભગતને પગે પડવાની સ્પર્ધા ચાલી રહી હતી.

શ્રીકાંતને સ્ટેશન તરફ જવાની ઉતાવળ હતી, વખતસર સ્ટેશને પહોંચીને, શહેર તરફ જવાની ગાડી એમને પકડવાની હતી.

રસ્તો રોકીને બેઠેલા તથા ઉભા રહેલા ટોળાને વીંધીને એમને જવાનું હતું. બે હાથ જોડીને, પોતાને માર્ગ આપવાની વિનંતી એ ટોળાને તેઓ કરી રહ્યા હતા. પણ માર્ગ મળતો નહોતો.

એવામાં,ઉકાભગતનો અવાજ સંભળાયો:-

'શ્રીકાંતભાઈને જવા દો, એમને મારગ આપો. એમને શ્મશાનમાં પહોંચતાં મોડું થશે.'

ભગતની આજ્ઞા થઈ એટલે ટોળાએ માર્ગ તો આપ્યો; પણ, શ્રીકાંતના પગ ત્યાં જ થંભી ગયા!

'સ્મશાનમાં?' એમણે ભગતને પૂછયું.

જવાબમાં ભગત કંઈ બોલ્યા નહિ ફક્ત થોડુંક હસ્યા.

'ભગત, હું તો મારા મિત્ર દિવ્યકાંતના લગ્નમાં જઈ રહ્યો છું, સ્મશાનમાં નહિ.' શ્રીકાંતે કહ્યું.

'કેવાં લગન કે કેવી વાત! જાઓ, ઝટ જાઓ; નકર ગાડી ઉપડી જશે ને તમે મોડા પડશો.' ઉકા ભગત આટલું જ બોલ્યા. તેમણે શ્રીકાંતને સ્ટેશન તરફ જવાનો ઈશારો કર્યો.

ગાડી ઉપડી જાય, તે પહેલાં સ્ટેશને પહોંચી જવાની ઉતાવળ હતી; એટલે શ્રીકાંતે ત્યાંથી પગ ઉપાડયા.

વખતસર સ્ટેશને પહોંચ્યા, ટીકીટ લઇને ગાડીમાં બેઠા ને ગાડી ઉપડી પણ શ્રીકાંતનાં મનમાં ઉકા ભગતની સ્મશાનવાળી વાત એવી ભરાઈ ગઈ, કે લગ્નમાં ભાગ લેવા જવાનો જે આનંદ હતો, તે લુપ્ત થઈ ગયો. દિલમાં એક ધ્રાસકો પેસી ગયો.

ઉકાભગતની ભવિષ્યવાણી શ્રીકાંતના અંતરને સતાવી રહી. ગાડી તો એની હંમેશની ગતિથી ચાલી રહી હતી. પણ તેમને લાગ્યું કે ડ્રાઈવર આજે ગાડીને બહુ ધીમી ગતિથી ચલાવી રહ્યો છે!

આખરે શહેર આવ્યું. ગાડી કરીને શ્રીકાંતે, દિવ્યકાંતના ઘર તરફ, દોટ મૂકી.

ત્યાં પહોંચતાં જ, લગ્નનાં ગીતને બદલે મૃત્યુના મરશિયા તેમને સાંભળવા મળ્યા! લગ્નના દિવસે જ, ફક્ત બે જ કલાકની અણુધારી માંદગીમાં દિવ્યકાંતનો આત્મા દિવ્યધામ તરફ ચાલ્યો ગયો હતો

ડાકટરો તો દસ ભેગા થયા હતા. દિવ્યકાંતની બિમારીનો તાગ એ લોકો કાઢી શકે, તે પહેલાં જ દિવ્યકાંતનું પ્રાણપંખેરૂં ઉડી ગયું હતું.

પેલા ઉકા ભગતની ભવિષ્યવાણી સાચી પડી હતી....લગ્નમાં મહાલવાને બદલે,શ્રીકાંતને સ્મશાનમાં જવું પડયું.

(૨)

મિત્રના મૃત્યુ પછી પોતાને ગામ પાછા આવ્યા, તે દરમિયાન, શ્રીકાંતના મનમાં એક જ વિચાર ઘોળાયા કર્યો.

આ ઉકા ભગત પાસે એવી તે કઈ વિદ્યા છે, જેના પરિણામે તેઓ આવી સત્ય ભવિષ્યવાણી ઉચ્ચારી શકયા?

'આ વિદ્યા તો અતિ અદ્‌ભૂત. એવી શક્તિ જો પ્રાપ્ત કરી શકાય, તો જિંદગી સફળ થઈ જાય!' આવી ઇચ્છા શ્રીકાંતના મનનો કબજો લઈને બેસી ગઈ.

અભ્યાસ કરતાં શ્રીકાંતને એટલું જાણવા મળ્યું, કે ઉકા ભગત મેલડી માતાના ઉપાસક હતા અને વાર–તહેવાર તથા ટાણે–કટાણે તેમના મોઢામાંથી સરતી ભવિષ્યવાણી સાચી પડતી હતી.

ભવિષ્ય–કથન કહી શકવાની શક્તિ મેળવવાની પ્રબળ ઉત્કંઠા શ્રીકાંતમાં જાગી ગઇ. ઉકા ભગત પાસેથી, આ વિદ્યા, ગમે તેમ કરીને, પ્રાપ્ત કરવી એવો એમણે નિશ્ચય કર્યો.

ભગતનું સરનામું મેળવીને શ્રીકાંત, ઉકા ભગતના ગામ તરફ જવા નીકળી પડયા. ત્યાં પહોંચીને, જે વાસમાં ઉકા ભગત રહેતા હતા. ત્યાં તેઓ પહોંચી ગયા. 'ભગતનું ખોરડું કયું.' એવું, કોઈને પૂછે તે પહેલાં જ, બાજુમાં આવેલી ઝુંપડીના બંધ બારણાની પાછળથી એક અવાજ આવ્યો:—

'આવો. આવો. શ્રીકાંતભાઈ, આવો. તમે આવ્યા ખરા!'

શ્રીકાંતના આશ્ચર્યની અવધિ ના રહી. આ માણસ શું સર્વજ્ઞ છે? ઝુંપડીમાં બેઠો, બેઠો, બંધ બારણાની પાછળથી, નામ લઈને બોલાવે છે!

ભગતનાં વહુએ ઝૂપડીનું બારણું ખોલ્યું. શ્રીકાંત અંદર ગયા.

'કાઢી નાંખો, શ્રીકાંતભાઈ, એ વિચારને તમારા મનમાંથી કાઢી નાંખો. તમારા જેવાનું એમાં કામ નથી.' ઉકા ભગત ગંભીરતાથી બોલ્યા.

'ભગત, મારે એ વિદ્યા મેળવવી છે.' શ્રીકાંત બોલ્યા.

'મને ખબર છે. એ વના તમે આંહિ ઘોડયા ન આવો! પણ એમાં તમારે પડવા જેવું નથી, તમારું એ કામ નહિ, જેવા આવ્યા છો; એવા પાછા જાઓ. જે કરતા હો તે કર્યા કરો.'

ભગત ના પાડતા ગયા, તેમ તેમ શ્રીકાંત મક્કમ બનતા ગયા.

'મારે તો એ વિદ્યા મેળવવી જ છે. પાછો જવા માટે આવ્યો નથી. કાર્યં સાધયામિ વા દેહં પાતયામિ. મટી જાઉં એ હા, પણ હવે તો એ વિદ્યા મેળવ્યે જ છૂટકો.' શ્રીકાંત તો જીદ પકડીને ત્યાં બેસી જ ગયા.

'શ્રીકાંતભાઈ, એમાં ભારે મોટી હિંમતની જરૂર પડશે. દિલમાં જરા ફડકો પેઠો, કે બીક ગઈ, તો પછી જીવનું જોખમ છે.' ભગતે કહ્યું.

'હિંમતનો અભાવ નથી. બીક તો હું રાખતો જ નથી. વીતરાગ પ્રભુનું શરણું છે. તમે તમારે મને રસ્તો, બતાવો.' શ્રીકાંતે જવાબ આપ્યો.

શ્રીકાંતના મોઢા સામે થોડીવાર ઉકા ભગત જોઈ રહ્યા પછી બોલ્યા :

'ભાઈ, આ તો મેલી વિદ્યા. અમે રહ્યા મિથ્યાત્વી લોક અમને બધું પાલવે; તમારાથી નહિ ખમાય.'

'મેલી હોય કે ઘેલી મારે એ વિદ્યા મેળવવી જ છે.' મક્કમપણે શ્રીકાંતે ફરીથી જવાબ આપ્યો.

ઉકા ભગત થોડુંક હસ્યા, પછી બોલ્યા :

'ઠીક ત્યારે, હું લખાવું એ બધી ચીજ વસ્તુઓ બજારમાંથી લઇ લેજો, મંતર તો નાનો અમથો છે. અમાસની રાતે, બરાબર બાર વાગે, અહિંના સમશાનમાં પહોંચી જજો, હું બતાવું એ રીતે બધી વ્યવસ્થા કરીને, પછી મંતર ભણવા માંડજો. ભડકામણ ને બીવરામણ ઝાઝી થશે. બ્હીને નાસવા માંડશો તો તમારૂં મડદુ જ ત્યાં પડશે. નહિં નાસો, મક્કમ રહેશો, તો એક કલાક પછી, 'માગ, માગ, માગે તે આપું' એવો અવાજ તમે સાંભળશો, પણ એ અવાજ સાંભળો કે તરતજ માગશો નહિ, એને કહેજો કે રૂબરૂ હાજર થા. એ નખરાં કરશે, ના પાડશે પણ રૂબરૂ હાજર થાય નહિ, દર્શન ના આપે, ત્યાં સુધી માગશો નહિ. ઉજળાં ધોળાં લુગડાંમાં, માણસના આકારે, એ હાજર થશે. એંધાણી એ, કે એના પગ જમીનથી અદ્ધર હશે. બીજી એંધાણી એ, કે તમે ત્યાં દેવતા પ્રગટાવ્યો હશે, એના અજવાળામાં એનો પડછાયો પડશે નહિ. બસ, પગ ધરતીથી દોઢ વેંત ઉંચા હોય ને પડછાયો ના પડતો હોય, તો સમજી લેજો, કે એ પોતે હાજરાહજુર છે, પછી માગી લેજો.'

શ્રીકાંતે ખીસ્સામાંથી ડાયરી અને ફાઉન્ટન પેન કાઢયાં. અને બોલ્યા : 'લખાવો ચીજ વસ્તુનાં નામ લખાવો.'

'પણ શ્રીકાંતભાઈ, મારૂં માનો; એમાં જીવનું જોખમ છે. વળી તમારા જેવા ઉજળીયાત વરણનું આ કામ પણ નહિ. જાવા દ્યો, વાત્ત પડતી મૂકો.' ભગતે ફરીથી શ્રીકાંતને વિનંતિ કરી.

પણ, ભવિષ્ય કથન કરી શકવાની શક્તિમાં શ્રીકાંતનું દિલ એવું તો ચોંટી ગયું હતું, મધમાં માખી ચોંટે તેમ, કે એમણે પોતાની જીદ ના છોડી.

ભગતે પછી, તેમને ખરીદી લાવવાની વસ્તુઓનું લીસ્ટ કરાવ્યું. એની વિધિ સમજાવી. પછી, શ્રીકાંતના કાન પાસે પોતાનું મોઢું લાવીને એક મંત્ર એમણે શ્રીકાંતના કાનમાં સંભળાવ્યો.

'આ તો બધું બહુ સહેલું કામ છે.' શ્રીકાંત હર્ષથી બોલી ઉઠયા. જવાબમાં ભગત ફરીથી હસ્યા.

(૩)

અમાવાસ્યાની અંધારી રાત્રે શ્રીકાંત સ્મશાનમાં પહોંચી ગયા. ભગત પાસેથી મળેલી સૂચના અનુસારની બધી ચીજો તેઓ સાથે લાવ્યા હતા. લાકડાંનો ઢગલો કરી, તેમાં અગ્નિ પેટાવ્યો અને તેમાં ઘી હોમતાં હોમતાં મંત્રોચ્ચાર એમણે શરૂ કર્યો.

દસ જ મિનિટમાં, ભયંકર ચિચિયારીઓ સંભળાવા લાગી. ચિત્રવિચિત્ર અવાજો આવવા લાગ્યા. જે કુંડાળુ વળીને શ્રીકાંત બેઠા હતા, તેની બહાર હાડકાંનો વરસાદ પડવા લાગ્યો. ચારે બાજુ રૂધીરની છોળો ઉડવા લાગી. ડાકીનીઓ ને શાકીઓનીના હોકારા, પડકારા ને ડાકલા વાગવા લાગ્યા.

કાચો પોચો હોય, તો હૃદય જ બંધ પડી જાય, એવી ભયાનક પરિસ્થિતિ ઉભી થઈ ગઈ.

પણ શ્રીકાંત કાચા દિલનો માણસ નહોતો. વજ્રહૃદયી અને દૃઢનિશ્ચયી એ માણસની નજર, પ્રાપ્ત થનારી સિદ્ધિ ઉપર હતી, એણે એ બધા તોફાનની કશી પરવા કરી નહિ. જરા પણ ગભરાયા વિના એણે મંત્રોચ્ચાર અને ઘીનો હોમ ચાલુ જ રાખ્યો.

અડધા કલાકમાં તો તોફાને માઝા મૂકી દીધી, એક તરફથી વિકરાળ પાડાઓ ધસી આવતા દેખાયા. બીજી તરફથી સંખ્યાબંધ સર્પના ફુંફાડા સંભળાવવા લાગ્યા. સિંહની ગર્જનાઓ સંભળાવવા લાગી. પ્રકૃતિએ તાંડવ મચાવ્યું હોય, એવા મૃત્યુનાદોની પરંપરા શ્રીકાંતના કર્ણપટલને ભેદવા લાગી, પણ એ ડર્યો નહિ; ડગ્યો નહિ.

'કાર્યં સાધયામિ વા દેહં પાતયામિ' એવો સંકલ્પ કરીને આવેલા એ બહાદુર માણસે, જરા પણ થડકયા વિના, મંત્રોચ્ચારની ક્રિયા, પૂર્ણ સ્વસ્થ અને એકાગ્ર રહીને ચાલુ જ રાખી.

પંદર મિનિટ પસાર થઈ, હાડકાંઓનો ઢગલો અદૃશ્ય થવા લાગ્યો. રૂધીરથી છંટાએલી ભૂમિનો મૂળ રંગ પાછો પ્રગટ થયો, હાકોટા બંધ થયા, ડરામણું વાતાવરણ બદલાયું એને બદલે હવામાંથી અત્તરની ખુશબો આવવા લાગી. દૂર દૂરથી ઘંટ વાગતો હોય તેવો, અવાજ આવવા લાગ્યો. સંગીતના સંખ્યાબંધ વાજિંત્રો ચારે તરફ વાગવા લાગ્યાં.

બરાબર એક કલાકની મુદત પૂરી થતાં જ, ઉકા ભગતે કહ્યું હતું તેમ, પાછળની દિશામાંથી, આકાશમાંથી આવતો હોય તેવો, મધુર પણ પ્રતાપી અવાજ આવ્યો:

'માગ, માગ, માગે તે આપું.'

'મારી સામે હાજર થા,' શ્રીકાંતે હવે સિંહની જેમ ગર્જના કરી.

'હાજર થવાનું શું કામ છે? જોઇએ તે માગી લે.' જવાબ આવ્યો.

'પ્રત્યક્ષ થા. હાજરા હજુર મારી સામે આવીને ઉભો રહે, તું હાજર નહિ થાય, ત્યાં સુધી હું માંગવાનો નથી.' શ્રીકાંતે કહ્યું.

'તમે છળી મરશો, મારૂં રૂપ બિહામણું છે.'

'પરવા નહિ.'

'દાઝી જશો, મારા અંગમાંથી આગ ઝરે છે.'

'ફિકર નહિ.'

'રૂબરૂ જોવાનો આગ્રહ છોડી દો. એમાં તમારૂં અહિત થશે.'

'આવવું હોય તો આવ, ના આવવું હોય તો તારી મરજી.' આટલું બોલીને શ્રીકાંતે મંત્રોચ્ચાર પુનઃ ચાલુ કર્યો.

'બંધ કરો, મંત્રોચ્ચાર બંધ કરો.' ઉપરથી અવાજ આવ્યો.

'તો પછી રૂબરૂ હાજર થા.' શ્રીકાંતે આજ્ઞા કરી.

'મારે આવવું હોય તો પણ મારાથી આવી શકાય તેમ નથી, જવાબ મળ્યો.

'કેમ?'

'તમારી આસપાસ તેજનું જે કુંડાળું દેખાય છે, એને પહેલાં સંકેલી લો.' જવાબ મળ્યો.

શ્રીકાંતે વિસ્મિત બનીને જોયું, તો કોઈ અદ્‌ભૂત પ્રકાશનું કુંડાળું એની આસપાસ ગોળ ચક્કર ફરી રહ્યું હતું. આ પ્રકાશના કુંડાળાની વાત ઉકાભગતે શ્રીકાંતને કહી નહોતી. થોડોક વિચાર કરીને શ્રીકાંતે જવાબ આપ્યોઃ—

'આ પ્રકાશનું કુંડાળું, તે પણ તારી જ માયા છે, સમેટી લે.

'એ મારી માયા નથી.'

'તો પછી એ શું છે?' શ્રીકાંતે પૂછ્યું.

'તમે નવકાર મંત્રના આરાધક છો?'

'હા. પણ તેથી શું?'

'એ મહા-પ્રભાવક મંત્ર છે. એનું આ તેજ છે. એ મારાથી ઝીલાશે નહિ, એને સમેટી લ્યો. તો હાજર થાઉં.' અંતરિક્ષમાંથી જવાબ મળ્યો.

'એ કુંડાળું મેં સર્જ્યું નથી. એને સમેટી લેવાનો ઉપાય શો?'

'જીંદગીભર નવકાર મંત્રને યાદ નહિ કરવાની પ્રતિજ્ઞા લઈ લો. એ મંત્રના આરાધક સામે ઉભા રહેવાની મારામાં શક્તિ નથી. તમે પ્રતિજ્ઞા ઉચ્ચારો, એટલે તુરત જ તેજનું આ કુંડાળું અદૃષ્ય થઇ જશે, એ અદૃષ્ય થશે, પછી હું હાજર થઈ શકીશ, હાજર થઇને તમારી મનોકામનાને હું પૂર્ણ કરીશ. લઈ લ્યો, પ્રતિજ્ઞા લઈ લ્યો. નવકાર મંત્રની આરાધના. રટણ સ્મરણ કે ઉચ્ચારણ હવે પછી જિંદગીમા તમે નહિ કરો, એવી પ્રતિજ્ઞા, ખુદ નવકાર મંત્રના સોગન ખાઈને લઈ લ્યો.'

અંતરિક્ષમાંથી આવતા આ અવાજને શ્રીકાંત સાંભળી રહ્યો. નવકાર મંત્ર ઉચ્ચારણ

નહિ કરવાની પ્રતિજ્ઞા લેવાનું, પેલો 'મેલો દેવ 'એને કહી રહ્યો હતો. એવી પ્રતિજ્ઞા લેવામાં આવે, તો જ તેજનું કુંડાળુ અદૃષ્ય થાય. તો જ પેલો ત્યાં હાજર થઈ શકે.

શ્રીકાંત વિચારે ચડી ગયો, નવકાર મંત્રનો આ પ્રભાવ?' મનોમન તે બોલી રહ્યો એનો વિચાર–પ્રવાહ ચાલુ થઈ ગયો.

પાછો ફરીથી અવાજ આવ્યો.

'તમારે સિદ્ધિ જોઈએ છે, નવકાર મંત્રનું રટણ છોડી દેવાની પ્રતિજ્ઞા નહિ લો, ત્યાં સુધી મારાથી પ્રત્યક્ષ થઈ શકાશે નહિ. પ્રત્યક્ષ થયા સિવાય એ સિદ્ધિ હું તમને આપી નહિ શકું.'

શ્રીકાંતે જવાબ ના આપ્યો.

'જલદી કરો, પ્રતિજ્ઞા લઈ લ્યો' અદ્‌ભૂત સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરવાનો આ અપૂર્વ અવસર જતો ના કરશો.'

શ્રીકાંત ચૂપ જ રહ્યો, એનું દિલ ગદ્‌ગદ થઈ ગયું. 'અહો નવકાર મંત્રનો આવો, અપૂર્વ ચમત્કાર છે? અદ્‌ભૂત સિદ્ધિ આપવાની શક્તિ ધરાવતો, આ દેવ પણ, એના પ્રભાવ સામે, લાચાર બની ગયો છે!' શ્રીકાંતના મનમાં વિચારધારા ચાલી.

'હું કેવો મૂર્ખ? મહામૂર્ખ! નમસ્કાર મહામંત્રનું રટણ હું બચપણથીજ કરતો આવ્યો છું; છતાં, એના મહાપ્રભાવથી હું અજ્ઞાન જ રહ્યો! ને આવી એક તુચ્છ લૌકિક શક્તિ મેળવવા, મેં આવો ભીષણ પુરુષાર્થ આદર્યો! શ્રીકાંતનું અંતર રડી ઉઠયું.

'પ્રતિજ્ઞા લો, પ્રતિજ્ઞા લો, જલ્દી કરો, હાથમાં આવેલા અવસરને જતો ના કરશો, જિંદગીભર પસ્તાશો.' ઉપરથી ફરીવાર અવાજ આવ્યો.

શ્રીકાંતનું મૌન છૂટયું નહિ. 'પ્રતિજ્ઞા લઉં, તો તો જન્મોજનમનો પસ્તાવો જ મારા ભાગ્યમાં આવે.' એ વિચારી રહ્યો.

'વિચાર ના કરો, આવી તક ફરીવાર નહિ સાંપડે.' પુનઃ અવાજ આવ્યો.

પણ શ્રીકાંતનું લક્ષ્ય તો હવે શ્રી નવકાર મંત્રમાં જ સ્થિર થઈ ગયું.

'આવો મહાપ્રભાવક મંત્ર, જેનાથી આ દેવ પણ ડરે. આવા મહામંત્રનો ત્યાગ કરીને મારે શું મેળવવાનું?'

'જન્મજન્માંતરની તપશ્ચર્યા ઉપર પાણી ફેરવવાનું! ભવોભવની પુણ્યાઈનો હાથે કરીને જ અગ્નિસંસ્કાર કરવાનો!' શ્રીકાંતના અંતરના ઉંડાણમાંથી આ જવાબ આવ્યો.

'ના, ના, લાડવો લેવા માટે કલ્લું કાઢી આપવાની આ વાત છે. એ નહિ બને, કદી પણ નહિ બને. આવી, એક કરોડ સિદ્ધિઓ મળતી હોય, તો પણ નવકાર મંત્રનો ત્યાગ કરવાની મૂર્ખતા, મારાથી થાય જ નહિ.' શ્રીકાંતના અંતઃકરણમાં આ નિશ્ચય થઈ ગયો.

'ત્યારે હું જાઉં?' પેલા દેવે પૂછયું. એને હવે કશો જવાબ આપવાની જરૂર શ્રીકાંતને જણાઇ નહિ. એ ચૂપ રહ્યો. નવકાર મંત્રના જાપ એણે ત્યાં જ, સ્મશાનમાં, ચાલુ કરી દીધા.

'સ્વામી, મને આજ્ઞા આપો, જવાની અનુજ્ઞા આપો. આપની આજ્ઞા નહિ મળે, ત્યાં સુધી હવે એ મારાથી ચસકી શકાશે નહિ. કૃપા કરો મારા પર દયા કરો. 'ચાલ્યો જા' એટલા બે શબ્દો બોલો.' પેલો દેવ હવે કાકલુદી કરી રહ્યો હતો.

'ચાલ્યો જા.' શ્રીકાંતે આજ્ઞા કરી.

રાતભર શ્રીકાંત ત્યાં બેસી રહ્યો. નમસ્કાર મહામંત્રના જાપ, ત્યાં બેઠાં બેઠાં. તે કરતો જ રહ્યો. એના આત્માને સમાધિભાવ ત્યાં સાંપડી ગયો.

સૂર્યનારાયણનાં કિરણો શ્રીકાંતના શરીરને સ્પર્શ કર્યાં, ત્યારે એણે પોતાનાં નેત્રો ખોલ્યાં.

ચારે તરફ પુષ્પો વેરાયેલાં પડયાં હતાં. એના ગળાની આસપાસ પુષ્પની માળા વિંટળાયેલી હતી.

પ્રસન્નવદને ત્યાંથી ઉઠીને એણે ગામ તરફ ચાલવા માંડયું, ત્યારે ગગનમાંથી આવતો દિવ્ય નાદ, વાતાવરણને પણ પ્રફુલ્લ બનાવી રહ્યો હતો. (કલ્યાણથી સાભાર)

(અનુસંધાન પાન ૩ નુ ચાલુ)

'વિણઓ મૂલો ધમ્મો' વિનય જ ધર્મનું મૂળ છે. માટે પ્રત્યેક કાળમાં પૂજ્ય વડીલોનો સદાય ઉચિત વિનય કરનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

અશુભચિંતનનો ત્યાગ કરી શુભ ચિંતન તરફ આગળ રહેનાર સાચો જૈન કહેવાય છે.

પ્રમાદ, આળસ્યને પહેલાંથી જ દૂર રાખનારો અને નિષ્પ્રમાદી બની શ્રેયમાર્ગે જનારો સાચો જૈન કહેવાય છે.

ક્રયવિક્રય જરૂર કરે પરંતુ પુત્ર વિક્રય કે કન્યા વિક્રયથી હમેશાં દૂર રહેનારો સાચો જૈન કહેવાય છે.

જિનશાસનના અનુશાસનમાં રહી બાહ્યાભ્યાન્તર રીતે કોઇ પણ આરાધક પોતાનો ઉદ્ધાર સહેલાઇથી કરી શકે છે.

અજબ પ્રેરણા મૂર્તિ

વિદ્યાર્થી પોપટલાલ ધરૂ. અમદાવાદ.

કિશોર આજ મસ્તીમાં મહાલતો પોતાની શાળા તરફ જઇ રહ્યો હતો. બીજા પણ ઘણા વિદ્યાર્થી વિદ્યાર્થીનીઓ તે તરફ ઉત્સાહથી પગલાં માંડતા હતા. કારણ સ્પષ્ટ હતું. આજ પરીક્ષાનું પરિણામ બહાર પડવાનું હતું. કિશોરના ભાગ્યનો સિતારો ચમકવાનો હતો. મેટ્રીક સુધીના અધ્યયન કાળ દરમ્યાન તે દરેક કક્ષામાં પ્રથમ નંબરે જ ઉત્તીર્ણ થયો હતો. આજ મેટ્રિકનું રિજલ્ટ આવવાનું હતું. શિક્ષકોને તેના પ્રત્યે માન હતું, શાળામાં સહાધ્યાયીઓ તેને હેતાળ હૈયે નિહાળતા અને પોતાના સાથીના આવા ઉત્કર્ષથી પ્રસન્નતાનો અનુભવ કરતા. કોઈ પણ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપવો એ કિશોરને મન રમત હતી અને એટલે જ તે શિક્ષકોનો પણ પ્રિયપાત્ર બનેલ હતો.

લીલા તેની કક્ષામાં ભણનાર સહપાઠિની હતી, જ્યાં કિશોર પ્રથમ નંબરે રહેતો ત્યાં લીલા બીજા નંબરે જ રહેતી. શરૂઆતથી જ બન્નેનો સંપર્ક ખૂબ વધતો ગયો. નિખાલસ વૃત્તિ અને નિષ્પાપ વિચારોમાં વ્યસ્ત રહેનાર શૈક્ષણિક દષ્ટિએ પોતાની પ્રગતિ કેવી રીતે થાય તેની ધૂનમાં રહેતો.

લીલા પણ આ અવસરે ત્યાં પહોંચી જ હતી. હવે હમણાં જ પરિણામ બહાર પડવાનું છે. સૌ એકીટશે ટકટકી માંડી રહ્યા. ઘોષણા થઈ અને કિશોર મેટ્રિકમાં સર્વપ્રથમ ઉત્તીર્ણ થયો. જાહેરાત આખા કંપાઉંડમાં થઇ ગઈ. અને પેલી લીલા! બીજે નંબરે. વાહ. શું વિદ્યા વ્યસની બન્યા છે એ!

પરીક્ષા પહેલાં બન્ને સ્પર્ધા કરતાં અને એકબીજા એકબીજાને હંફાવી દેવા અધ્યયનમાં ખૂબ જ રત રહેતાં.

માતા પિતાના જન્મના સંસ્કારો જીવનની ઈમારત સુદૃઢ કરવામાં મહત્વપૂર્ણ સાથ આપે છે. કિશોર નગરના સુશીલ અને વ્યવસાયી શેઠ પ્રબોધચંદ્રનો પુત્ર હતો. માતા પિતાના સત્સંગે તેનો દોર સન્માર્ગ તરફ વળ્યો હતો. એને ઘેર કોઇપણ જાતની ઉણપ તો હતી જ નહિ. જ્યારે લીલા............!

લીલા પણ કિશોરથી કોઈ–પણ વાતમાં પાછળ રહેનાર નહોતી. જો કે લીલાના પિતા ડોક્ટર હતા. ગામમાં તેમની સારી પ્રતિષ્ઠા હતી. દરદીઓના દર્દને કોઇ–પણ ભોગે દૂર કરવા તે પ્રયત્નશીલ રહેતા, તેઓ જાણતા હતા કે, પર ઉપકાર અને સેવા ધર્મ ઘણો જ ગહન છે. કરનાર જ તેનો આસ્વાદ લઈ શકે છે. જેવું દેખે તેવું કરે એ ન્યાયે ઘરના સંગનો રંગ છે, પ્રભાવ તેણીના ઉપર પણ પૂરો પૂરો પડયો હતો.

સંસ્કારી માતા–પિતાના સંસર્ગથી સંતતિમાં કેટલી સુશીલતા આવી શકે છે તેના આદર્શ રૂપે નગરમાં કિશોર અને

લીલાના નામ પ્રમુખ ગણાતા. એકે એક વ્યક્તિના મોઢે તેમની પ્રશંસાની મહક હતી.

હવે જીવન ઇમારતને ઉભી કરવા માટે નિર્ણય કરી લેવાનો હતો. મેટ્રિક પછી કઈ લાઈનમાં જવું એ નક્કી કરી લેવાનું હોય છે. આ બાજુ ઉંમર પણ વધતી જતી હતી.

ધીરે ધીરે યૌવન અવસ્થા પાંગરતી જતી હતી. છતાં એ કિશોર અને લીલાને કોઇ-પણ જાતના વિચારો આવતા નહોતા. તેમને તો ફક્ત એક જ રટ હતી કે 'ખૂબ મહેનત કરવી, ભણવું, ગણવું, આગળ વધવું, અને સારા ગુણો મેળવીને કારકિર્દીને ઉજ્જ્વળ કરવી. આ વિચાર અને ધ્યેય સિવાય બધુંય એમને મન નિરર્થક હતું.

અધ્યયનની લાઈન બદલાઈ. કિશોરે સાયન્સ લાઇન લીધી. એ જ ધગશ, લગન ને ભાવના સાથે; લીલા પણ તે જ લાઈનમાં ગઈ. કોલેજમાં જગ્યા મેળવી. ઉચ્ચ કેળવણી માટે તત્પર બની બન્ને પોતાના લક્ષ્યને સિદ્ધ કરવા ઉમંગભેર અભ્યાસમાં લાગી ગયાં.

પોતાની દક્ષતા અને કુશળતાથી બન્ને પૂરો પરિશ્રમ કરી રહ્યાં હતાં. છતાં હવે હતું કોલેજીયન જીવન. વિચાર, વાણી અને વ્યવહારમાં સ્વતંત્રતા. કોઇના પણ અંકુશ વગરની નિરંકુશતા. આખર શનૈઃ શનૈઃ સંગના રંગથી બન્નેના વિચારોએ પણ રંગ બદલ્યો. જે અજાણુ હતા તે જાણકાર બન્યા, જે અભ્યાસ-પ્રિય હતાં તે સ્વચ્છંદપ્રિય બન્યા. તેમના માટે માતા-પિતા કેવી આશાઓ રાખી રહ્યાં છે તે તેમનાથી અજાણુ નહોતું, તેઓ કોણ છે એ પણ તેઓ જાણતાં હતાં. ઘણા સહવાસ અને મિલનથી બન્નેએ જીવન સંગી બનવાનું મનો-મન નક્કી કરી લીધું.

આ બાજુ પોતાના પુત્રની ઉંમર, લોક પ્રિયતા અને પોતાની ઢળતી જતી અવસ્થા દેખતાં કિશોરના માતા-પિતા પુત્ર-વધુને લાવવાના કોડ સેવી રહ્યા હતા. વાતચીત ચાલી અને યોગ બળવાન. કિશોર અને લીલાના લગ્ન નક્કી કરાયા, લીલાના પિતા ડૉકટર પણ પ્રસન્ન ચિત્ત હતા મકે તેમને પુત્રી યોગ્ય વર, ઘર, મળી ગયાં હતાં. લગ્ન થયાં અને લીલાએ કિશોરના આંગણે પગ મૂકયો નવી આશાઓ સાથે.

તેણીની પ્રબળ ઈચ્છા હતી કે કિશોર વધુને વધુ ભણે, આગળ વધે, નામના મેળવે અને શૈક્ષણિક ક્ષેત્રે પ્રગતિ કરે એ માટે તેણે ઘર આવતાં વેંત તેના કાર્યમાં સફળતા મળે તે મુજબ તત્પર દર્શાવવા માંડી. પરંતુ કિશોર...........!

કિશોર તો ઉલ્ટો જ જતો હતો. હવે તેને કંઇ ગમતું ન હતું. મિત્રોનો સહવાસ અરૂચિકર લાગતો. તેના સામે પ્રતિક્ષણ ફક્ત લીલાની જ છબી હતી. અધ્યયનમાં અસ્થિરતા આવી, છતાં જેમ તેમ કરીને પરીક્ષા આપી. પરિણામના ખુશી કે ખેદ એને ન હતો. જ્યારે પરિણામ બહાર આવ્યું, સાંભળનારા આશ્ચર્યમાં ગરકાવ થઈ ગયા. જે વિદ્યાર્થી આજ-સુધી શાળાની શોભા વધારનાર હતો, જેની અધ્યયન પરાયણતાએ દરેકના મન મન્દિરમાં સ્થાન મેળવી લીધું હતું તે આ વખતે પ્રથમ નંબર છોડીને

પ્રથમ શ્રેણિમાં પણ ન આવી શક્યો. અરે! ત્રીજી શ્રેણી તો શું સપ્લીમેંટરી પણ ન મળી. તો શું નાપાસ હો, અનુત્તીર્ણ!

સમાચાર વાયુવેગે પ્રસરી ગયા. લીલાના કર્ણપટ પર પણ આ શબ્દો અથડાયા. તેણે ભારે આંચકો અનુભવ્યો આ શું થયું? પરીક્ષા પૂર્વે તેણીએ કિશોરની પ્રવૃત્તિને લક્ષ્ય કરીને એક પત્ર લખ્યો હતો તેમાં સ્પષ્ટ જણાવી દીધું હતું કે—

"જીવનમાં વિદ્યા વગર બધું નકામું છે. અને એ માટે જ દરેક પ્રવૃત્તિને સદંતર બંધ કરીને લીન રહેશો. એ નક્કી સમજશો કે પ્રેમ જીવનમાં પુનીત પથ પણ છે અને પાવક જ્વાળા પણ છે. એટલે વિચારશો."

જ્યારે અનુત્તીર્ણના સમાચાર તેને મળ્યા. ત્યારે તેણીએ ધૈર્ય રાખી. કોઈ-પણ પ્રકારે તેને ઠેકાણે લાવવાનું નક્કી કરી લીધું. તેણીએ એક સુંદર સંસાર લીલાનું વર્ણન કરતું ચિત્ર બનાવ્યું. તેમાં સંસારની લીલા આલેખી. પ્રગતિને અવનતિના પગથિયાં તેમાં માંડયાં હતાં. રાગ, દ્વેષ, મોહ, માયાના રંગ-રંગીલા આકર્ષણ હતાં તેમાં સાથે જ તેના પરિણામ સ્વરૂપ અવનતિના ઊંડા ખાડા પણ બતાવ્યા હતા. ભૂલો પડનાર ક્યાં જઈ અટકે છે તેનું સ્પષ્ટ વર્ણન ચિત્રમાં વર્ણવી બતાવ્યું હતું.

મિત્રોની સાથે મહેફિલમાં મોજ માણતો કિશોર હોટેલમાં બેઠો હતો ત્યાં જ પોસ્ટમેન આવ્યો અને તેણે એક પત્ર તેના હાથમાં મૂકયો. પત્ર દેખતાં જ તે ચોંકી ઊઠયો. વિચારો બદલાવા માંડયા. પોતે પતંગીયાની સ્થિતિમાં પડયો. અને તેનું અનિષ્ટ પરિણામ તેને ભોગવવું પડયું, તે પશ્ચાતાપ કરવા માંડયો. અને જીવન-સંગિની લીલાની બુદ્ધિમત્તા પર ગર્વ અનુભવવા માંડયો. તેણે દેખી લીધું કે ધર્મ-પત્ની હો તો આવી હો. કે જે પોતાના પતિના જીવન ક્રમને ઉન્નત કરવા ક્યાંસુધી ખબર રાખે છે. કિશોરને 'નીતિકારોનું કથન યાદ આવ્યું—

कार्येषु दासी करणेषु मंत्री. भोज्येषु माता शयनेषु रंभा।

मनोनुकूला क्षमया धरित्री, गुणैश्च भार्या कुलमुद्धरन्ति ॥

—પોતાના ઘરના કાર્યો કરવામાં જે પોતાને દાસી સમાન સમજે છે, પોતાના પતિ અથવા વડીલોને સારી સલાહ આપવામાં મંત્રી બની જાય છે, ભોજનના સમયે માતાના જેટલા પ્રેમને દાખવનારી, રતિ-ક્રીડામાં જે રંભા-અપ્સરા બની રહે છે, પોતાના વડીલોના મનને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિ કરતી રહે અને ક્ષમાગુણને ધારણ કરનારી સ્ત્રી ઊભય કુળનો ઉદ્ધાર કરવા શક્તિમાન હોઈ શકે છે.

લીલાએ આજ મને બચાવ્યો. પડતાને ઉગારનારી આવી ધર્મ-પત્ની જેને મળે તેનું ગૃહસ્થ જીવન દૈવી સુખને ઝાંખુ કરી દે છે. અજબ પ્રેરણાની મૂર્તિ લીલાએ આજ મારા જીવન મન્દિરને પ્રકાશમય કરી દીધું. ગૃહસ્થના સુખમય જીવનની હોડ સ્વર્ગના સુખ પણ નથી કરી શકતા.

કિશોરનો વ્યવહાર બદલી ગયો, ભણવાની લગન લાગી, ખંતથી ફરી અધ્યયનમાં લાગી ગયો. તેને શરૂની ધગશ ફરી જાગી, પરીક્ષા આપી કિશોર પ્રથમ નંબર પાસ થયો. મિત્ર લોકોએ અભિનંદન આપ્યા. આવી પ્રેરણા મૂર્તિઓ જગતના આંગણાને ઉજ્વળ બનાવે છે. ધન્ય પ્રેરણામૂર્તિ. શુભમ્!

પ્રાચીન તીર્થ શ્રી ભોરોલના જિર્ણોદ્ધારની શિલારોપણ વિધિ પ્રસંગે સંઘવી ગગલદાસ હાલચંદભાઈએ સ્વાગત સમારંભમાં પ્રવચન યરતાં

બતાવેલ ઐતિહાસિક માહિતી

આજે આ નાનું સરખું ભોરોલ ગામની આજુબાજુના પ્રદેશમાં આજથી લગભગ આઠસો વર્ષ પહેલાં પીપ્પલપુર નામે એક આબાદ નગર હતું અને પીપ્પલ-ગચ્છની ગાદી અહીં હતી.

સંવત ૧૨૨૨ ની સાલમાં સિદ્ધરાજ પોરવાડે બંધાવેલ ભગવાન નેમનાથ (શ્રી મહાવીર સ્વામીજીના જીન પ્રાસાદમાં શાન્તિસૂરિએ પોતાના આઠ શિષ્યોને આચાર્યપદવી આપી પોતાના ગચ્છની ગાદી થારાપ્રદ (થરાદ)ને બદલે પીપ્પલપુરમાં રાખ્યાનો ઉલ્લેખ મળે છે.

જુના પુરાવાઓમાં એક ખંડિત પરિકર પરનો સં. ૧૨૬૧ ની સાલનો ભગવાન નેમીનાથની પ્રતિમા ભરાવીને પ્રતિષ્ઠા કરાવ્યાનો લેખ છે.

સંવત ૧૩૫૫ ની સાલનો અંબીકા દેવીની મૂર્તિ પરનો લેખ જે મૂર્તિ કાળકા દેવીની મૂર્તિ તરીકે આજે ઓળખાય છે.

સંવત ૨૦૧૪ ની સાલમાં તા. ૨૩-૧૦-૫૮ ના રોજ દેરાસરના ચોકના ખૂણામાંથી ખોદતાં ૩૨ જીન પ્રતિમાઓ નીકળી આવેલ છે. અને કોઈ કોઈ જિન-પ્રતિમાઓ સંવત ૧૩૫૫ પિપ્પલક ગચ્છ આચાર્ય અને પીપ્પલપુર પાટનના ઉલ્લેખો છે.

સંવત ૧૬૨૯ ની હીંગલાજ દેવીની મૂર્તિ પરનો લેખ મળે છે. શ્રી જૈન પ્રતિમા લેખ સંગ્રહ સંપાદક પૂ. આચાર્યદેવ શ્રી યતીન્દ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબ સદર લેખ સંગ્રહમાં પીપ્પલગચ્છની આબાદી અંગેનો સારો ખ્યાલ આપે છે.

સંવત ૧૨૯૧ થી ૧૫૬૨ સુધીના સમયમાં શ્રી થરાદના જીન-મંદિરોમાં વર્તમાનમાં પુજીત પચાશ પ્રતિમાઓ પ્રતિષ્ઠિત થયાના પીપ્પલ ગચ્છના આચાર્યોના હાથે થયાના લેખો છે.

સૈકાવાર નીચે પ્રમાણે છે.

બારમા સૈકામાં ૧, ચૌદમામાં ૨૫ અને પંદરમામાં ૨૪ પ્રતિમાઓની પ્રતિષ્ઠા પીપ્પલ ગચ્છના આચાર્યોના હાથે થયાના મળે છે.

આ ઉપરાંત સદર લેખ સંગ્રહ પરથી માલમ પડે છે કે તે સમયમાં થરાદમાં ૨૧ ગચ્છોના અનુયાયિઓનાં ઘર હતાં. આથી આજુબાજુના પ્રદેશની આબાદીનો ખ્યાલ આવે છે.

બીજા પણ શિલાલેખો, પ્રતિમાલેખો, ઉપરાંત ગ્રંથ પ્રશસ્તિઓના પણ આધારો મળે છે.

૧૪૯૧ ની સાલમાં સંભવનાથના જીનમંદિરોની અંજન-શલાકા કરાવી તેમાંની એક જામનગરમાં શેઠ રાયશી શાહના જિનાલયમાં અને બીજી મહેસાણાના જિનાલયમાં વિદ્યમાન છે.

આ ઉપરાંત ગ્રંથ પ્રશસ્તિઓ પરના આધારો મળે છે. જેનો અહીં ઉલ્લેખ કરેલ નથી પણ ગ્રંથ પ્રશસ્તિઓ પરથી જણાય છે, કે આ નગરની જાહોજલાલી સત્તરમા સતક સુધી હતી.

આજે પણ દેવતભેડા તળાવ, માદલા તળાવમાંથી આ નગરના અવશેષો મળે છે. માદલા તળાવમાં એક વાવ અને ૧૫૦ કુવાઓ હોવાની વાત પ્રચલિત છે જ્યાં હાલે ૧૫ કુવાઓ છે.

વળી અહીં ગામ બહાર વડના ઝાડને મોટાં કડાંઓ લગાડેલ છે. તે પરથી અનુમાન મળે છે કે અહીં પ્રથમ મોટું બજાર હોવું જોઇએ. અગર ભરાતું હોવું જોઈએ. અને તે કારણે વજન કરવા માટે આ કડાંઓ લગાડવામાં આવેલ હશે.

સં. ૧૯૫૬ ની સાલમાં મોટો દુકાળ પડયો તે વખતે પાંણીયાકેરા ખેતરમાંથી ખેડતાં ભ. નેમનાથ સહીત એક ખેડુતને ચાર પ્રતિમાઓ મળી આવેલ પણ ખંડિત જણાવાથી ધના તળાવમાં તેને ભંડારી દેવામાં આવી.

વાણીઆકેરા ખેતર, દેવતજેડા તળાવ પાસે જ છે. જ્યાં અગાઉ વાણિયાવાસ અગર વાણીઆઓની દુકાનો કે દેરાસરના નિભાવ માટે આવેલ જન ખેતર હશે અને દેવતભેડા તળાવમાં બાવન દેરીવાળા જિનપ્રાસાદના અવશેષો દેખાય છે. જે ગણેશપુરાના રસ્તે ૧॥ માઈલ દૂર છે.

ભોરોલની વાયવ્ય બાજુ ૭૨ દેરીઓવાળો અને ૧૪૪૪ થાંભલાવાળો એક

જિન પ્રાસાદ હતો અને તે નાશ પામ્યો, અહીં જમીનમાંથી નકશીદાર પથ્થરો તેમજ થાંભલા નીકળી આવે છે.

ફરી સં. ૧૯૬૨ ની સાલમાં તે પ્રતિમાઓ પ્રગટ થએલ. તેને અહીં ભોરોલમાં રાખવામાં આવેલ છે.

સંવત ૧૯૯૯ ના ફાગણ સુદી ૩ ના રોજ પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી. વિજયશાન્તિસૂરિ મ. સા. શ્રીના હાથે પ્રતિષ્ઠા કરાવવામાં આવેલ છે તે વખતે શ્રી સંઘે રૂા. ૧૫૦૦૦) ખરચીને મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર કરાવ્યો.

સં. ૨૦૧૪ ની સાલમાં નીકળેલ પ્રતિમાઓને પધરાવી આ જીનમંદિરને વિશાળ ૨૪ દેરીઓવાળું બનાવવાનું નક્કી કરવામાં આવનાર છે.

(શ્રી પ્રાચિન તીર્થ ભોરોલના જીનમંદિરના જીર્ણોદ્ધારના શીલારોપણ વિધિ પ્રસંગેના સમારંભમાં સંઘવી ગગલદાસ હાલચંદભાઇએ સ્વાગત પ્રવચન કરેલ તેમાંથી ઉતારો)

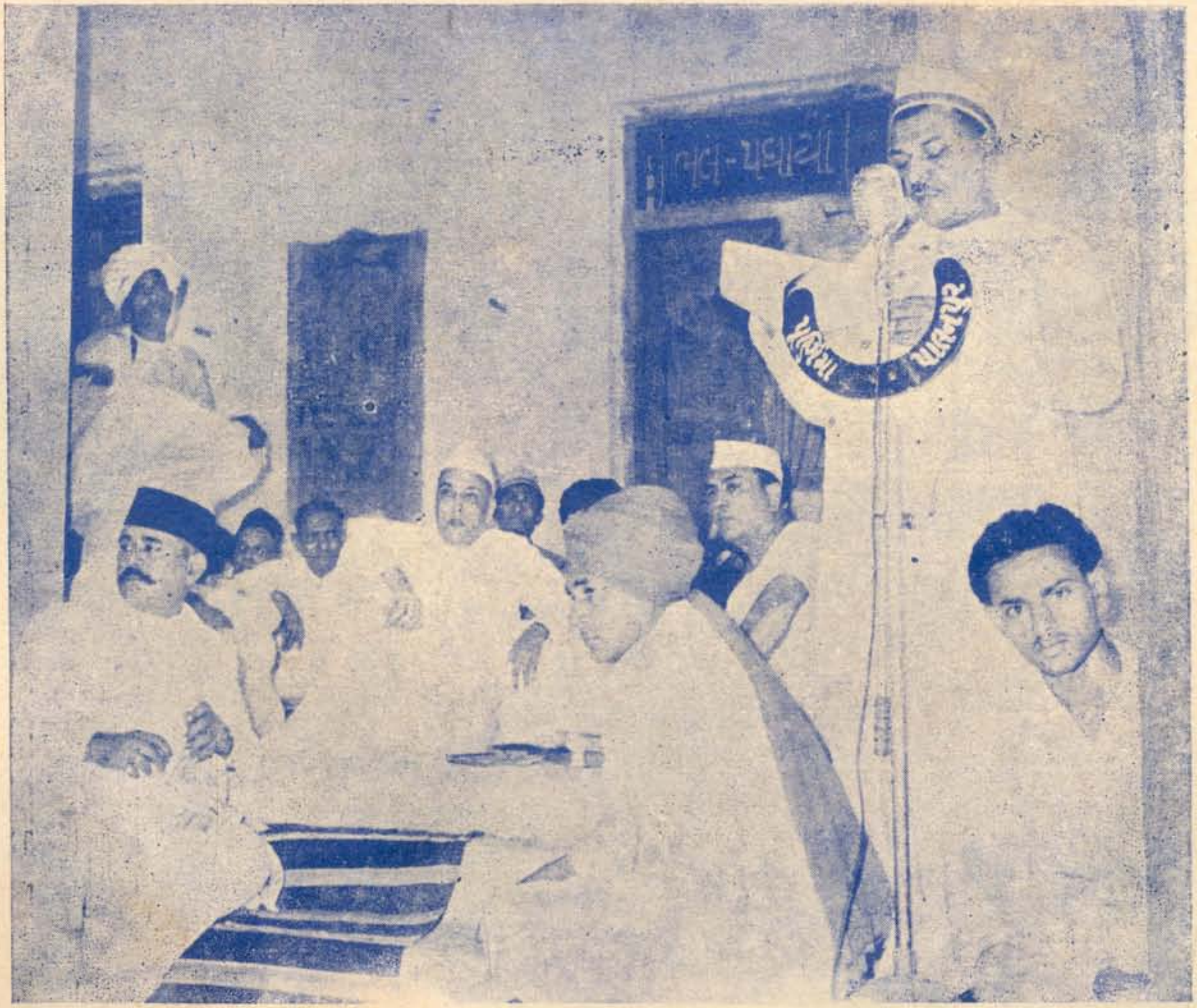

શ્રી પ્રાચીન તીર્થ ભોરોલના જીર્ણોદ્ધારના શિલારોપણુ વિધિ પ્રસંગે પધારેલ શેઠ શ્રી કસ્તુરભાઈનું
સ્વાગત પ્રવચન કરતા શ્રીયુત સંઘવી ગગલભાઈ હાલચંદભાઈ.

શ્રી થરાદ જૈન સંઘ તરફથી સન્માન સમારંભ પ્રસંગે પ્રવચન કરતા શેઠશ્રી કસ્તુરભાઈ

શ્રી ભોરોલ તીર્થમાં જીનમંદિરના શિલારોપણ વિધિ પ્રસંગે

શેઠશ્રી કસ્તુરભાઇનું આગમન,

થરાદ ગામે તેમનું ભાવભીનું સ્વાગત

થરાદ તા. ૧૭ રાત્રે ૮-૩૦ વાગે શેઠ શ્રી કસ્તુરભાઇ થરાદમાં પધાર્યા હતા. શ્રી થરાદ સંઘ તરફથી શહેરના મુખ્ય પ્રવેશદ્વાર આગળ તેમનું ભાવભીનું સ્વાગત કરવામાં આવ્યું હતું.

શેઠ શ્રીયુત ગગલભાઈ સંઘવીના નિવાસસ્થાને જતાં રસ્તામાં ઘણી જગ્યાએ તેઓનું સ્વાગત કરવામાં આવ્યું હતું. રાત્રે ૯-૩૦ વાગે શ્રી સંઘની એક સભા શ્રી મહાવીર જીનાલયના પરાંગણમાં મળી હતી. શ્રી હાલચંદભાઈ વોરા, શ્રી અમૃતલાલ વકીલ, મફતલાલ સંઘવી અને શ્રી મોહનલાલ પરીખે પ્રસંગને અનુરૂપ હાર્દિક સ્વાગત સાથે પ્રવચનો કર્યા હતાં અને શ્રી સંઘ તરફથી શેઠશ્રીને એક સન્માનપત્ર અર્પણ કરવામાં આવેલ હતું. સન્માનપત્રનો જવાબ આપતા શેઠશ્રીએ જણાવ્યું હતું કે છેલ્લા વીશ વર્ષથી ઘણાં ખરાં ગામોમાં જૈન સંઘો તરફથી મને આમંત્રણો મળ્યાં છે અને મારૂં સ્વાગત પણ થએલ છે. આ પ્રસંગ જોતાં મને લાગે છે કે તમારા દિલના ઉમળકાનો ઉભરો ઠાલવીને મારૂં સન્માન કર્યું છે. સમ્રાઓ જુના આ પ્રાચીન થરાદમાં આવવાનો જે મોકો મળ્યો છે તે અમૂલ્ય છે અને થરાદના સંઘે મારો જે ઉમળકા ભેર સત્કાર કર્યો છે તેવો આટલો મોટો સત્કાર બીજે ક્યાંય થયો નથી. મારાથી જૈન સંઘ, સમાજ અને સંસ્કૃતિની જે સેવાઓ થઈ છે તેને તમે પીછાણી શક્યા છો. જૈન સંઘમાં ઠેર ઠેર સુંદર તીર્થો છે. આબુ તથા રાણકપુરનાં જૈન મંદિરો અને તેની કળા અજોડ છે. જૈન સમાજના મંદિરમાં સારા પ્રમાણમાં સુઘડતા છે તેવી બીજે કયાંય નહીં હોય. આબુ ઉપરનાં દેલવાડાનાં મંદિરોની કારીગરીને આજ સુધી આપણે ટકાવી રાખી છે. બીજી કોમોમાં ભાગ્યે જ બનતું હશે. સદ્‌ભાગ્યે આપણા સમાજમાં હસ્તલેખિત પુસ્તકોના મોટા મોટા ભંડારો છે. આવા બીજા કોઇ સમાજમાં નહિં હોય, આ પુસ્તકોનું ગુજરાતી, હિન્દી તથા અંગ્રેજીમાં ભાષાન્તર ચાલી રહેલ છે તેનો દરેકને લાભ મળશે. થરાદના ઘણા ભાઇઓ અમદાવાદ, મુંબઇ જેવા મોટા શહેરોમાં મોટી સંખ્યામાં વસે છે. તેઓએ જાત મહેનત કરતાં જરાએ પીછેહઠ કરી નથી. આપણા સમાજમાં એક વખતે એવો ખ્યાલ હતો કે જૈનો ફક્ત વેપાર જ કરી શકતા. મહેનત કે નોકરી નહીં: પણ આ વાતને તમોએ ખોટી પાડી છે તે વાતથી હું મગરૂર છું તમારું ગામ ગુજરાતના એક ખૂણે આવ્યું છે તેનો અર્થ એવો નથી કે

તમે વિદ્યાભ્યાસમાં પાછળ હશો. થરાદ જેવા ઇતિહાસ જુના શહેરમાં ઘણાં વર્ષ પછી પણ મને મળવાનો મોકો મળ્યો છે અને તમે સૌ ભાઇ બેનોએ ઉમળકાભેર મારો જે સત્કાર કર્યો છે તે બદલ હું તમારો આભાર માનું છું આ પ્રદેશની સેવા કરવા માટે મારાથી બનતું કરવા તત્પર રહીશ.

તા. ૧૯-૫-૬૨ ના રોજ સવારે શ્રી થરાદના પ્રાચીન જિન મંદિરોનાં દર્શને પધાર્યા હતા. ત્યાંથી જનતા હાઈસ્કૂલની મુલાકાત લઈ મહાજનપુરા ગામ થઈ ભોરોલ તીર્થે પધાર્યા હતા. ભોરોલ તીર્થમાં ૯-૧૭ વાગે મંદિરના જીર્ણોદ્ધારની ખાતમુહૂર્તની વિધિ પતાવી શિલારોપણ વિધિ સમારંભમાં સમયોચિત પ્રવચનો થએલ.

શરૂઆતમાં શ્રી ગગલભાઈ સંઘવીએ પોતાના સ્વાગત પ્રવચનનાં શ્રી ભોરોલ તીર્થનો ઐતિહાસિક પરિચય આપ્યો હતો. શ્રી ભોરોલ તીર્થ અગાઉ પીપલપુર નામનું નગર હતું અને તેની આબાદી તથા જાહોજલાલી, શિલાલેખો, પ્રતિમાલેખો તથા ગ્રંથ પ્રશસ્તિઓ ઉપરથી બારમા સતકથી સત્તરમા સૈકા સુધી હોવાના પુરાવાઓ મળે છે.

ઉનાળાના સખ્ત તાપમાં અને આટલી મોટી ઉંમરે શેઠશ્રીએ આપણા આમંત્રણનો સ્વીકાર કરી અત્રે પધાર્યા છે તે બદલ શ્રી ભોરોલ સંઘની વતી હું શેઠશ્રીનો આભાર માનું છું. ત્યારબાદ શાન્તીલાલ વીરવાડીયા વગેરેએ પ્રવચનો કર્યાં હતાં. શ્રી ભોરોલ તીર્થ સંઘ તરફથી શેઠશ્રીને ટ્રસ્ટી શ્રી મહેતાએ સન્માનપત્ર અર્પણ કર્યું હતું.

સન્માન પત્રનો જવાબ આપતાં શેઠશ્રીએ જણાવ્યું હતું કે ભોરોલ તીર્થના દહેરાસરના જીર્ણોદ્ધારનું ખાત મુરત કરવા સારૂ અને જો કોઈ લાવ્યું હોય તો તે શ્રી ગગલભાઈને જ આભારી છે. આટલી ગરમીમાં અને આ ઉંમરે મારે આવવું પડયું છે તેનું કારણ એ કે શ્રી ગગલભાઇને હું ના પાડી શકયો નથી. આ પ્રાચીન તીર્થનો શ્રી ગગલભાઈએ ઈતિહાસ કહી બતાવ્યો તે પ્રાચીન તીર્થનો લાભ થરાદવાવ નહીં પણ સમગ્ર જન સમાજ લેશે.

આ તીર્થનો જીર્ણોદ્ધાર થવાથી દિન પ્રતિદિન તમારી બઢતી થાઓ એવું હું ઈચ્છું છું.

શેઠશ્રી ભોરોલ તીર્થ થઈ ઢીમા થઈનવાવ પધાર્યા હતા અને ત્યાંથી શ્રી સંઘ તરફથી તેઓશ્રીનો સત્કાર કરવામાં આવ્યો હતો. ત્યાંથી બરાબર સાડા અગિયાર વાગે થરાદ પાછા ફર્યા હતા અને શેઠશ્રી ગગલભાઈને ત્યાં જમ્યા હતા. ત્યારબાદ શેઠશ્રી ચંદુભાઈ પરીખને ત્યાં પધર્યા હતા. અને ત્યાંથી તેઓશ્રી એક વાગ્યાના સુમારે મેત્રાણા તરફ જવા રવાના થયા હતા.

युवक क्या है ?

युवक समाज की सम्पत्ति है।
युवक भविष्य का सृष्टा है।
युवक समाज के रंगमंच का सच्चा नायक है।
युवक समाज की प्रगति का सूत्र धार है।
युवक समाज की व्यवस्था का सच्चा जिम्मेदार है।
युवक समाज में नव जागृति का संवाहक है।
युवक पर ही समाजोत्थान निर्भर है।

युवक कौन !

जिसमें कार्य करने की क्षमता है।
जिसके हृदयमें भविष्य के प्रति धड़कनें उत्पन्न होती है।
जिसका हृदय विकास की उत्ताल तरंगों से हिलोर खाताहै
जिस के अंग अग में चेतन्यता है, जागृति है।
जो अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग है जागरूक है।
युवक का वर्गीकरण उम्रपर नहीं उत्साहपर होताहै
जो सदा भावी विकास के लिए उमंग और स्फूर्तिवान् है।

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

निष्ठावान् कार्यकर्त्ताओं का संगठन है।
आदर्शवान् समाजसेवियों का समूह है।
चेतन्य व जागरूक कर्त्तव्य प्रनिया का कार्य स्थल है।

प्रतिष्ठोत्सव तथा परिषद् अधिवेशन पर उपस्थित मार्गदर्शक मुनिराज का चित्र परिचय

विराजमान मध्य—मुनि श्री कल्याणविजयजी महा०, मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा०, मुनि श्री हेमेन्द्रविजयजी महा०।

विराजमान नीचे—मुनि श्री सौभाग्यविजयजी महा०, मुनि श्री शांतिविजयजी महा०।

खड़े हुए—मुनि श्री रसीकविजयजी महा०, मुनि श्री जयप्रभविजयजी महा०, मुनि श्री जयन्तविजयजी महा०, मुनि श्री देवेन्द्रविजयजी महा०, मुनि श्री पुण्यविजयजी महा०, मुनि श्री भुवनविजयजी महा०, मुनि श्री भानुविजयजी महा०।

अनुपस्थित—मुनि श्री लक्ष्मणविजयजी महा०

'उदित हुआ है आज फिर सौरभसना सुप्रभात'

समाज के विकास तथा भविष्य को प्रशस्त बनाने के लिये

हम आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं

समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रसार, समाज सुधार, आर्थिक विकास इन चार दिव्य उद्देश्यों पर पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महा. सा. द्वारा प्रस्थापित

अखिल भारतीय

श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

समाज की जन्म पत्री का अंकन हमें अपने श्रम, स्वेद, सेवा और संगठन से करना है। परिषद् को अपनाइये, इसे सफल बनाइये, सबल कीजिये। स्थान स्थान पर शाखा स्थापित कीजिये, सदस्यता ग्रहण कीजिये।

परिषद् की प्रगति समाज की प्रगति है

— श्रीमद् यतीन्द्रसूरि

सुरुचि पूर्ण लेख, ओज रंजित कविताएं, मौलिक साहित्य, खोजपूर्ण संग्रह, उपयोग रचनाओं के साथ प्रति मास प्रकाशित

शाश्वत धर्म

जैन जगत का सबसे लोकप्रिय मासिक

ग्राहक बनिये, रचनाएं भेजिये, विज्ञापन दीजिये योगदान, सहयोग, सहायता देकर इसकी नींव मजबूत कीजिये। अपनी सेवा के लिये लिखिये —

— शाश्वत धर्म कार्यालय
निम्बाहेड़ा (राज.)

अ० भा० श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिये राजमल लोढ़ा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित
मुद्रक— भारत प्रिंटिंग प्रेस, मन्दसौर (म०प्र०)